पंद्रह रुपए

वर्ष : 2 अंक : 21
बृहस्पतिवार, 14 जुलाई, 2022

RNI-UPHIN/2021/79954

खुले दिमाग़ के खुले विचार

ओपन डोर

राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार–पत्र

आजादी का 75 अमृत महोत्सव

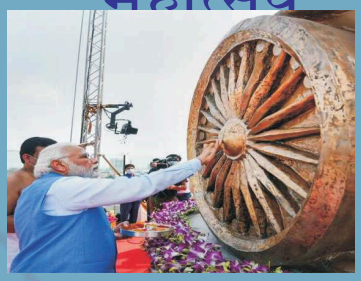

राष्ट्रीय चिह्न पर बवाल क्यों?

सरकार और विपक्ष मिलकर प्रयास करते तो निर्विरोध हो सकता था राष्ट्रपति चुनाव

कोर्ट जा रहे जज के स्टेनो अपहरण के बाद हुई बरामदगी

गुंजेश्वरी प्रसाद की पांच कविताएं

धारावाहिक उपन्यास 'अम्मा'

भोलेनाथ का प्रिय महीना है : सावन

जिंदगी के अनुभवों की परतें– 'स्टेपल्ड पर्चियाँ'

योग्य शिष्य की खोज करते हैं गुरु

भुई आँवला के फायदे

दूसरा लंका कांड

इस बार भी भारत ही करेगा मदद

प्रकाशनाधीन

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क
9897742814

दर्दीला गीतकार
रामावतार त्यागी

अमन कुमार 'त्यागी'

हमारी संस्कृति और हमारा पर्यावरण
(शोध आलेख)

अमन कुमार 'त्यागी'
डॉ. अमित कुमार

वृद्धावस्था
(सामाजिक अध्ययन)

रश्मि अग्रवाल

स्थापना 14 फरवरी, 2021 Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703
रजिस्टर्ड 08 जुलाई, 2021

YouTube OPEN DOOR NEWS ओपन डोर Blog-opendoorweekly.blogspot.com

आपकी किताब आपके द्वार...

प्रकाशन
ओपन डोर
नजीबाबाद

समाचारपत्र भी
पुस्तकें भी

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814

पंद्रह रुपए

RNI-UPHIN/2021/79954

MSME-UDYAM-UP-17-0002703

खुले दिमाग़ के खुले विचार

ओपन डोर

राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

वर्ष : २ अंक : २१ बृहस्पतिवार, १४ जुलाई,२०२२

संपादक
अमन कुमार 'त्यागी'
9897742814
amankumarnbd@gmail.com

प्रबंध संपादक
सौरभ भारद्वाज

प्रतिनिधि
डॉ. सुशील कुमार त्यागी 'अमित' (हरिद्वार)
उपेन्द्र सिंह (दिल्ली)
अर्चना राज चौबे (नागपुर)
निधि मिथिल (सतारा)
अतुल शर्मा (मेरठ)

कार्यालय प्रमुख
तन्मय त्यागी

सदस्यता प्राप्त करें

एक साल १००० रुपए, दो साल १६०० रुपए
पांच साल ४८०० रुपए
अंक प्रकाशित न होने की दशा में पीडीएफ मिलेगी

भुगतान करें
Ac- Name - OPEN DOOR, Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD,AC- 368602000000245, IFSC-IOBA0003686 PAN-AABAO7251R

संपादकीय कार्यालय- साई एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद- २४६७६३ बिजनौर (उप्र)

वैधानिक- समाचार-पत्र में प्रकाशित किसी भी सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी लेख/समाचार/कविता/कहानी/विज्ञापन आदि के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र नजीबाबाद होगा।

सभी पद अवैतनिक हैं

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अमन कुमार द्वारा आशीष प्रिंटर्स, मोहल्ला मकबरा, नजीबाबाद, बिजनौर से मुद्रित तथा ए-7, आदर्श नगर (तातारपुर लालू), नजीबाबाद-246763 जिला बिजनौर (उ.प्र.) से प्रकाशित।
संपादक-अमन कुमार
मोबाईल नं. 9897742814
Email-opendoornbd@gmail.com
RNI-UPHIN/2021/79954

सम्पादकीय

हमें कमजोर नहीं होना है

देश के हालात उलझाए जा रहे हैं। कौन उलझा रहा है? यह अपने आप में बड़ा सवाल है। धार्मिकता को लेकर जो हालात इस देश में इस बार बने हैं वह पहले भी बनते रहे हैं मगर इस बार कुछ तो अलग है जिस पर चर्चा करने से भी डर लगता है। इसके अलावा और भी समस्याएं हैं जिन पर चर्चा होनी चाहिए। आम आदमी की समस्याओं पर बहस करने के बजाए विपक्ष सरकार को उन मुद्दों पर घेरने का प्रयास कर रहा है जिससे सरकार और मजबूत होती चली जा रही है। नेताओं को आखिर क्यों समझ में नहीं आ रहा है कि जब बात देशहित की हो तो व्यक्तिगत आरोप लगाने के लाभ नहीं मिलते हैं। विपक्ष ने आज अगर मजबूती से काम किया होता तो उसे पता चलता कि आम आदमी को परेशानी क्या है? मगर ऐसा नहीं कर सकती वह पार्टियां जिन्होंने एक लंबे समय तक सत्ता सुख भोगा है। इन नेताओं को अपने कार्यकाल का जवाब भी तो देना ही पड़ेगा। यही जवाब देने के स्थान पर सत्ता पाने के लिए शार्टकट अपनाया जा रहा है। इन तरीकों से भारत और भारतीय समाज दोनों का ही नुकसान है। इसलिए ऐसे प्रयोग तो बिल्कुल बंद होने चाहिए। विपक्षी पार्टियों को मेरी सलाह है कि वो आम आदमी की आवाज बनें और सरकार की वर्तमान नीतियों की आलोचना करें। अगर कोई नीति खराब है तो उसे खराब बताएं और अच्छी बनाने के लिए सुझाव दें। जनता के बीच जाएं और उसकी वास्तविक समस्याओं को जानने का प्रयास करें। अपने व्यवहार में तुष्टिकरण नहीं बल्कि निष्पक्षता अपनाएं। सत्ता पाने का लालच नहीं बल्कि सेवा के अवसर की तरह दिखाएं। साम, दाम दंड और भेद का सहारा छोड़कर सीधे तरह से अपना एजेंडा जनता के बीच रखें। मेरा मतलब है कि सत्ता के लिए 'येनकेनप्रकारेण' का सहारा कतई छोड़ दें। ऐसी आइड्योलॉजी बनाएं और बताएं कि मतदाता आपसे प्रभावित हो सके। झूठे सपने दिखाने या मुफ्तखोरी की आदत डालने से भी बाज आना चाहिए। यह देश है जो देश ही की तरह चलना चाहिए। आज ये हैं, कल तुम थे। हो सकता है फिर कल तुम आ जाओ। तब क्या देश ऐसे ही चलाओगे। बहुत समय बीत चुका है, देश बहुत आगे निकल चुका है। आज देश जहां खड़ा है उससे आगे की नितियां राजनीतिक दलों के पास होनी चाहिए। श्रीलंका और पाकिस्तान से सबक लेना चाहिए। आज इन दोनों देशों के हालात बहुत खराब हैं। भारत को ऐसा तो हमें कतई नहीं होने देना है। देश है, देश का संविधान है और देश के पास अपने तमाम नेता हैं। और भी बहुत कुछ है देश के पास जिसे और आगे ले जाने की जरूरत है।

इसलिए एक अपील देशवासियों से भी है कि वो घृणा को बढ़ावा देने वालों को पहचाने और उन्हें समझाएं कि इस देश का कोई भी नुकसान उनका अपना नुकसान भी है। हमें देश को किसी भी नुकसान से बचाना होगा। देश कमजोर होगा तो निश्चित ही देश का प्रत्येक व्यक्ति भी कमजोर होगा और हमें कमजोर नहीं होना है।

अंदर के पन्नों पर

8
स्टेनो अपहरण के बाद हुई बरामदगी

10
राष्ट्रपति चुनाव

राष्ट्रीय चिह्न पर बवाल
11

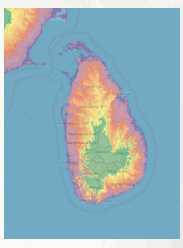

दूसरा लंका कांड
भारत ही करेगा मदद
15

घटते संसाधन बनाम बढ़ती भुखमरी

प्रो. ऋषभ देव शर्मा

खाद्य सुरक्षा पर संयुक्त राष्ट्र की ताजा रिपोर्ट से विश्व में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति की बेहद चिंताजनक तस्वीर उभरती है। हम ऐसी दुनिया में जी रहे हैं जहाँ हर मिनट कहीं न कहीं एक बच्चा भुखमरी का शिकार हो रहा है! दावे तो बड़े बड़े किए जाते हैं लेकिन क्रूर सच्चाई यह है कि दुनिया भुखमरी, खाद्य असुरक्षा और कुपोषण को समाप्त करने के अपने प्रयासों में पीछे जा रही है। गौरतलब है कि वैश्विक खाद्य संकट से सबसे अधिक प्रभावित १५ देशों में से १२ देश अफ्रीका में (बुर्किना फासो से सूडान तक) हैं, एक कैरिबियन में (हैती) है, और २ एशिया में (अफगानिस्तान और यमन) हैं। अंतहीन युद्धों ने इन देशों की ऋण और बेरोजगारी, मुद्रास्फीति और गरीबी के व्यापक संकटों से निपटने की क्षमता लगभग समाप्त कर दी है।

सयाने बता रहे हैं कि वर्ष २०२१ में विश्व में भुखमरी की स्थिति पहले की तुलना में और विकराल हुई है। इस वर्ष लगभग २.३ अरब लोगों को भोजन सामग्री जुटाने में मुश्किलों का सामना करना पड़ा। यह आँकड़ा उस यूक्रेन युद्ध से पहले का है, जिसने अनाज, खाद और ऊर्जा की लागत में लगातार वृद्धि की है। आगे, यह सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि यूक्रेन युद्ध ने इस दृश्य को और कितना कारुणिक बना दिया होगा! भुखमरी घटने के बजाय लगातार बढ़ रही है, तो इसका मतलब है कि दुनिया का सारा तथाकथित विकास केवल कुछ साधन-संपन्नों के पास जमा है। वरना यह कैसे होता कि दुनिया भर में स्वस्थ खुराक का खर्च उठाने में असमर्थ लोगों की संख्या ११.२ करोड़ बढ़कर लगभग ३.१ अरब हो जाती? यह बढ़ोतरी आईना है उपभोक्ता खाद्य कीमतों में उस बढ़ोतरी के प्रभावों का, जिसके लिए विश्वमारी कोरोना को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। रही सही कसर २४ फरवरी को शुरू हुए रूस-यूक्रेन युद्ध ने पूरी कर दी। क्योंकि इससे सप्लाई चेन बुरी तरह टूट-फूट गई। फलतः अनाज, खाद और ऊर्जा की कीमतें बेलगाम होनी ही थीं। हुईं। आपस में भिड़े पड़े और तरह तरह के प्रतिबंध लगाने वाले बड़े देशों के लिए तो अभाव और भूख पैदा करना भी एक हथियार है- विरोधी को आत्मसमर्पण के लिए मजबूर करने का। लेकिन इसका असर सारी मनुष्य जाति को झेलना पड़ रहा है। अब देखिए न कि फरवरी तक यूक्रेन और रूस मिलकर दुनिया के गेहूँ और जौ का लगभग एक तिहाई और सूरजमुखी के तेल का आधा उत्पादन करते थे। इसी तरह, रूस और उसका सहयोगी बेलारूस दुनिया में पोटाश के नंबर २ और ३ उत्पादक हैं। पोटाश उर्वरक का एक प्रमुख घटक होता है। युद्ध की सुरसा ने इस अनाज, तेल और खाद को निगल लिया। पर युद्ध के उन्माद में पगलाई हुई ताकतों को शायद इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह मनुष्यता के खिलाफ अपराध ही तो है! पहले कोरोना और अब युद्ध ने ऐसे हालात पैदा कर दिए हैं कि २०३० तक दुनिया से अत्यधिक गरीबी और भुखमरी को समाप्त करने का संयुक्त राष्ट्र का लक्ष्य पूरी तरह धराशायी होता प्रतीत हो रहा है। यह सच तमाम आधुनिक और उत्तर आधुनिक सभ्यताओं के माथे पर कलंक की तरह अंकित होने वाला है कि दुनिया की कम से कम ८ प्रतिशत आबादी, यानी लगभग ६७ करोड़ लोग इस दशक के अंत में खाद्य सामग्री जुटाने में मुश्किल का सामना कर रहे होंगे। इसका मतलब है कि २०१५ के बाद इस संख्या को भोजन मुहैया कराने की मुहिम का परिणाम शून्य रहा है!

अंततः यह सवाल कि यूनिसेफ की कार्यकारी निदेशक कैथरीन रसेल की इस पीड़ा को क्या विकसित देश, युद्धरत ताकतें और पर्यावरण के दुश्मन कभी समझ पाएँगे कि- 'हम बच्चों की बर्बादी के चरम स्तर की स्थितियों को ऐसे देख रहे हैं, जैसे जलावन के डिब्बे में आग लगने की शुरूआत हो रही हो।'

महत्वपूर्ण है शोधादर्श का यह विशेषांक

पीड़ा सहते-सहते जो पीड़ा का गायक बन गया। ग़रीबी में दिन गुज़ारे मगर कभी हाथ न फैलाया। जिसने फिल्म जगत को एक अमर गीत देने के बाद फिल्मी दुनिया को अलविदा कह दिया। जिसने राजीव गांधी और संजय गांधी को हिंदी बोलना सिखाया। जिसने अपराध जगत की पत्रकारिता की और कितने ही मामले उजागर किए मगर न कभी बिका और न कभी हटा। हार मानना तो इस महान व्यक्ति ने सीखा ही नहीं था। वह यारों का यार था और कष्टों के बावजूद मस्त था। वो किसी के लिए कुछ भी रहा हो मगर एक बेमिसाल था।

अगर आप भी इस महान व्यक्ति के बारे में जानना चाहते हैं तो पढ़ें शोधादर्श का यह विशेषांक

मंत्री ने दिया पर्यटन को बढ़ावा दिलाने का भरोसा

बिजनौर, जेएनएन। केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी एवं पर्यटन राज्यमंत्री श्रीपद येसो नाइक ने बुधवार को विकास भवन में केंद्रीय योजनाओं की समीक्षा की। बैठक में पर्यटन को बढ़ावा दिलाने का भरोसा देते हुए कहा कि बिजनौर जनपद का पौराणिक इतिहास है। इसका उदाहरण राजा भरत की क्रीड़ास्थली कण्व ऋषि का आश्रम और महात्मा विदुर की तपोभूमि विदुरकुटी है। इस मौके पर उन्होंने प्रगतिशील किसान और शिक्षकों को सम्मानित किया। बैठक में सीडीओ पूर्ण वोहरा ने मंत्री को केंद्र सरकार की जन आरोग्य योजना, मातृ वंदना योजना, किसान सम्मान निधि, गरीब कल्याण अन्न योजना, उज्जवला योजना, मृदा स्वास्थ्य कार्ड समेत विभिन्न योजना में अब तक हुई प्रगति की बिंदुवार जानकारी दी। वहीं, डीएम उमेश मिश्रा ने पर्यटन से संबंधी प्रोजेक्टर के जरिए प्रस्तुति देते हुए विदुरकुटी, गंगा बैराज, मालन नदी का जीर्णोद्धार, कण्व ऋषि आश्रम, पीली बांध प्रोजेक्ट, वट वृक्ष चांदपुर, दरगाह-ए-आलिया नज्फे हिंद जोगीरम्पुरी, नजीबुद्दौला का किला, स्याऊ-चांदपुर, ताजपुर, साहनपुर हेरिटेज होटल, अमानबढ़ टाइगर रिजर्व की विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि जिले में पर्यटन की बहुत संभावना है। इस पर मंत्री ने पर्यटन को बढ़ावा दिलाने का भरोसा दिलाया। मंत्री ने अच्छा कार्य करने पर मुख्य अध्यापक उच्च प्राथमिक विद्यालय अकबरपुर आंवला सुधीर कुमार, प्राथमिक विद्यालय बख्शीवाला याबनम परवीन, प्राथमिक विद्यालय खानपुर मानक संजीव त्रिवेदी, कंपोजिट विद्यालय हमीदपूर माखन प्रशांत दूबे व मुख्य अध्यापक प्राथमिक विद्यालय रसीदपुर गढ़ी इशरत जहां, दुग्ध उत्पादन में उल्लेखनीय काम करने पर बास्टा के किसान राजवीर सिंह, मत्स्य पालन में उल्लेखनीय कार्य करने पर ग्राम पाड़ली के किसान हेमंत कुमार को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। वहीं, राधे कृष्ण संकुल की लेखाकार रीता शर्मा को २१ लाख के ऋण का सांकेतक चेक सौंपा। बैठक में विधायक धामपुर अशोक राणा, जिला पंचायत अध्यक्ष साकेंद्र प्रताप सिंह, एसपी दिनेश कुमार सिंह समेत सभी विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

एसडीएम ने अवैध कालोनी की चहारदीवारी ध्वस्त कराई

बिजनौर, नगर में स्थित चुंगी-५ के पास अवैध रूप से काटी जा रही कालोनी की चहारदीवारी को एसडीएम ने जेसीबी से ध्वस्त करा दिया। उन्होंने बताया कि यह कॉलोनी बिना नक्शा पास कराए तथा बिना भूमि की किस्म बदले काटी जा रही है। बुधवार को एसडीएम धामपुर मनोज कुमार, पालिका ईओ धर्मराज राम और राजस्व टीम के साथ चुंगी-५ के निकट पहुंचे। यहां अवैध रूप से काटी जा रही कालोनी में हुए निर्माण को ध्वस्त कराया। इस दौरान कालोनी की चहारदीवारी, वहां लगे बिजली के खंभे आदि को ध्वस्त करा दिया। एसडीएम ने बताया कि यह कालोनी करीब ४० बीघा भूमि पर बिना आवासीय घोषित कराए ही काटी जा रही थी। साथ ही नक्शा भी पास नहीं कराया गया था। उन्होंने प्लाटिंग करने वाले लोगों को नक्शा पास कराकर नियमानुसार कार्य करने की चेतावनी दी। इस दौरान ईओ धर्मराज राम, लिपिक मोहम्मद ताहिर, लेखपाल राकेश चौहान आदि शामिल रहे।

अतिक्रमण हटाया, ४० हजार जुर्माना लगाया

बिजनौर। प्रशासनिक टीम ने अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया। इस दौरान नगीना चौराहा से पुराना धामपुर चुंगी तक सड़क पर रखे खोखों और अतिक्रमण को हटाया गया। नायब तहसीलदार व पालिका ईओ के नेतृत्व में यह अभियान चलाया गया। २० से अधिक दुकानदारों पर ४० हजार रुपये का जुर्माना लगाया गया। बुधवार शाम राजस्व व पालिका की टीम ने नायब तहसीलदार परमानंद श्रीवास्तव और ईओ सुभाष कुमार के नेतृत्व में अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया। इस दौरान दुकानों के आगे बनाए गए चबूतरे, पैड़ी, अवैध रूप से रखे गए खोखे आदि को टीम ने जेसीबी से हटवा दिया। नायब तहसीलदार परमानंद श्रीवास्तव और ईओ सुभाष कुमार ने बताया कि कई स्थानों पर बैंकों के आगे सड़क पर जनरेटर व अन्य अतिक्रमण कर रखा था। सभी की वीडियोग्राफी कराकर नोटिस जारी किए गए हैं।

सांसद ने की ग्रामीणों को दिया जांच कराने का आश्वासन

बिजनौर, जेएनएन। स्कूल प्रबंधक की शिकायत पर रास्ता निकलवाने गई टीम से नाराज ग्रामीणों से गांव पहुंचकर बसपा सांसद ने मुलाकात की। उन्होंने ग्रामीणों को इसकी जांच कराकर कार्रवाई कराने का आश्वासन दिया। बुधवार को मैरी एंड जीजस स्कूल के प्रबंधक सीसी सिंह की शिकायत पर क्षेत्र के गांव श्यामाबाद में राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम ने गांव में बंद रास्ता खुलवाया था। वहीं ग्रामीणों ने इसका विरोध किया था। इसके बाद से ग्रामीणों में रोष व्याप्त था। गुरुवार को इस मामले में गांव में सांसद गिरीशचंद्र ने ग्रामीणों से बातचीत की। ग्रामीणों ने सांसद को बताया कि पुलिस और राजस्व विभाग की टीम ने काफी समय से बने पिंडदान स्थल को तोड़ने का प्रयास किया तथा ग्रामीणों के साथ अभद्र व्यवहार किया। सांसद ने टीम द्वारा की गई कार्रवाई से असहमति जताई। उन्होंने ग्रामीणों को जल्द ही इसकी जांच कराने का आश्वासन दिया।

हनीट्रैप का शिकार हुआ अमरोहा का युवक, महिला ने मिलने बुलाया और साथियों के साथ अपहरण कर लूटा

अमरोहा। कस्बा सैदनगली निवासी मुजम्मिल हुसैन का आरोप है कि एक महिला सप्ताह भर से उनके मोबाइल नंबर पर अपने मोबाइल नंबर ७५००६४०३०६ से बात कर मित्रता कर ली। उसने मिलने के लिए दबाव बनाया। गुरुवार को दोपहर एक बजे आदमपुर चौराहे के नजदीक मिलने को बुला लिया। आरोप है कि निर्धारित स्थान से ५०० मीटर दूर कार खड़ी थी। महिला कार में पहले से मौजूद साथियों की मदद से जबरन अपहरण कर आदमपुर थाना क्षेत्र के गांव दढ़ियाल के जंगल में खेत में बने कमरे में बंधक बनाकर मोबाइल तथा छह हजार की नकदी लूट ली। कहा कि घर से पांच लाख रुपये मंगा लो वरना महिला संबंधी अपराध में फंसा देंगे। आरोपितों के एक सहयोगी सैदनगली निवासी महेंद्र सिंह सैनी ने पीड़ित के घर तथा उसके दोस्तों को पांच लाख लेकर दढ़ियाल के जंगल में चलने को कहा। मामला संज्ञान में आने पर कुछ लोग मौके पर पहुंच गए। लोगों को पहुंचते देखकर आरोपित कार लेकर वहां से फरार हो गए। लोगों ने एक आरोपित शाकिर को मौके से पकड़ लिया तथा पीड़ित युवक को बंधन मुक्त कराकर दोनों को थाने ले गए। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर शाकिर निवासी खैरपुर थाना असमोली जनपद सम्भल, महेंद्र सिंह सैनी निवासी सैदनगली एवं अज्ञात कालर महिला तथा चार अज्ञात के खिलाफ संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया। पुलिस ने आरोपित महिला के साथ ही शाकिर व महेंद्र को गिरफ्तार कर लिया है। प्रभारी निरीक्षक अरिहंत कुमार सिद्धार्थ ने बताया कि मामले में अन्य आरोपितों की तलाश की जा रही है।

प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने के लिए छात्र कर रहे हैं इस कला का उपयोग

राष्ट्रीय नागरिक समाज संगठनों के साथ सरकार ने भारत के ७५ समुद्र तटों पर अपनी तरह के पहले सफाई अभियान में समुद्र तटों से १,५०० टन कचरा हटाने का लक्ष्य रखा है। यह न केवल स्थानीय लोगों और पर्यटकों के लिए बल्कि जलीय जीवन और तटों पर कूड़े से संकटग्रस्त समुद्री जानवरों के लिए भी एक बड़ी राहत होगी। सबसे अधिक भागीदारी और जागरूकता फैलाने के साथ सफाई अभियान सबसे लंबे समय तक चलने वाला अभियान भी होगा। अभियान का उद्देश्य सभी आयु समूहों के बीच व्यवहार परिवर्तन और जागरूकता के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण प्राप्त करना है और दैनिक जीवन शैली से प्लास्टिक के स्थायी उन्मूलन और जागरूक उन्मूलन के बारे में जागरूकता प्राप्त करना है।

प्लास्टिक प्रदूषण पिछले ५ वर्षों में सबसे जरूरी पर्यावरणीय चुनौतियों में से एक के रूप में उभरा है क्योंकि प्लास्टिक अपशिष्ट उत्पादन दोगुने से अधिक हो गया है। औसत भारतीय नागरिक हर साल लगभग २० किलो प्लास्टिक कचरा उत्पन्न करता है और इस कचरे का एक महत्वपूर्ण प्रतिशत लैंडफिल या महासागरों में समाप्त होने के लिए कुप्रबंधित होता है। पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण संदेश देने और लक्षित दर्शकों को शामिल करने के लिए 'स्वच्छ सागर, सुरक्षित सागर' अभियान के तहत क्विज और प्रतियोगिताओं से लेकर रैलियों और स्किट तक कई गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है।

प्लास्टिक रीसाइक्लिंग में कला का उपयोग करने के लिए स्कूली छात्रों को शामिल करने के प्रयास में, प्लास्टिक कचरे से उपयोग की चीजों को बनाने के लिए एक राष्ट्रीय स्तर की कला प्रतियोगिता श्प्लास्टिक २ कीमतीश आयोजित की जा रही है। कला प्रतियोगिता ११ जुलाई से शुरू होकर माह के अंत तक यानी ३१ जुलाई २०२२ तक चलेगी। प्रतियोगिता न केवल जिज्ञासा जगाएगी, बल्कि युवा दिमागों को अपने परिवेश में नवाचार और प्लास्टिक प्रदूषण के प्रबंधन के माध्यम से पर्यावरण के अनुकूल समाधान खोजने में योगदान करने में मदद करेगी। सभी स्कूली छात्र प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं और EcomitramApp (https://ecomitram-app/nccc) के माध्यम से पंजीकरण कर सकते हैं। प्रतिभागियों को कई सरकारी मंत्रालयों, विभागों और राष्ट्रीय नागरिक समाज संगठनों द्वारा समर्थित एक आधिकारिक प्रमाण पत्र मिलेगा। शीर्ष ५ प्रविष्टियों को भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से मान्यता प्राप्त होगी।

(इंडिया साइंस वायर)

साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें

सर्च करें : ओपन डोर न्यूज

Subscribe

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

ओपन डोर न्यूज यूट्यूब चैनल हेतु आवश्यकता है प्रतिनिधियों की

साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें

सर्च करें : ओपन डोर न्यूज

Subscribe

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

ओपन डोर न्यूज यूट्यूब चैनल हेतु आवश्यकता है प्रतिनिधि की

डॉक्टर्स के लिए पेशेंट की सुरक्षा सर्वोपरिः डॉ. भौमिक

मुरादाबाद। जाने-माने डॉक्टर सुभ्रज्योति भौमिक ने बताया, रोगी को दवाई देते समय हम कभी-कभार गलती कर देते हैं, जिसका पेशेंट पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। मेडिकल स्टाफ से दवाइयों को लिखते समय, फार्मासिस्ट से दवाई के गलत नाम समझने, नर्सो की ओर से जाने-अनजाने में गलत दवाइयां रोगी को दे देने से ये गलतियां हो सकती हैं। पीयरलेस हॉस्पिटल एंड बीके रॉय रिसर्च सेंटर, कोलकता के क्लीनिकल डायरेक्टर डॉ. सुभ्रज्योति भौमिक तीर्थंकर महावीर मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च सेंटर और नेशनल एसोसिएशन ऑफ फॉर्माक्लोजी एंड थेरप्यूटिक की ओर से मेडिकेशन एरर्स एंड पेशेंट सेफ्टी पर आयोजित ऑनलाइन गेस्ट लेक्चर में बतौर मुख्य वक्ता बोल रहे थे। इससे पूर्व तीर्थंकर महावीर मेडिकल कॉलेज एंड रिसर्च सेंटर में फार्माक्लोजी के हेड प्रो. प्रीथपाल सिंह मटरेजा ने मुख्य अतिथि का परिचय कराया। लगभग ४५ मिनट चले इस गेस्ट गेक्चर में निदेशक प्रशासन श्री अभिषेक कपूर, मेडिकल कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. श्यामोली दत्ता, मेडिकल कॉलेज के वाइस प्रिंसिपल प्रो. एसके जैन, मेडिकल सुप्रीडेंटेंट डॉ. अजय पंत के अलावा एमबीबीएस और एमडी के १६० से अधिक स्टुडेंट्स ने प्रतिभाग किया।

डॉ. भौमिक ने कहा, वैसे तो ये गलतियां छोटी हैं, लेकिन इनके परिणाम घातक हो सकते हैं। अतः हमें इन एरर्स को रोकना होगा। डॉक्टर्स को दवाइयों का नाम हमेशा कैपिटल लैटर्स और साफ हैडराइटिंग में लिखना चाहिए। फार्मासिस्ट को डॉक्टर्स के पर्चे को पूरी तरह से चैक करके ही दवाई को देना चाहिए। इसके अलावा नर्स को भी डॉक्टर के पर्चे में क्रास चैक करके ही रोगी को दवा की खुराक देनी चाहिए। श्री भौमिक ने इन मेडिकेशन के एरर्स को रोकने के लिए प्रत्येक हॉस्पिटल में अलग से एक विभाग बनाने की वकालत की।

प्रदेश में १६ जुलाई से शुरू होगा दस्तक अभियान

लखनऊ। प्रदेश भर में एक बार फिर से विशेष संचारी रोग अभियान की शुरूआत एक जुलाई से की जा चुकी है। विभागों की ओर से तैयार किए गए माइक्रो प्लान के अनुसार जमीनी स्तर पर तेजी से काम किया जा रहा है। दस्तक अभियान १६ से ३१ जुलाई तक चलेगा। हाई रिस्क क्षेत्रों व दस्तक अभियान के दौरान घर-घर टीमों के द्वारा किए गए सर्वेक्षण के आधार पर चिन्हित क्षेत्रों में फॉगिंग की जाएगी। अभियान के माध्यम से जागरूकता, इलाज और सुविधाओं के उच्चीकरण के साथ साथ स्टाफ की तैनाती को एक अभियान चलाकर गति दी जा रही है। विशेष मेडिकल टीम में आशा वर्कर के साथ-साथ स्वास्थ्यकर्मी शामिल रहेंगे। रोगियों को चिन्हित कर उन्हें दवा दी जाएगी, जरूरी होने पर अस्पताल में भर्ती कराया जाएगा। अभियान में कुपोषित बच्चों की जानकारी जुटाने का निर्देश भी दिया है। दस्तक अभियान के तहत टीबी के लक्षण वाले मरीजों को खोजकर उनकी जांच कराई जाएगी। सीएम ने बैठक में अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि प्रदेश के सभी जिलों में मरीजों को किसी प्रकार की कोई समस्या न आए। इस बात को चिकित्सा विभाग सुनिश्चित करें।

मलेरिया, डेंगू, वायरल बुखार जैसी बीमारियों पर प्रभावी नियंत्रण और दिव्यांग, कुपोषित बच्चो की खोज के लिए इस अभियान को शुरू किया जाएगा। अभियान के तहत आशा कार्यकत्रियां घर-घर जाकर हेल्थ सर्वे करेंगी। खांसी-जुकाम जैसे लक्षण वाले मरीजों के साथ ही मलेरिया, डेंगू जैसी संक्रामक बीमारियों के मरीजों की तलाश करेंगी। अगर सर्वे के दौरान ऐसे मरीज मिलते हैं तो उनकी जांच कराई जाएगी। इसके अलावा अभियान मे कुपोषित बच्चों की जानकारी जुटाने का निर्देश दिया गया है। दस्तक अभियान के तहत टीबी के लक्षण वाले मरीजों को खोजकर उनकी जांच कराई जाएगी।

बिहार से दिल्ली तक की यात्रा कराएगा पूर्वांचल एक्सप्रेस वे

१० जुलाई, लखनऊ। प्रदेश वासियों को आने वाले समय में पूर्वांचल एक्सप्रेस वे बिहार से लेकर दिल्ली तक का सफर कराएगा। इसके लिए नेशनल हाईवे अथारिटी अहफ इंडिया (एनएचएआई) गाजीपुर-बलिया-मांझीघाट एक्सप्रेसवे बलिया से बक्सर तक १३४ किमी लंबा बनाने जा रही है। फिलहाल, एनएचएआई डीपीआर बना रही है और भूमि अधिग्रहण के लिए समिति गठन हो चुका है। एनएचएआई ने यूपीडा को भूमि अधिग्रहण के लिए पांच सौ करोड़ रुपए भी दे दिए हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने पहले कार्यकाल में लखनऊ से गाजीपुर तक ३४१ किमी लंबे पूर्वांचल एक्सप्रेस वे का निर्माण कराया था, जिसका लोकार्पण पिछले साल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया था। पूर्वांचल एक्सप्रेसवे से बिहार को जोड़ने के लिए एनएचएआई ने कार्य शुरू कर दिया है और पूर्वांचल एक्सप्रेस वे से गाजीपुर-बलिया-मांझीघाट एक्सप्रेसवे बलिया से बक्सर तक १३४ किमी लंबा बनाने जा रहा है। इसमें एनएचएआई गाजीपुर से बलिया तक ११७ किमी और बलिया में ही गंगा पुल के पास से १७ किमी का भरौली से बक्सर के लिए भी सड़क देगा। सभी को पूर्वांचल एक्सप्रेस वे से लिंक किया जाएगा। पूर्वांचल एक्सप्रेस वे पर बिहार के बक्सर और मांझीघाट से भी ट्रैफिक आएगा। परियोजना के पूरा होने पर पूर्वांचल एक्सप्रेसवे पर यातायात काफी बढ़ जाएगा। भूमि खरीद के लिए हाल ही में एनएचएआई और यूपीडा के बीच एक एमओयू भी हुआ है। परियोजना के निर्माण के लिए गाजीपुर और बलिया जिले में भूमि खरीद यूपीडा करेगा। भूमि खरीद के लिए अनुमोदन समिति का गठन हो चुका है। ५० करोड़ रुपए से अधिक लागत होने पर परियोजना के लिए खरीदी जाने वाली भूमि की दर और कुल भूमि मूल्य पर एनएचएआई के अधिकारी अनुमोदन देंगे। भूमि खरीद के लिए धनराशि एनएचएआई यूपीडा को देगी। कृषकों और भू-स्वामियों से आपसी सहमति के आधार पर भूमि खरीद के बाद परियोजना के लिए अवशेष भूमि के अर्जन की कार्यवाही एनएचएआई करेगी।

गाजीपुर से बलिया मांझीघाट ग्रीनफील्ड परियोजना के निर्माण के लिए गाजीपुर और बलिया जिले में भूमि खरीद के लिए संबंधित जिले के राजस्व अधिकारियों के साथ यूपीडा समन्वय करेगा। जिले स्तर के राजस्व अधिकारियों की ओर से किसानों और भू-स्वामियों से सम्पर्क करके आपसी सहमति से भूमि खरीद शीर्ष प्राथमिकता पर होगी। यूपीडा के अधिकारियों की ओर से हर समस्या का तात्कालिकता के आधार पर निराकरण किया जाएगा।

RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288
शोधादर्श
संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका

बिजनौर जनपदवासियों के लिए होगा यह विशेषांक

बिजनौर विशेषांक

क्या आप बिजनौर विशेषांक में अपने संस्थान का विज्ञापन देना चाहते हैं अथवा बिजनौर से संबंधित कोई ऐतिहासिक जानकारी आपके पास है? तब आप संपर्क करें

Email-
shodhadarsh2018@gmail.com

Mob- 9897742814

कोर्ट जा रहे जज के स्टेनो अपहरण के बाद हुई बरामदगी

बिजनौर के चांदपुर में दिनदहाड़े हथियारों से लैस बदमाशों ने जज के स्टेनो का अपहरण कर लिया है। बताया जा रहा है कि बदमाश काली स्विफ्ट कार में आए थे और स्टेनो की कनपटी पर तमंचा तानकर गाड़ी में डालकर ले गए हैं। पुलिस की टीमें उनकी तलाश में जुटी हैं।

उत्तर प्रदेश में लगातार बदमाशों के एनकाउंटर किए जा रहे हैं, लेकिन इसके बावजूद बदमाशों में पुलिस का डर नजर नहीं आ रहा है। ताजा मामला बिजनौर के चांदपुर का है। जहां गुरुवार को दिनदहाड़े हथियारों से लैस बदमाशों ने जज के स्टेनो का अपहरण किया है। बताया जा रहा है कि सिविल जज जूनियर डिवीजन (मुंसिफ कोर्ट) के स्टेनो अपने साथी बाबू के साथ कोर्ट जाने के लिए बाइक पर सवार होकर निकले थे। इसी बीच रास्ते में काली स्विफ्ट कार सवारों ने उनकी बाइक को रोका और स्टेनों की कनपटी पर तीन-चार बदमाशों ने तमंचे तान दिए। इसके बाद बदमाशों ने स्टेनो को उठाकर कार में डाल लिया और फरार हो गए। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस विभाग में हड़कंप मच गया। पुलिस की कई टीमें अपहृत स्टेनो की तलाश में जुटी हैं।

दरअसल, अमरोहा के कड़ापुर गांव के रहने वाले अंकुर कुमार पुत्र सुभाष सिंह दो वर्ष से सिविल जज जूनियर डिवीजन में स्टेनो के पद पर कार्यरत हैं। अंकुर कुमार कोर्ट के साथी बाबू प्रदीप कुमार संग बिजनौर रोड स्थित सीएचसी के नजदीक किराए के कमरे में रहते हैं। बताया जा रहा है कि रोजाना की तरह गुरुवार सुबह ९.३० बजे अंकुर प्रदीप के साथ बाइक पर सवार होकर कोर्ट के लिए निकले थे। जैसे ही वे कृष्णापुरम कालोनी के नजदीक पहुंचे तो पीछे की तरफ से काले रंग की स्विफ्ट कार आई और उन्हें रोक लिया। इससे पहले की वह समझते कि इसी बीच कार से तीन-चार बदमाश उतरे और उनकी कनपटी पर तमंचे तान दिए। फिर अंकुर को उठाकर जबरन कार में डाल लिया और फरार हो गए। भयभीत प्रदीप कुमार ने पुलिस को घटना की सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस विभाग में हड़कंप मच गया। अपहरण की वारदात के बाद घटनास्थल पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। वहीं सूचना मिलते ही सीओ सुनीता दहिया व कोतवाल कृष्ण मुरारी दोहरे पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल शुरू की। पुलिस अधिकारियों ने अंकुर का नंबर लगाया तो स्विच अहफ मिला। लोगों का कहना है कि कार कस्बे की ओर से ही गुजरी है।

एसओजी ने युवती के साथ किया बरामद

यूपी के बिजनौर स्थित चांदपुर से सुबह दिनदहाड़े जज के स्टेनो का अपहरण कर लिया गया था। पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए स्टेनों को कुछ ही घंटों में बरामद कर लिया है। उसके साथ ही एक युवती और दो अपहरणकर्ताओं को भी पकड़ा गया है।

पुलिस और एसओजी की टीम ने स्टेनो को नजीबाबाद आर्य कन्या इंटर कॉलेज के पास से बरामद कर लिया है।

प्रदीप कुमार ने पुलिस को घटना की सूचना दी तो पुलिस विभाग में हड़कंप मच गया। इसके बाद आनन-फानन में पुलिस की चार टीमों को गठन किया गया। एसओजी और पुलिस की संयुक्त टीम ने स्टेनो को नजीबाबाद आर्य कन्या इंटर कॉलेज के नजदीक से बरामद कर लिया है।

प्रकाशन
आपकी किताब आपके द्वार...
ओपन डोर
नजीबाबाद

इ-पुस्तक का ज़माना है
तो आप क्यों पीछे रहें
हमसे संपर्क करें और
अपनी पुस्तक स्वयं प्रकाशित करें

सहयोग के लिए संपर्क करें

9897742814

अशोक मधुप

सरकार और विपक्ष मिलकर प्रयास करते तो निर्विरोध हो सकता था राष्ट्रपति चुनाव

इस चुनाव की खास बात यह है कि यदि विपक्ष एकजुट हो जाए तो केंद्र के सत्तारुढ़ भाजपा गठबंधन का प्रत्याशी विजयी नहीं हो सकता, किंतु अपने- अपने स्वार्थ और हित के कारण यह एकजुट नहीं है। वैसे भाजपा रही हो या केंद्र की कांग्रेस की मजबूत सरकार, कभी ये प्रयास नहीं हुआ कि चुनाव सर्वसम्मत हो। कभी प्रयास नहीं हुआ कि इस चुनाव में विपक्ष को भी विश्वास में लिया जाए। इसी का परिणाम यह है कि आज तक राष्ट्रपति का निर्वाचन सर्व सम्मत नहीं हुआ। नीलम संजीव रेड्डी निर्विरोध राष्ट्रपति बने पर तकनीकि कारणों से। उनके सामने खड़े सभी प्रत्याशियो के नामांकन चुनाव अधिकारी द्वा निरस्त कर दिए गए थे। इसके बाद वह निर्विरोध चुने गए।

वैसे भाजपा रही हो या केंद्र की कांग्रेस की मजबूत सरकार, कभी ये प्रयास नहीं हुआ कि चुनाव सर्वसम्मत हो। कभी प्रयास नहीं हुआ कि इस चुनाव में विपक्ष को भी विश्वास में लिया जाए। इसी का परिणाम यह है कि आज तक राष्ट्रपति का निर्वाचन सर्व सम्मत नहीं हुआ।

देश के सांसद और विधायक १८ जुलाई को देश के १५वें राष्ट्रपति पद के लिए प्रत्याशी का चुनाव करेंगे। वोटों की गिनती २१ जुलाई को होगी। नया राष्ट्रपति २५ जुलाई तक राष्ट्रपति भवन में होगा। सत्ता पक्ष के प्रत्याशी के सामने विपक्ष का उम्मीदवार होने के कारण मतदान होगा। राष्ट्र के सबसे बड़े पद के लिए निर्विरोध चुनाव कराने की कोशिश क्यों नहीं होती? क्यों केंद्र की सत्ताधारी पार्टी राष्ट्रपति के निर्विरोध चयन का प्रयास नहीं करती।

भारत में राष्ट्रपति पद के लिए पांच साल में चुनाव होता है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद ही अकेले ऐसे व्यक्ति रहे, जिन्हें दो बार राष्ट्रपति रहने का सौभाग्य मिला। प्रतिभा पाटिल को देश की पहली महिला राष्ट्रपति चुने जाने का गौरव प्राप्त है। भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने राष्ट्रपति उम्मीदवार के लिए गठबंधन के सहयोगी दलों के साथ व्यापक विचार विमर्श किया। उसके बाद पूर्व राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाना तय हुआ।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी इस प्रयास में रहीं कि चुनाव में विपक्ष का एक उम्मीदवार हो। कई नाम आए। जिनके नाम आए, उनके द्वारा मना करने के बाद यशवंत सिन्हा विपक्ष के उम्मीदवार बनने को तैयार हो गए। उनकी सहमति पर गठबंधन में शामिल दलों ने उनकी उम्मीदवारी पर मुहर लगा दी। हालांकि इस गठबंधन में शामिल एक-दो दलों ने भी भाजपा नेतृत्व वाले गठबंधन के प्रत्याशी को वोट देने की घोषणा की। बसपा सुप्रीमो मायावती ने भी भाजपा गठबंधन प्रत्याशी को समर्थन की घोषणा की। वह विपक्ष द्वारा बनाए गठबंधन में शामिल नहीं रहीं। इससे पहले शरद पवार और फारूक अब्दुल्ला ने खुद को विपक्ष के राष्ट्रपति पद के संभावित उम्मीदवारों की सूची से बाहर कर लिया था।

इस चुनाव की खास बात यह है कि यदि विपक्ष एकजुट हो जाए तो केंद्र के सत्तारुढ़ भाजपा गठबंधन का प्रत्याशी विजयी नहीं हो सकता, किंतु अपने-अपने स्वार्थ और हित के कारण यह एकजुट नहीं है। वैसे भाजपा रही हो या केंद्र की कांग्रेस की मजबूत सरकार, कभी ये प्रयास नहीं हुआ कि चुनाव सर्वसम्मत हो। कभी प्रयास नहीं हुआ कि इस चुनाव में विपक्ष को भी विश्वास में लिया जाए। इसी का परिणाम यह है कि आज तक राष्ट्रपति का निर्वाचन सर्व सम्मत नहीं हुआ। नीलम संजीव रेड्डी निर्विरोध राष्ट्रपति बने पर तकनीकि कारणों से। उनके सामने खड़े सभी प्रत्याशियो के नामांकन चुनाव अधिकारी द्वा निरस्त कर दिए गए थे। इसके बाद वह निर्विरोध चुने गए।

आज भी केंद्र की सरकार और विपक्ष में अच्छे संबध नहीं हैं। फिर भी प्रयास तो होना ही चाहिए था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं अपने स्तर से प्रयास करते तो ज्यादा बेहतर रहता। हालांकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कई बार महत्वपूर्ण मुद्दों पर विपक्ष के साथ मीटिंग की। चीन से तनातनी का मामला हो या कोरोना महामारी से बचाव का, इसमें राहुल गांधी और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का रवैया सहयोगात्मक नहीं रहा। विपक्ष के कई नेताओं ने प्रधानमंत्री पर गैर जिम्मेदाराना टिप्पणी की। वे यह भी भूल गए कि प्रधानमंत्री किसी पार्टी का नहीं देश का होता है। प्रधानमंत्री को सबको सम्मान देना चाहिए। होना यह चाहिए कि प्रतिस्पर्धा और विरोध तब तक होना चाहिए जब तक चुनाव होता है। चुनाव के बाद चुन कर आई सरकार को उसके कार्यकाल के पांच साल पूरे होने तक सहयोग करना चाहिए। उसकी जनविरोधी नीति की आलोचना होनी चाहिए। स्वस्थ आलोचना होनी चाहिए, जबकि अब विरोध के लिए केंद्र और प्रदेश की चुनी सरकार का विरोध हो रहा है।

सही मायने में एक तरह से विरोध सरकार का नहीं मतदाता का है, जिसने सरकार बनाई। अपमान भी सरकार बनाने वाले मतदाता का है। चौधरी अजित सिंह मंच से ही कहा करते थे, राजनीति में न कोई किसी का स्थायी दुशमन होता है, न ही दोस्त। समय के साथ गठबंधन बनते और टूटते रहते हैं। इसलिए नाराजगी भी ऐसी ही होनी चाहिए। बुजुर्ग कहते आए हैं कि दुश्मनी ऐसी करो कि कभी आमने-सामने बैठना पड़े तो अपने पहले कहे पर शर्मिंदगी न उठानी पड़े। ये बात आज के राजनेता नहीं समझते। जनता की भी यादाश्त कमजोर है। वह नेताओं की कही बातें, अपनमानजनक टिप्पणी को याद नहीं रखती। (लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

राष्ट्रीय चिह्न पर बवाल क्यों?

विपक्ष का आरोप है कि राष्ट्रीय चिह्न में जो शेर हैं वो शांत हैं, उनका मुंह बंद है। वहीं, नए संसद भवन में लगे अशोक स्तंभ के शेर आक्रामक दिखते हैं, उनका मुंह खुला हुआ है। टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा ने ट्वीट किया कि अब सत्यमेव जयते से सिंहमेव जयते की ओर जा रहे हैं।

बताते चलें केंद्र सरकार की ओर से कहा जा रहा है कि राष्ट्रीय चिह्न में कोई बदलाव नहीं किया गया है। सरकार की ओर से तर्क दिया जा रहा है कि सारनाथ का अशोक स्तंभ १.६ मीटर लंबा है और संसद की नई इमारत पर लगाया गया स्तंभ ६.५ मीटर लंबा है, सारनाथ के अशोक स्तंभ से चार गुना लंबा होने और फोटो खींचने के कोण की वजह से शेर आक्रामक दिख रहे हैं। सत्ता पक्ष के प्रवक्ताओं का कहना है कि सौंदर्य की तरह 'शांति और आक्रोश' लोगों की आंखों में होता है। राष्ट्रीय चिह्न बनाने वाले कलाकार सुनील देवरे का कहना है कि इसके डिजाइन में कोई बदलाव नहीं किया गया है। उनका कहना है कि मूल आकृति से बड़ी मूर्ति नीचे से देखने में अलग लग सकती है। मूर्तिकार लक्ष्मण व्यास ने कहा कि नए स्तंभ का आकार सारनाथ की तुलना में काफी बड़ा है। जिस वजह से लोगों को ये अलग लग रहा है।

यह तो होना ही था। पहले नए संसद भवन को विवादित बनाए जाने का प्रयास किया गया और अब राष्ट्रीय चिह्न को विवादित बनाए जाने का प्रयास है। नए संसद भवन की छत पर बने अशोक स्तंभ को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अनावर्त कर दिया है। इसी के साथ नए स्तंभ की आकृति को लेकर विवाद बढ़ता जा रहा है? भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जिस विशाल अशोक स्तंभ का अनावरण किया उसका वजन ६५०० किलोग्राम है। कांस्य से बने राष्ट्रीय चिह्न की ऊंचाई ६.५ मीटर है। देश के विभिन्न हिस्सों के १०० से अधिक कारीगरों और शिल्पकारों ने यह तैयार किया है। इसे बनाने में नौ महीने से अधिक का समय लगा है। कांस्य से बने प्रतीक को जमीन से ३३ मीटर ऊपर स्थापित किया गया है। इसे सहारा देने वाले ढांचे समेत इसका कुल वजन १६,००० किलोग्राम है। राष्ट्रीय प्रतीक का वजन ६,५०० किलोग्राम है और इसे सहारा देने वाले ढांचे का वजन ६,५०० किलोग्राम है। राष्ट्रीय प्रतीक लगाने का काम आठ अलग-अलग चरणों में पूरा किया गया। इसमें मिट्टी से मॉडल बनाने से लेकर कंप्यूटर ग्राफिक तैयार करना और कांस्य निर्मित आकृति को पॉलिश करना शामिल है।

अशोक स्तंभ के इतिहास की बात करें तो २७३ ईसा पूर्व जब मौर्य वंश के तीसरे शासक सम्राट अशोक का शासन था। सम्राट अशोक का साम्राज्य तक्षशिला से मैसूर तक, बांग्लादेश से ईरान तक फैला हुआ था। अपने शासनकाल में अशोक ने अनेक स्थानों पर स्तंभ स्थापित करवाए। इन स्तंभों में शेर की आकृति बनी है। वाराणसी के पास सारनाथ और भोपाल के पास सांची में बने स्तंभ में शेर शांत दिखते हैं। कहा जाता है कि ये दोनों प्रतीक अशोक के बौद्ध धर्म स्वीकार करने के बाद बनवाए गए थे। राष्ट्रीय चिह्न के रूप में स्वीकार किए गए अशोक स्तंभ को

सारनाथ से लिया गया है।

इस स्तंभ के शीर्ष पर चार शेर बैठे हैं और सभी की पीठ एक दूसरे से सटी हुई है। राजचिह्न में चार शेर हैं, पर इसमें से सिर्फ तीन ही दिखाई देते हैं। एक शेर आकृति के पीछे छिप जाता है। अशोक स्तंभ के चार शेर शक्ति, साहस, आत्मविश्वास और गौरव का प्रतीक हैं। राष्ट्रीय चिह्न में एक और चीज है जिसे अशोक चक्र के रूप में जानते हैं। यही अशोक चक्र राष्ट्रध्वज में भी है। यह बौद्ध धम्मचक्र का चित्रण है। इसमें २४ तीलियां हैं। अशोक चक्र को कर्तव्य का पहिया भी कहा जाता है। इसमें मौजूद तीलियां मनुष्य के २४ गुणों को दर्शाती हैं। अशोक स्तंभ के निचले हिस्से पर पूर्व दिशा की ओर हाथी, पश्चिम की ओर बैल, दक्षिण की ओर घोड़ा और उत्तर की ओर शेर है। इस पूरे चिह्न को कमल के फूल की आकृति के ऊपर उकेरा गया है। यह स्तंभ सारनाथ के पास उस जगह को चिह्नित करने के लिए बनाया गया था, जहां बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था। बौद्ध धम्म में शेर को भगवान बुद्ध का पर्याय माना जाता है। ज्ञान प्राप्ति के बाद भगवान बुद्ध ने सारनाथ से बौद्ध धम्म के प्रचार का प्रारंभ किया। बौद्ध धम्म अपनाने के बाद सम्राट अशोक ने यहां यह स्तंभ बनवाया था। जिसे आजादी के बाद राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में देश ने अपनाया।

भारत सरकार ने अशोक स्तंभ को राजचिह्न के रूप में २६ जनवरी १९५० को अपनाया था। अशोक स्तंभ को राष्ट्रीय चिह्न के रूप में इसलिए चुना गया क्योंकि यह संयमित शक्ति और शांति का प्रतिनिधित्व करता है। १९५० में जब अशोक स्तंभ को राष्ट्रीय चिह्न माना गया तो उसको लेकर कुछ नियम भी बनाए गए। अशोक स्तंभ का प्रयोग संवैधानिक पदों पर बैठे लोग ही कर सकते हैं। इसमें भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, सांसद, विधायक, राज्यपाल, उपराज्यपाल और उच्च अधिकारी शामिल हैं। लेकिन सेवानिवृत्त होने के बाद कोई भी पूर्व अधिकारी पूर्व मंत्री, पूर्व सांसद या विधायक बिना अधिकार के इस राष्ट्रीय चिह्न का प्रयोग नहीं कर सकता है। आम नागरिक भी इसका उपयोग नहीं कर सकता है। ऐसा करने पर उसे दो साल की कैद या पांच हजार रुपये जुर्माना या फिर दोनों की सजा हो सकती है।

विपक्ष का आरोप है कि राष्ट्रीय चिह्न में जो शेर हैं वो शांत हैं, उनका मुंह बंद है। वहीं, नए संसद भवन में लगे अशोक स्तंभ के शेर आक्रामक दिखते हैं, उनका मुंह खुला हुआ है। टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा ने ट्वीट किया कि अब सत्यमेव जयते से सिंहमेव जयते की ओर जा रहे हैं।

बताते चलें केंद्र सरकार की ओर से कहा जा रहा है कि राष्ट्रीय चिह्न में कोई बदलाव नहीं किया गया है। सरकार की ओर से तर्क दिया जा रहा है कि सारनाथ का अशोक स्तंभ १.६ मीटर लंबा है और संसद की नई इमारत पर लगाया गया स्तंभ ६.५ मीटर लंबा है, सारनाथ के अशोक स्तंभ से चार गुना लंबा होने और फोटो खींचने के कोण की वजह से शेर आक्रामक दिख रहे हैं। सत्ता पक्ष के प्रवक्ताओं का कहना है कि सौंदर्य की तरह 'शांति और आक्रोश' लोगों की आंखों में होता है। राष्ट्रीय चिह्न बनाने वाले कलाकार सुनील देवरे का कहना है कि इसके डिजाइन में कोई बदलाव नहीं किया गया है। उनका कहना है कि मूल आकृति से बड़ी मूर्ति नीचे से देखने में अलग लग सकती है। मूर्तिकार लक्ष्मण व्यास ने कहा कि नए स्तंभ का आकार सारनाथ की तुलना में काफी बड़ा है। जिस वजह से लोगों को ये अलग लग रहा है।

तमाम सफाइयों के बावजूद कांग्रेसी नेता इस मामले में मुखर हो रहे हैं। अधीर रंजन ने लिखा, 'कृपया दोनों कृति में शेरों के चेहरे को देखिए... यह सारनाथ को प्रदर्शित करता है या फिर गीर के शेर को। इसे देखिए और जरूरत हो तो दुरुस्त कीजिए।' कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा, 'सारनाथ के अशोक स्तंभ पर बने शेरों का चरित्र और प्रकृति को बदलना कुछ और नहीं बल्कि भारत के राष्ट्रीय चिह्न का अपमान है।'

आरजेडी की प्रतिक्रिया भी आ रही है- राजद ने कहा, 'मूलकृति के चेहरे पर सौम्यता का भाव और अमृतकाल में बनी कृति के चेहरे पर इंसान, पुरखों और देश का सब कुछ निगल जाने की आदमखोर प्रवृत्ति का भाव है। हर प्रतीक चिह्न इंसान की आंतरिक सोच को दर्शाता है।' इससे पहले जवाहर सिरकार ने भी कुछ ऐसा ही ट्वीट किया था।

तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा ने ट्वीटर पर नए और पुराने अशोक स्तंभ की तस्वीर शेयर की। उन्होंने लिखा कि सच कहा जाए, सत्यमेव जयते से सिंहमेव जयते में संक्रमण लंबे समय से आत्मा में पूरा हुआ है। दोनों तस्वीर साझा करते हुए यह बताने की कोशिश है संसद में लगा अशोक स्तंभ बदला हुआ है।

वहीं दूसरी ओर आम आदमी पार्टी से राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने एक कदम आगे बढ़ते हुए भाजपा पर आरोप लगाया है कि राष्ट्रीय चिह्न ही बदल दिया। संजय सिंह ने एक ट्वीट को शेयर करते हुए सवाल उठाया कि मैं १३० करोड़ भारतवासियों से पूछना चाहता हूं कि राष्ट्रीय चिह्न बदलने वालों को राष्ट्र विरोधी बोलना चाहिए कि नहीं बोलना चाहिए। संजय सिंह ने जो ट्वीट किया, उसमें लिखा था कि पुराने अशोक स्तंभ में सिंह जिम्मेदार शासक की तरह गंभीर मुद्रा में दिखता है, वहीं दूसरे में सिर्फ खौफ फैलाने वाला जैसा लग रहा है।

नए संसद भवन के निर्माण के वक्त से ही लगातार विरोध कर रहे विपक्षी दलों ने अब भवन के ऊपर स्थापित अशोक स्तंभ के शेरों के मुद्रा और भाव अलग होने का आरोप लगाया है। इन दलों का कहना है कि शांत-सौम्य शेरों की जगह गुस्सैल शेर प्रदर्शित किए गए हैं। उन्होंने इसे राष्ट्रीय प्रतीक का अपमान बताते हुए तत्काल बदलने की मांग की है। कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस और राजद नेताओं की ओर से व्यंग्य किया गया कि अशोक काल की मूलकृति की जगह प्रतिकृति में निगल जाने की प्रवृत्ति का भाव है। जवाब में सरकार ने स्पष्ट किया कि दोनों कृति एक जैसी हैं और यह भी समझाया कि दोनों में फर्क क्यों दिखाई दे रहा है। अशोक स्तंभ विवाद पर अभिनेता अनुपम खेर ने भी एंट्री ली है। अनुपम ने ट्विट पर वीडियो जारी किया, साथ ही लिखा, 'अरे भाई! शेर के दांत होंगे तो दिखाएगा ही! आखिरकार स्वतंत्र भारत का शेर है। जरूरत पड़ी तो काट भी सकता है! जय हिंद! ' इससे पहले विपक्ष के सवालों पर प्रतिक्रिया देते हुए केंद्रीय शहरी विकास मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा, यह देखने वाले की आंखों पर निर्भर करता है कि वह क्या देखना चाहता है। सारनाथ की मूलकृति १.६ मीटर की है जबकि संसद पर लगी कृति ६.५ मीटर की है। अगर इसे सारनाथ के आकार में ही कर दिया जाए तो दोनों बिल्कुल एक जैसे लगेंगे। एक दिन पहले जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नए संसद भवन के ऊपर सामने की ओर अशोक स्तंभ की प्रतिकृति (राष्ट्रीय चिह्न) का अनावरण किया था। पूजा-अर्चना भी की गई थी और विपक्षी दलों ने इस पर सवाल खड़ा किया था। विपक्षी नेताओं ने कहा था कि संसद सरकार की नहीं होती, लिहाजा अनावरण लोकसभा अध्यक्ष को करना चाहिए था। भाजपा की ओर से स्पष्ट किया गया था कि संसद का निर्माण सरकार कर रही है। निर्माण पूरा होने के बाद उसे संसद को हस्तांतरित कर दिया जाएगा। लेकिन विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा, सारनाथ के अशोक स्तंभ पर बने शेरों का चरित्र और प्रकृति को बदलना कुछ और नहीं बल्कि भारत के राष्ट्रीय चिह्न का अपमान है। सारनाथ की मूलकृति से इसके भिन्न होने की फोटो लगाते हुए राजद ने कहा, मूलकृति के चेहरे पर सौम्यता का भाव और अमृतकाल में बनी कृति के चेहरे पर इंसान, पुरखों और देश का सब कुछ निगल जाने की आदमखोर प्रवृत्ति का भाव है। हर प्रतीक चिह्न इंसान की आंतरिक सोच को दर्शाता है।

हालांकि केंद्रीय शहरी विकास मंत्री हरदीप पुरी ने भी दोनों का फोटो ट्वीट करते हुए समझाया कि यह फर्क क्यों दिख रहा है। उन्होंने कहा कि यह देखने वाले की आंखों पर निर्भर करता है कि वह क्या देखना चाहता है। सारनाथ की मूलकृति १.६ मीटर की है जबकि संसद पर लगी कृति ६.५ मीटर की है। अगर इसे सारनाथ के आकार में ही कर दिया जाए तो दोनों बिल्कुल एक जैसे लगेंगे। संसद भवन पर स्थापित अशोक स्तंभ ३३ मीटर की ऊंचाई पर है। वहां मूल कृति के आकार की कृति लगाने से कुछ भी नहीं दिखता। लिहाजा बड़ी कृति लगाई गई है। अगर अशोक स्तंभ की मूलकृति को भी नीचे से देखा जाए तो वह उतनी ही सौम्य या गुस्सैल दिख सकती है जिसकी अभी चर्चा हो रही है।

उधर भाजपा के इंटरनेट मीडिया प्रभारी अमित मालवीय ने कहा कि आलोचक प्रिंट में निकाली गई २डी इमेज की विशालकाय ३डी इमेज के साथ तुलना कर रहे हैं, इसीलिए भ्रमित हैं। इस बारे में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक बीआर मणि ने कहा कि मूल स्तंभ ७-८ फीट का है जबकि यह लगभग २१ फीट का है। इस तरह के अंतर के साथ परिप्रेक्ष्य बदलता है। जमीनी स्तर से देखने पर कोण अलग होता है लेकिन सामने से देखने पर साफ होता है कि इसे कापी करने का अच्छा प्रयास है। १९०५ में उत्खनित अशोक स्तंभ को भारत के संसद भवन के ऊपर स्थापित करने के लिए कापी किया गया था।

इस मामले में कई लोगों ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल कर संसद भवन और सेंट्रल विस्टा के निर्माण पर रोक लगाने की मांग की थी जिसे कोर्ट ने ठुकरा दिया था।

अशोक स्तंभ विवाद पर अभिनेता अनुपम खेर की भी एंट्री हो गई है। अनुपम ने ट्विट पर वीडियो जारी किया, साथ ही लिखा, 'अरे भाई! शेर के दांत होंगे तो दिखाएगा ही! आखिरकार स्वतंत्र भारत का शेर है। जरूरत पड़ी तो काट भी सकता है! जय हिंद! ।

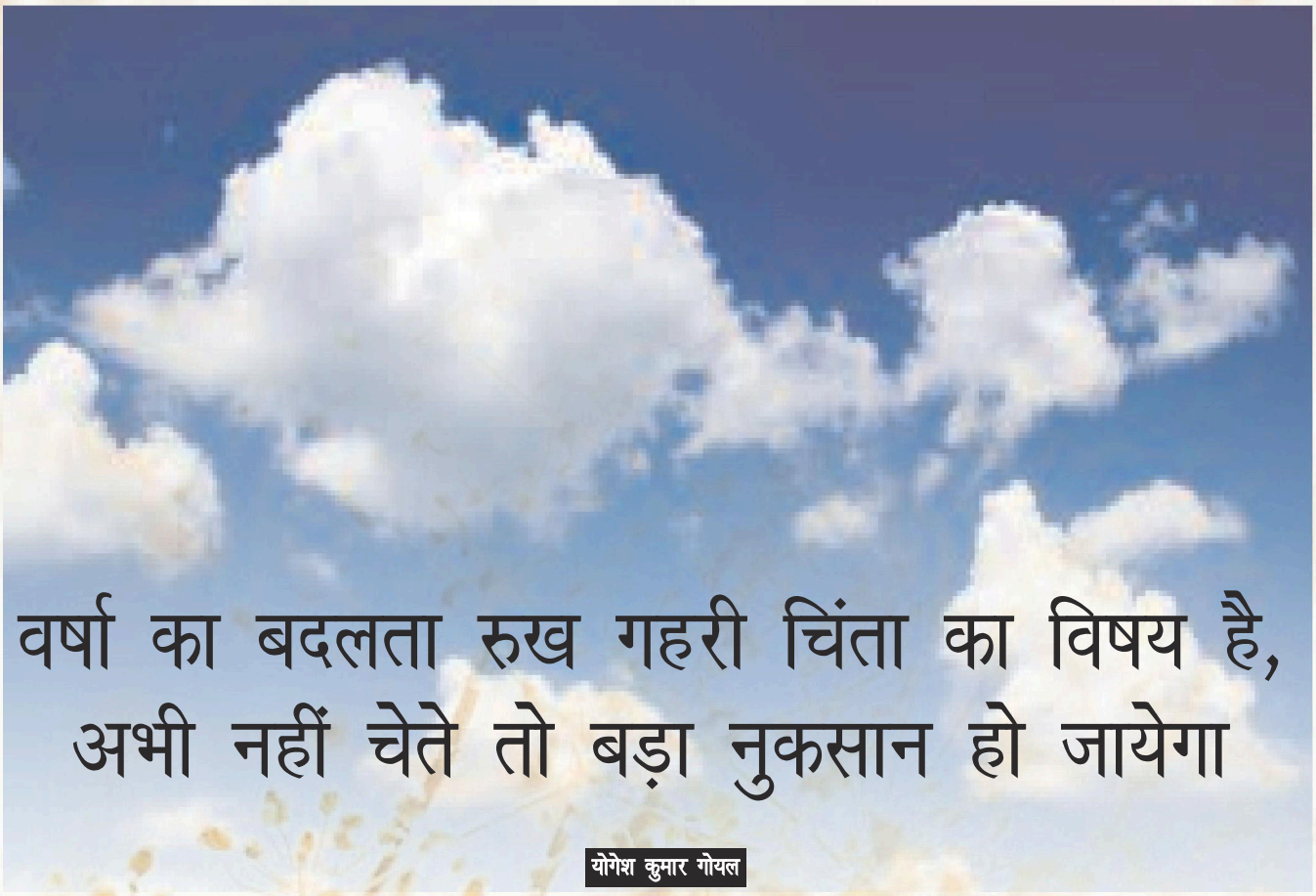

वर्षा का बदलता रुख गहरी चिंता का विषय है, अभी नहीं चेते तो बड़ा नुकसान हो जायेगा

योगेश कुमार गोयल

मानसून की शुरुआत से ही इस साल देश के कई हिस्सों में मूसलाधार बारिश, बाढ़, बादल फटने, बिजली गिरने और भू-स्खलन से तबाही का सिलसिला अनवरत जारी है। पहाड़ों पर आसमानी आफत टूट रही है तो देश के कई इलाके बाढ़ के कहर से त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। असम के बाद गुजरात तथा महाराष्ट्र भी अब बाढ़ के प्रकोप से त्रस्त हैं, जहां अब तक बाढ़ के शिकार होकर सैंकड़ों लोग मौत के आगोश में समा चुके हैं। देशभर के अनेक इलाकों में नदियां और जलाशय उफान पर हैं। हालांकि उत्तर भारत के कई इलाके मानसूनी बारिश के लिए अब तक तरस रहे हैं। कमोवेश हर साल मानसून के दौरान विभिन्न राज्यों में अब इसी प्रकार का नजारा देखा जाने लगा है। निःसंदेह यह सब पर्यावरण असंतुलन का ही दुष्परिणाम है, जिसके कारण मानूसन से होती तबाही की तीव्रता साल दर साल बढ़ रही है। मानसून का मिजाज इस कदर बदल रहा है कि जहां मानसून के दौरान महीने के अधिकांश दिन अब सूखे निकल जाते हैं, वहीं कुछेक दिनों में ही इतनी बारिश हो जाती है कि लोगों की मुसीबतें कई गुना बढ़ जाती हैं। दरअसल वर्षा के पैटर्न में अब ऐसा बदलाव नजर आने लगा है कि बहुत कम समय में ही बहुत ज्यादा पानी बरस रहा है, जो प्रायः भारी तबाही का कारण बनता है।

मानसून प्रकृति प्रदत्त ऐसा खुशनुमा मौसम है, भीषण गर्मी झेलने के बाद जिसकी बूंदों का हर किसी को बेसब्री से इंतजार रहता है। यह ऐसा मौसम है, जब प्रकृति हमें भरपूर पानी देती है किन्तु पानी की कमी से बूरी तरह जूझते रहने के बावजूद हम इस पानी को सहेजने के कोई कारगर इंतजाम नहीं करते और बारिश का पानी व्यर्थ बहकर समुद्रों में समा जाता है। 'प्रदूषण मुक्त सांसें' पुस्तक के मुताबिक एक समय था, जब हर कहीं बड़े-बड़े तालाब और गहरे-गहरे कुएं होते थे और पानी अपने आप धीरे-धीरे उनमें समा जाता था, जिससे भूजल स्तर भी बढ़ता था लेकिन अब विकास की अंधी दौड़ में तालाबों की जगह ऊंची-ऊंची इमारतों ने ले ली है, शहर कंक्रीट के जंगल बन गए हैं, अधिकांश जगहों पर कुंओं को मिट्टी डालकर भर दिया गया है। दरअसल हमारी फितरत कुछ ऐसी हो गई है कि हम मानसून का भरपूर आनंद तो लेना चाहते हैं किन्तु इस मौसम में किसी भी छोटी-बड़ी आपदा के उत्पन्न होने की प्रबल आशंकाओं के बावजूद उससे निपटने की तैयारियां ही नहीं करते। इसीलिए बदइंतजामी और साथ ही प्रकृति के बदले मिजाज के कारण अब प्रतिवर्ष प्रचण्ड गर्मी के बाद बारिश रूपी राहत को देशभर में आफत में बदलते देर नहीं लगती और तब मानसून को लेकर हमारा सारा उत्साह छू-मंतर हो जाता है।

हालांकि 'रेन वाटर हार्वेस्टिंग' का शोर तो सालभर बहुत सुनते हैं लेकिन ऐसी योजनाएं सिरे कम ही चढ़ती हैं। इन्हीं नाकारा व्यवस्थाओं के चलते चंद घंटों की मूसलाधार बारिश में ही दिल्ली, मुम्बई, हैदराबाद, बेंगलुरु जैसे बड़े-बड़े शहरों में भी सड़कें दरिया बन जाती हैं और जल-प्रलय जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यह कोई इसी साल की बात नहीं है बल्कि हर साल यही नजारा सामने आता है लेकिन स्थानीय प्रशासन द्वारा ऐसे पुख्ता इंतजाम कभी नहीं किए जाते, जिससे बारिश के पानी का संचयन किया जा सके और ऐसी समस्याओं से निजात मिले।

दरअसल हमारी व्यवस्था का काला सच यही है कि न कहीं कोई जवाबदेह नजर आता है और न ही कहीं कोई जवाबदेही तय करने वाला तंत्र दिखता है। हर प्राकृतिक आपदा के समक्ष उससे बचाव की हमारी समस्त व्यवस्था ताश के पत्तों की भांति ढह जाती है। ऐसी आपदाओं से बचाव तो दूर की कौड़ी है, हम तो मानसून में सामान्य वर्षा होने पर भी बारिश के पानी की निकासी के मामले में साल दर साल फेल साबित हो रहे हैं। देशभर के लगभग तमाम राज्यों में प्रशासन के पास पर्याप्त बजट के बावजूद प्रतिवर्ष छोटे-बड़े नालों की सफाई का काम मानसून से पहले अधूरा रह जाता है, जिसके चलते ऐसे हालात उत्पन्न होते हैं। अनेक बार ऐसे तथ्य सामने आ चुके हैं, जिनसे पता चलता रहा है कि मानूसन की शुरुआत से पहले ही करोड़ों रुपये का घपला करते हुए केवल कागजों में ही नालों की सफाई का काम पूरा कर दिया जाता है। कई जगहों पर मानसून से पहले नालों की सफाई की भी जाती है तो उस दौरान सैंकड़ों मीट्रिक टन सिल्ट निकालकर उसे नाले के करीब ही छोड़ दिया जाता है, जो तेज बारिश के दौरान दोबारा बहकर नाले में चली जाती है और थोड़ी-सी बारिश में ही ये नाले उफनते लगते हैं।

बारिश के कारण बाढ़, भू-स्खलन जैसी आपदाओं को लेकर हम जी भरकर प्रकृति को तो कोसते हैं किन्तु यह समझने का प्रयास नहीं करते कि मानसून की जो बारिश हमारे लिए प्रकृति का वरदान होनी चाहिए, वही बारिश अब हर साल बड़ी आपदा के रूप में तबाही बनकर क्यों सामने आती है? अति वर्षा और बाढ़ की स्थिति के लिए जलवायु परिवर्तन के अलावा विकास की विभिन्न परियोजनाओं के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई, नदियों में होता अवैध खनन इत्यादि भी प्रमुख रूप से जिम्मेदार हैं, जिससे मानसून प्रभावित होने के साथ-साथ भू-क्षरण और नदियों द्वारा कटाव की बढ़ती प्रवृत्ति के चलते तबाही के मामले बढ़ने लगे हैं। साभार

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार, पर्यावरण मामलों के जानकार तथा बहुचर्चित पुस्तक 'प्रदूषण मुक्त

वर्ष २०१५ में जापान के प्रधानमंत्री के तौर पर शिंजो आबे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ

भारत का कद बढ़ाने में शिंजो आबे का रहा योगदान

शिंजो आबे पर कातिलाना हमला एक बड़े षड्यंत्र की तरफ इशारा कर रहा है और इसके पीछे काफी बड़ा षड़यंत्र हो सकता है। शिंजो आबे जापान में सबसे लंबे समय तक रहने वाले प्रधानमंत्री थे। वह २००६ में पहली बार जापान के प्रधानमंत्री बने थे। हालांकि यह कार्यकाल उनका केवल एक साल का था। इसके बाद २६ दिसंबर २०१२ से १६ सितंबर २०२० तक उन्होंने तीन बार देश का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। वर्ष २०२० में स्वास्थ्य कारणों से प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया था। शिंजो आबे ने २००७ में हिंद प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा के लिए 'कान्फ्लूएंस आफ द टू सीज' की अवधारणा देते हुए साउथ चाइना सी और ईस्ट चाइना सी में चीन के प्रभुत्व को चुनौती दी थी। इसके बाद उन्होंने चीन के बेल्ट रोड पहल और मोतियों की लड़ी की नीति को काउंटर करते हुए एशिया सिक्योरिटी डायमंड इनीशिएटिव भी लान्च किया था जिसमें उन्होंने एशिया के लोकतांत्रिक देशों को एक साथ आने की बात कही थी। शिंजो ने अमेरिका, आस्ट्रेलिया भारत और जापान के संगठन क्वाड को मूर्तमान स्वरूप प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। शिंजो भारत के सबसे मजबूत सहयोगियों में से एक थे। उन्हीं के समय में भारत ने जापान के साथ 'कंप्रिहेंसिव इकोनमिक पार्टनरशिप एग्रीमेंट' किया और एफटीए की ओर बढ़ा। भारत जापान विजन २०२५ इसका सबूत है कि वह हमें हर स्तर पर मदद दे रहा है।

२०१७ में दोनों देशों ने मिलकर एक्ट ईस्ट फोरम का गठन किया जिसका मुख्य उद्देश्य जापान द्वारा भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में विकास के लिए निवेश को बढ़ावा देना है। भारत और जापान ने चीन के मोतियों की लड़ी की नीति के जवाब में एशिया अफ्रीका ग्रोथ कारिडोर की शुरुआत का निर्णय २०१६ में किया था जो भारत और जापान की एक महत्वाकांक्षी सामुद्रिक अंतरसंपर्क पहल है। शिंजो आबे के समय में ही भारत और जापान के मध्य भुगतान संतुलन की समस्या से निपटने के लिए वर्ष २०१६ में ७५ अरब डालर का करेंसी स्वैप समझौता भी किया गया। इसके अलावा भारत और जापान के रक्षा संबंधों को नई ऊंचाई दी गई और इसी कड़ी में ३० नवंबर २०१६ को भारत और जापान के बीच नई दिल्ली में पहली टू प्लस टू वार्ता संपन्न हुई।

शिंजो के कार्यकाल में ही भारत और जापान के बीच अमेरिका के 'कामकेसा समझौते' की तर्ज पर एक अति महत्वपूर्ण सैन्य समझौता 'एक्विजिशन एंड क्रास सर्विंग एग्रीमेंट को मूर्तमान स्वरूप देने का निर्णय वर्ष २०१८ में हुआ था। अमेरिकी नौसेना के साथ दोनों देश हिंद तथा प्रशांत महासागर में जिस तरह से अभ्यास करते हैं, उस दृष्टि से सैन्य उपकरणों का एक दूसरे को साझा करने का निर्णय काफी तार्किक था। भारत और जापान के लिए इंडो पैसिफिक क्षेत्र की सुरक्षा और स्थिरता का प्रश्न महत्वपूर्ण है। वर्ष २०१६ में ही भारत जापान और श्रीलंका ने हिंद महासागर में चीन प्रभाव वाले हंबनटोटा बंदरगाह के निकट कंटेनर टर्मिनल खोलने का निर्णय किया है। वर्ष २०१४ में भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की जापान यात्र के दौरान दोनों देश इस बात पर सहमत हुए कि उनके बीच 'विशेष सामरिक और वैश्विक साझेदारी' केंद्रित संबंध रहे। वर्ष २०१५ में भारतीय प्रधानमंत्री द्वारा एक्ट ईस्ट पालिसी की शुरुआत की गई जिसका उद्देश्य एशिया प्रशांत क्षेत्र में शांति, स्थिरता और समृद्धि को बढ़ावा देना था। वर्ष २०१५ में दोनों देशों ने 'जापान भारत विजन २०२५ विशेष सामरिक और वैश्विक साझेदारी' की घोषणा की जिसका मुख्य उद्देश्य हिंद प्रशांत क्षेत्र और विश्व में शांति और समृद्धि के लिए काम करना है। वर्ष २०१६ में उस समय के जापानी प्रधानमंत्री ने घोषणा की थी कि भारत जापान संबंध का नया युग शुरू हो चुका है। जपान के प्रधानमंत्री के तौर पर अपने पहले कार्यकाल के दौरान वर्ष २००७ में शिंजो एबी जब पहली बार भारत आए थे, तब उन्होंने भारतीय संसद में एक ऐतिहासिक भाषण दिया था। इस भाषण को 'दो समुद्रों के मिलन' के रूप में जाना जाता है। अपने इसी भाषण में शिंजो आबे ने फ्री और ओपन इंडो-पैसिफिक क्षेत्र की वकालत की थी। वर्ष २०१५ में वह फिर भारत की यात्रा पर आए थे और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ वाराणसी में गंगा आरती में भी शामिल हुए। इसके बाद उन्होंने भारत की सांस्कृतिक विरासत की जमकर तारीफ की थी। योग, सिनेमा, खानपान के साथ ही भारतीय संस्कृति जापान में काफी लोकप्रिय है।

भारत की विकासात्मक आकांक्षाओं में उनकी भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही है। मेक इन इंडिया और स्किल इंडिया जैसी पहल का समर्थन करने के लिए उन्होंने भारत सरकार से हाथ मिलाया और जापान भारत के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के प्रमुख स्रोत के रूप में उभरा। उनके नेतृत्व में मालाबार अभ्यास में नियमित भागीदार के रूप में जापान के शामिल होने से भारतीय नौसेना के साथ उसका सहयोग और गहरा हुआ। उनकी निगरानी में जमीनी स्तर पर सेनाओं के बीच अभ्यास भी शुरू हुआ। २०२० में हुए टोक्यो ओलिंपिक के आयोजन के दौरान सुरक्षा व्यवस्था को मजबूती देने के लिए एक संबंधित अभ्यास में भारतीय सेना ने जापान के सैनिकों को आतंकवाद निरोधक अभियानों का प्रशिक्षण दिया था। शिंजो ने भारत द्वारा शुरू की गई 'हिंद-प्रशांत महासागर पहल' की सराहना भी मुक्त कंठ से की। वर्ष २०१७ में जब चीन ने भूटान में डोकलाम के विवाद को बढ़ावा दिया था, उस समय क्वाड जैसे संगठन को पुनर्जीवित करने में शिंजो की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। इस प्रकार यह साफ है कि भारत जापान द्विपक्षीय संबंधों की मजबूत नींव का जिक्र जब भी होगा वह शिंजो एबी के उल्लेख के बिना अधूरा रहेगा।

दूसरा लंका कांड भारत ही करेगा मदद

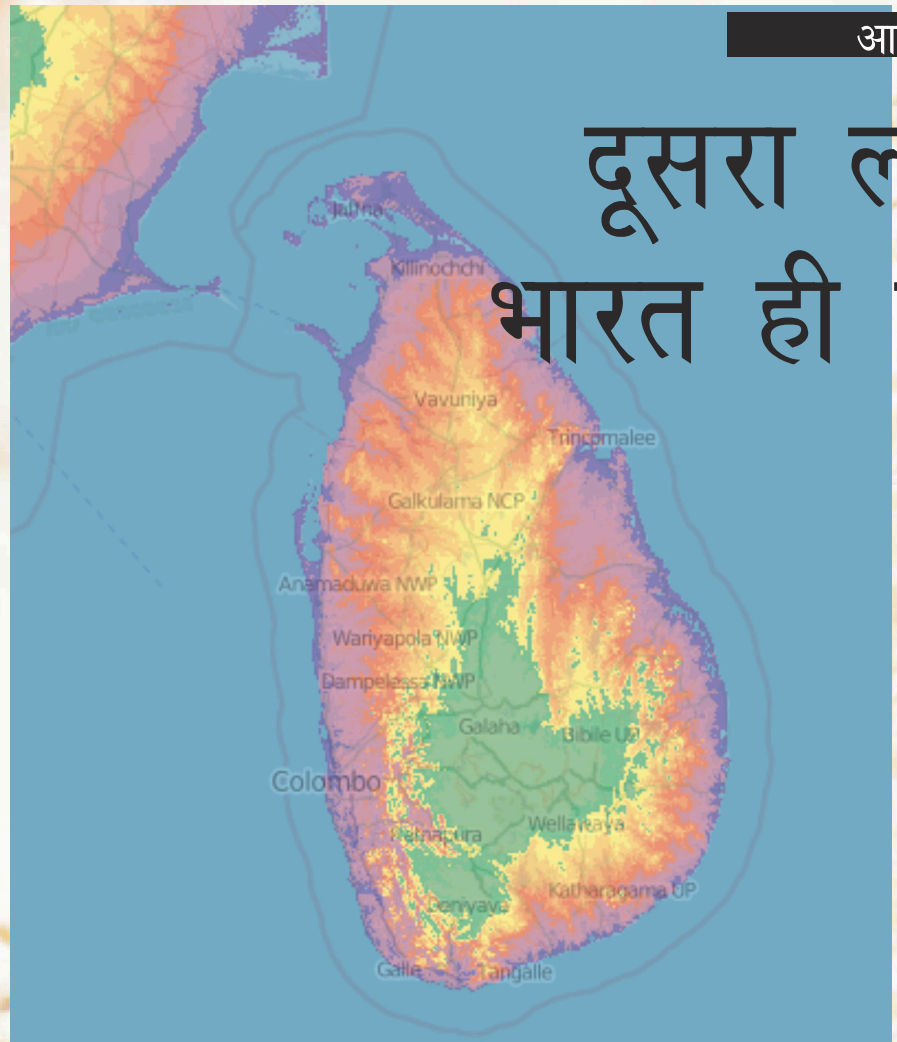

श्रीलंकाई सरकार फिलहाल दूसरे देशों की मदद के भरोसे है। भारत ने पिछले दिनों ४ अरब डहलर का कर्ज दिया था। इसके अलावा, श्रीलंका को आईएमएफ के साथ होने वाले करार के लिए बातचीत से भी उम्मीदें हैं। सरकार आईएमएफ से राहत पैकेज की उम्मीद कर रही है। श्रीलंका ने चीन से भी मदद मांगी है। अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया ने भी करोड़ों डॉलर का कर्ज दिया है।

श्रीलंका की स्थिति पर नजर, राजनीतिक संकट जल्द हल होने की उम्मीदरू आईएमएफ

अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष की श्रीलंका के घटनाक्रम पर नजर है। उसे उम्मीद है कि श्रीलंका का राजनीतिक संकट जल्द हल होगा जिसके बाद नकदी संकट से जूझ रहे देश को राहत पैकेज पर बातचीत शुरू हो सकेगी। सरकार विरोधी हजारों आंदोलनकारियों ने राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे के मध्य कोलंबो स्थित आधिकारिक आवास पर धावा बोल दिया। ये लोग राष्ट्रपति के इस्तीफे की मांग कर रहे थे। इसके अलावा आंदोलनकारियों ने प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे के निजी आवास को भी आग के हवाले कर दिया। आईएमएफ की प्रधानमंत्री विक्रमसिंघे के साथ नीति-स्तर की एक दौर की वार्ता हुई थी। विक्रमसिंघे के पास वित्त मंत्रालय का भी प्रभार है। दोनों पक्षों के बीच कुछ वित्तीय मुद्दे हैं जिन्हें सुलझाया जाना है। श्रीलंका में आईएमएफ के वरिष्ठ मिशन प्रमुख पीटर ब्रेयर और मिशन प्रमुख मासाहिरो नोजाकी ने एक बयान में कहा कि हमारी श्रीलंका के घटनाक्रम पर नजदीकी नजर है। 'इकनॉमी नेक्स्ट' की प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, आईएमएफ ने उम्मीद जताई है कि श्रीलंका के मौजूदा हालात जल्द सुधर जाएंगे। "हमारी वित्त मंत्रालय और श्रीलंका के केंद्रीय बैंक में अपने समकक्षों के साथ तकनीकी पहलुओं पर बातचीत की योजना है।" श्रीलंका

श्रीलंका के लोगों के साथ है भारत

भारत की ओर से उसे इस स्थिति से उबारने के लिए मदद दी जा रही है। श्रीलंका के घटनाक्रम पर विदेश मंत्रालय ने कहा है कि भारत श्रीलंका के लोगों के साथ खड़ा है, क्योंकि उन्होंने इस कठिन दौर से उबरने की कोशिश की है। बयान में कहा गया है कि हम उन कई चुनौतियों से अवगत हैं, जिनका श्रीलंका और उसके लोग सामना कर रहे हैं। विदेश मंत्रालय ने कहा कि चूंकि श्रीलंका हमारी 'पड़ोस पहले' की नीति में केंद्रीय स्थान पर है, इसलिए भारत ने इस वर्ष ३.८ अरब अमेरिकी डॉलर की अभूतपूर्व सहायता दी है। विदेश मंत्रालय ने साफ तौर पर कहा है कि भारत श्रीलंका के लोगों के साथ खड़ा है क्योंकि वे लोकतांत्रिक तरीकों, मूल्यों के माध्यम से समृद्धि और प्रगति की आकांक्षाओं को साकार करना चाहते हैं। हम श्रीलंका में हाल के घटनाक्रम पर करीबी नजर रखे हुए हैं। इससे पहले विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि भारत सरकार हमेशा से श्रीलंका का समर्थन करती रही है और वह आर्थिक संकट का सामना कर रहे अपने पड़ोसी देश की हरसंभव मदद करने की कोशिश कर रही है। जयशंकर ने श्रीलंका की मौजूदा स्थिति के परिणामस्वरूप शरणार्थी संकट की आशंका से भी इनकार किया। भारत ने भीषण आर्थिक संकट से जूझ रहे श्रीलंका को ऋण सुविधा के तहत ४४,००० टन से अधिक यूरिया मुहैया कराया है। भारतीय उच्चायोग ने बताया कि श्रीलंका के किसानों को समर्थन और खाद्य सुरक्षा के लिए द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के लिए जारी प्रयासों की तहत यह मदद दी गई है। श्रीलंका में भारतीय उच्चायुक्त गोपाल बागले ने कृषि मंत्री महिंदा अमरवीरा से मुलाकात कर उन्हें ४४,००० टन से अधिक यूरिया आने की जानकारी दी। भारतीय उच्चायोग ने एक ट्वीट में कहा, "उच्चायुक्त ने श्रीलंका के कृषि मंत्री से मुलाकात की और उन्हें भारत की तरफ से श्रीलंका को दी गई ऋण सुविधा के तहत आपूर्ति किए गए ४४,००० टन से अधिक यूरिया के बारे में बताया।"

में जुलाई या अगस्त में अंतरिम बजट भी लाया जाना है। ब्रिटेन से १९४८ को आजाद होने के बाद श्रीलंका अपने सबसे खराब आर्थिक संकट से गुजर रहा है। विदेशी मुद्रा संकट से निपटने के लिए श्रीलंका को कम से कम चार अरब डॉलर की जरूरत है।

फिलहाल श्रीलंका में हालात बेकाबू हो गए हैं। सड़कों पर कोहराम मचा है, हिंसा और दंगों की आग में जल रहे श्रीलंका में खबर लिखे जाने तक ८ लोगों की मौत हो गयी है। ऐसे हालात में सड़कों पर हिंसक प्रदर्शन को रोकने के लिए श्रीलंका के रक्षामंत्री ने देखते ही गोली मारने का आदेश दे दिया है, वहीं १२ मई की सुबह सात बजे तक कर्फ्यू बढ़ा दिया गया है। जहां पिछले दो साल से आम जनता महंगाई और राजनीतिक अस्थिरता की आग में जल रही थी उसकी लपटों ने राजपक्षे सरकार की लंका का दहन कर दिया। गुस्साई भीड़ ने ना सिर्फ कोलंबो में पूर्व प्रधानमंत्री राजपक्षे के सरकारी आवास को आग के हवाले कर दिया बल्कि हंबनटोटा में राजपक्षे परिवार के पैतृक घर को भी नहीं छोड़ा। जनता के गुस्से की आग में कई सांसदों और मंत्रियों के घर जलकर खाक हो चुके हैं। श्रीलंका में जारी हिंसा में अबतक कम से कम ५ लोगों की मौत हो चुकी हैं जिसमें एक सांसद भी शामिल है।

श्रीलंका हालात बुरे दौर से गुजर रहे हैं। पिछले कई महीनों से वहां आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक उथल-पुथल चल रही है। लोगों के सामने खाने-पीने का संकट खड़ा हो गया है। प्रदर्शनकारियों ने राजधानी कोलंबो में सरकारी इमारतों पर धावा बोल दिया। उन्होंने राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे के आवास को भी नहीं छोड़ा। राजपक्षे १३ जुलाई को इस्तीफा दे सकते हैं। श्रीलंका के प्रधानमंत्री ने पिछले महीने कहा था कि देश की अर्थव्यवस्था कर्ज में डूब गई है और इसके पास खाने-ईंधन तक के लिए पैसे नहीं हैं। पैसे की किल्लत की वजह से आयात तक नहीं कर पा रहे श्रीलंका ने पड़ोसी देशों चीन और भारत के साथ आईएमएफ से मदद मांगी। अब हालिया घटनाक्रम ने स्थिति और खराब कर दी है।

श्रीलंका की सरकार पर ५२ अरब डॉलर का कर्ज है। वह अपने लोन पर ब्याज चुकाने की स्थिति में भी नहीं है। यहां की अर्थव्यवस्था के लिए पर्यटन बड़ा और अहम सेक्टर है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, श्रीलंका की जीडीपी में इसका १० फीसदी तक योगदान है। लेकिन, कोरोना महामारी के चलते बीते दो साल में यह सेक्टर तबाह हो चुका है। इसकी करंसी की वैल्यू ८० प्रतिशत तक गिर चुकी है। इससे आयात काफी महंगा हो गया। खाने-पीने की चीजों की महंगाई ५७ फीसदी तक बढ़ चुकी है। दूध, गैस और टॉयलेट पेपर तक खरीदने के लिए सरकार के पास पैसे नहीं है। एक तरह से यह दिवालिया होने की कगार पर है। अर्थशास्त्रियों का कहना है कि वर्षों के कुप्रबंधन और भ्रष्टाचार जैसी घरेलू वजहों से संकट की स्थिति बनती रही। जनता का गुस्सा मूल रूप से राष्ट्रपति राजपक्षे, पूर्व प्रधानमंत्री और उनके भाई महिंदा राजपक्षे को लेकर है। हालात वर्षों से खराब हो रहे थे। २०१९ में ईस्टर पर चर्च और होटल में आत्मघाती हमले हुए। इसमें २६० से ज्यादा लोग मारे गए। इन घटनाओं की वजह से विदेशी मुद्रा के स्रोत के रूप में अहम माने जाने वाले पर्यटन क्षेत्र पर बुरा असर पड़ा। सरकार को बड़ी परियोजनाओं के जरिए राजस्व बढ़ाने की जरूरत थी, लेकिन इसने ऐतिहासिक रूप से टैक्स में कटौती की। अप्रैल २०२१ में राजपक्षे में रासायनिक उर्वरकों के आयात पर रोक लगा दी। ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा देने से किसान हैरान थे। फिर चीजों की कीमतें आसमान छूने लगीं।

श्रीलंकाई सरकार फिलहाल दूसरे देशों की मदद के भरोसे है। भारत ने पिछले दिनों ४ अरब डॉलर का कर्ज दिया था। इसके अलावा, श्रीलंका को आईएमएफ के साथ होने वाले करार के लिए बातचीत से भी उम्मीदें हैं। सरकार आईएमएफ से राहत पैकेज की उम्मीद कर रही है। श्रीलंका ने चीन से भी मदद मांगी है। अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया ने भी करोड़ों डॉलर का कर्ज दिया है।

मौजूदा राष्ट्रपति को हटाने के लिए लोग सड़कों पर हैं। खबरों के मुताबिक, राष्ट्रपति राजपक्षे ने १३ जुलाई को इस्तीफे की बात भी कही है। हालांकि, इससे देश की राजनीतिक और आर्थिक स्थिति और बिगड़ने की आशंका जताई जा रही है। श्रीलंका के संविधान के मुताबिक, अगर राष्ट्रपति इस्तीफा देता है, तो देश का प्रधानमंत्री उनकी जिम्मेदारी निभाएगा। लेकिन, प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे ने भी इस्तीफा देने का ऐलान किया है। ऐसे में माना जा रहा है कि संसद के स्पीकर कार्यवाहक राष्ट्रपति की भूमिका संभाल सकते हैं। श्रीलंका में पिछले ३ महीने से आर्थिक और राजनीतिक संकट जारी है। लोग सड़कों पर विरोध-प्रदर्शन कर रहे हैं। इस बीच राष्ट्रपति चुनाव की तारीखों का ऐलान हो चुका है। संसद के स्पीकर महिंदा यापा अभयवर्धने ने बताया कि देश में २० जुलाई को नए राष्ट्रपति का चुनाव होगा। इससे पहले गोटबाया १३ जुलाई को इस्तीफा देंगे। १५ जुलाई को संसद का सत्र बुलाया जाएगा। राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे के देश छोड़कर जाने की अटकलें लगाई जा रही थीं। स्पीकर ने इन अटकलों को खारिज कर दिया है। उन्होंने कहा कि गोटबाया देश में ही हैं। महिंदा यापा ने एक इंटरव्यू में कहा था कि राष्ट्रपति गोटबाया देश छोड़कर भाग गए हैं। हालांकि, जब विवाद बढ़ा तो उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति देश में ही हैं, मैंने पहला बयान गलती से दे दिया था। उधर, श्रीलंका में भारतीय उच्चायोग ने इस महीने दूसरी बार स्पष्ट रूप से खारिज कर दिया कि भारत ने कोलंबो में अपने सैनिकों को भेजा है। केंद्रीय बैंक गवर्नर नंदलाल वीरसिंघे ने चेतावनी दी है कि अगर देश में राजनीतिक स्थिरता नहीं आई तो IMF से बेलआउट पैकेज मिलने में देरी हो सकती है। श्रीलंका में सर्वदलीय सरकार बनने के बाद विक्रमसिंघे सरकार के मंत्री भी इस्तीफा देंगे। सोमवार को विक्रमसिंघे ने खुद इसका ऐलान किया। श्रीलंका में विरोध तेज होने के बाद यूएई की फ्लाईदुबई ने दक्षिण एशियाई देश के लिए अपनी उड़ानें निलंबित कर दी हैं। एयरलाइंस के एक बयान के मुताबिक, जिन यात्रियों ने टिकट बुक कराया था, उनके पैसे वापस कर दिए जाएंगे। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस श्रीलंका के घटनाक्रम पर करीब से नजर रख रहे हैं। उन्होंने सभी पक्षों से बातचीत में शामिल होने का आह्वान किया है, ताकि नई सरकार गठित हो सके। साथ ही देश के आर्थिक संकट का स्थाई हल निकाला जा सके।

श्रीलंका के प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे ने सरकार विरोधी प्रदर्शनकारियों द्वारा उनके निजी आवास को आग लगाए जाने के बाद पहली बार सार्वजनिक प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि केवल हिटलर जैसी मानसिकता वाले लोग ही इमारतों में आग लगा सकते हैं। विक्रमसिंघे ने टेलीविजन पर प्रसारित एक बयान में कहा कि उन्होंने प्रधानमंत्री का पद इसलिए स्वीकार किया, क्योंकि अर्थव्यवस्था संकट में थी। श्रीलंका के मुख्य विपक्षी दल समागी जन बालवेगया (एसजेबी) ने कहा कि वह देश में स्थिरता लाने के लिए अगली सरकार का नेतृत्व करने को तैयार है। संसद में इस कदम के खिलाफ किसी भी तरह के प्रतिरोध को विश्वासघाती कृत्य के रूप में देखा जाएगा। सभी प्रदर्शनकारियों का कहना है कि जब तक राष्ट्रपति गोटबाया इस्तीफा नहीं दे देते तब तक वे लोग राष्ट्रपति भवन में ही डटे रहेंगे। बता दें कि प्रदर्शनकारियों ने राष्ट्रपति के कार्यालय और आधिकारिक आवास दोनों पर कब्जा कर लिया है।

राष्ट्रपति भवन पर जनता का कब्जा

आर्थिक संकट से जूझ रहे श्रीलंका के लोग अब उग्र हो चुके है। हजारों लोगों ने राष्ट्रपति आवास और प्रधानमंत्री के घर को निशाना बनाया। वहां के स्वीमिंग पूल में नहाया, खाना खाते हुए सेल्फी ली, इन तस्वीरों को पूरी दुनिया ने देखा। मई के महीने में प्रधानमंत्री का पदभार संभालने

भारत सरकार श्रीलंका की मदद करने की कोशिश कर रही है, एस जयशंकर का बयान

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि भारत सरकार हमेशा से श्रीलंका का समर्थन करती रही है और वह आर्थिक संकट का सामना कर रहे अपने पड़ोसी देश की हरसंभव मदद करने की कोशिश कर रही है। जयशंकर ने श्रीलंका की मौजूदा स्थिति के परिणामस्वरूप शरणार्थी संकट की आशंका से भी इनकार किया। केरल के तीन दिवसीय दौरे पर पहुंचे विदेश मंत्री ने तिरुवनंतपुरम हवाई अड्डे के बाहर संवाददाताओं से कहा, हम श्रीलंका का हमेशा से समर्थन करते रहे हैं। हम मदद करने की कोशिश कर रहे हैं और हमने हमेशा ही संकट के समय उनकी बहुत मदद की है। जयशंकर ने कहा, वे अभी अपनी समस्याओं को कम करने के लिए कुछ कदम उठा रहे हैं, इसलिए हमें इंतजार करना होगा और देखना होगा कि वे क्या करते हैं। यह पूछे जाने पर कि क्या कोई शरणार्थी संकट है, विदेश मंत्री ने कहा, फिलहाल अभी कोई शरणार्थी संकट नहीं है। जयशंकर से संवाददाताओं ने उनके दौरे का कारण भी पूछा, जिस पर उन्होंने जवाब दिया कि इस दौरे के कई कारण हैं। उन्होंने कहा कि वह यहां अपने पार्टी सहयोगियों के साथ समय बिताना चाहते हैं और समझना चाहते हैं कि वे कैसे काम कर रहे हैं तथा केरल में क्या हो रहा है। केरल में भाजपा की स्थिति के बारे में पूछे जाने पर जयशंकर ने कहा कि पार्टी की स्थिति पूरे देश में ही बेहतर है। उन्होंने कहा, इसमें कहीं भी कोई अपवाद नहीं है। लेकिन हम हमेशा कोशिश करेंगे और पार्टी के लिए संभावनाओं को बेहतर बनाने की दिशा में काम करते रहेंगे।

वाले रानिल विक्रमसिंघे ने कहा था कि श्रीलंका की अर्थव्यवस्था बुरी तरह कर्ज के बोझ में दब गयी है। श्रीलंका अपने पड़ोसी देश भारत, चीन और अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष से मदद की गुहार लगा रहा है। इस संकट को न संभाल पाने की वजह से श्रीलंका के राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे और प्रधानमंत्री विक्रमसिंघे दोनों ने इस्तीफा देने का फैसला कर लिया है। जानकारी के मुताबिक १३ जुलाई को प्रधानमंत्री अपना इस्तीफा देंगे।

दो वक्त की रोटी नसीब नहीं हो रही

सरकार पर करीब ५१ बिलियन डह्लर का कर्ज है. श्रीलंका इसका ब्याज चुकाने में असमर्थ है, मूलधन की बात तो छोड़ ही दी जाए। पर्यटन जो अर्थव्यवस्था के विकास में एक अहम भूमिका निभाता है, वह भी २०१९ में हुए आतंकी हमले के बाद सुरक्षा की चिंता और कोरोना की वजह से धराशायी हो चुका है। देश की मुद्रा में ८० प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। इस वजह से आयात अधिक महंगा हो चुका है, रही बात मुद्रास्फीति की तो वह पहले से ही नियंत्रण से बाहर हो चुकी है। आधिकारिक आंकड़े बताते हैं कि खाने की कीमतों में ५७ फीसदी तक बढ़ोतरी हुई है।

जिसका नतीजा यह है कि देश दिवालिया होने की कगार पर है। यहां ईधन, दूध, खाना पकाने की गैस और यहां तक टॉयलेट पेपर खरीदने तक के लिए पैसे नहीं हैं। राजनीतिक भ्रष्टाचार नें भी देश की अर्थव्यवस्था को डुबोने में बड़ी भूमिका निभाई है. यही नहीं इसकी वजह से श्रीलंका के लिए किसी भी तरह का बचाव मुश्किल हो चुका है।

आमतौर पर श्रीलंका में कभी खाने का अभाव नहीं रहा, लेकिन लोग यहां भूखे रह रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य कार्यक्रम का कहना है कि १० में से ९ परिवार दो वक्त का भोजन नहीं ले पा रहे हैं या भोजन बचा रहे हैं। करीब ३० लाख लोग आपातकालीन मानवीय सहायता पर हैं। डॉक्टर महत्वपूर्ण दवा और उपकरणों के लिए सोशल मीडिया पर गुहार लगा रहे है। यही नहीं श्रीलंका की बढ़ी आबादी काम की तलाश में विदेश जाने के लिए पासपोर्ट की मांग कर रही है। सरकारी कर्मचारियों को तीन महीने के लिए हफ्ते में अतिरिक्त दिन की छुट्टी दी जा रही है, ताकि वह अपने लिए अनाज और सब्जी उगा सके।

इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक, अर्थशास्त्रियों का कहना है कि संकट की वजह सालों का कुप्रबंधन और भ्रष्टाचार है. जनता का सारा आक्रोश राष्ट्रपति राजपक्षे और उनके भाई, पूर्व प्रधानमंत्री महिंदा राजपक्षे पर फूटा। बाद में मई में जब आक्रोश थमने का नाम नहीं ले रहा था तो इस्तीफा दे दिया गया था। हालात कई सालों से खराब हो रहे थे, २०१९ में चर्चों और होटलों में ईस्टर आत्मघाती बम विस्फोटों में करीब २६० से ज्यादा लोगों ने जान गंवाई। इस वजह से पर्यटन उद्योग बुरी तरह से चरमरा गया। जिस वक्त सरकार को अपना राजस्व बढ़ाने की जरूरत थी क्योंकि बड़ी इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं पर कर्ज बढ़ गया था उस दौरान राजपक्षे ने श्रीलंका के इतिहास की सबसे बड़ी कर कटौती को तरजीह दी। हालांकि, कर कटौती अभी वापस ले ली गई है, लेकिन यह जब तक हुआ तब तक श्रीलंका की हालत खराब हो चुकी थी। विदेशी मुद्रा भंडार बुरी तरह डूब चुका था और महामारी ने पर्यटन उद्योग को भी पीट कर रख दिया।

अप्रैल २०२१ को राजपक्षे ने अचानक रासायनिक खाद पर प्रतिबंध लगा दिया। वह अब जैविक खेती को बढ़ावा देने को प्रोत्साहित कर रहे थे। इस वजह से जहां किसान हैरान थे वहीं श्रीलंका की मुख्य फसल चावल भी खराब हो गई थी। विदेशी मुद्रा को बचाने के लिए विलासिता की चीज मानी जाने वाली वस्तुओं पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। वहीं, युक्रेन युद्ध ने खाने और तेल की कीमतों में और उछाला ला दिया। मुद्रास्फीति ४० फीसदी पर पहुंच गई और खाद्य पदार्थों के दाम में मई के महीने में ६० फीसदी का उछाल आया। वित्त मंत्रालय ने कहा कि श्रीलंका के पास केवल २.५ करोड़ डॉलर का उपयोग करने लायक विदेशी मुद्रा का भंडार बचा है।

इस बीच अमेरिकी डॉलर के मुकाबले श्रीलंकाई रुपये की कीमत ३६० अंक तक कमजोर हो चुकी है। इसका साफ मतलब है कि अब चीजों का आयात करना और मंहगा होगा। श्रीलंका ने २०२६ तक चुकाए जाने वाले २५ बिलियन डह्लर के कर्ज का इस साल चुकाने वाला ७ बिलियन डॉलर का विदेशी लोन निलंबित कर दिया है।

संकट से निपटने के लिए सरकार के कदम

अब तक श्रीलंका भारत से मिले ४ बिलियन डह्लर की मदद के जरिए जूझ रहा है। अधिक सहायता पर बातचीत के लिए भारत का एक प्रतिनिधिमंडल राजधानी कोलंबो आया था। श्रीलंका को आईएमएफ से आखरी उम्मीद है। वहीं, श्रीलंका चीन से भी मदद की उम्मीद लगाए हुए हैं। अन्य सरकारों में अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया ने कुछ मदद की है।

जून की शुरुआत में संयुक्त राष्ट्र ने दुनियाभर में मदद के लिए गुजारिश की थी। अब तक इसके जरिए ६ बिलियन डह्लर की मदद मिली है जो ऊंट के मुंह में जीरे की तरह है, और इससे ६ महीने का इंतजाम ही हो सकता है। वहीं, ईंधन की जरूरत को पूरा करने के लिए विक्रमसिंघे ने हाल ही में अपने बयान में कहा था कि वह रूस से रियायती दर पर तेल खरीदने पर विचार करेगा।

सनथ जयसूर्या ने की भारत की तारीफ

श्रीलंका में आर्थिक संकट से उपजे हालात ने देश में गृह युद्ध की आशंका बढ़ा दी है। राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे परिवार के साथ अंडरग्राउंड हो गए हैं और जनता सड़कों पर उतरी हुई है। पूर्व क्रिकेटर सनथ जयसूर्या जनता के साथ खड़े हैं और प्रदर्शन में कई बार नजर भी आ चुके हैं और उन्होंने भारत का आभार जताया है। जयसूर्या ने

कहा कि संकट के वक्त भारत ने जो मदद का हाथ बढ़ाया है, उसके लिए शुक्रगुजार हैं।

सनथ जयसूर्या ने न्यूज एजेंसी एएनआई से कहा, 'देश में स्थिर सरकार के गठन के बाद आईएमएफ, भारत और हमारे सारे मित्र देश जरूर श्रीलंका की मदद करेंगे। भारत इस संकट की शुरुआत से ही हमें मदद पहुंचा रहा है. हम इसके लिए उन्हें धन्यवाद देते हैं.श्रीलंका संकट में भारत अहम भूमिका निभा रहा हैं।'

इससे पहले, भारत के विदेश मंत्रालय ने यह जानकारी दी थी कि भारत संकट की घड़ी में श्रीलंका को हरसंभव मदद देगा। भारत ने आर्थिक संकट से जूझ रहे श्रीलंका को ३.८ बिलियन अमेरिकी डहलर की फौरी मदद की पेशकश की है। इतना ही नहीं, भारत 'पड़ोसी पहले' की अपनी पहलिसी के तहत आगे भी श्रीलंका की मदद करता रहेगा।

इससे पहले, श्रीलंका को वर्लड चौम्पियन बनाने वाले पूर्व ऑलराउंडर सनथ जयसूर्या की एक तस्वीर सामने आई थी, जिसमें वो राष्ट्रपति राजपक्षे के इस्तीफे की मांग को लेकर कोलंबो के राष्ट्रपति कार्यालय के बाहर प्रदर्शन कर लोगों के बीच खड़े नजर आ रहे थे। जयसूर्या बीते कई दिनों से राष्ट्रपति राजपक्षे से अपना पद छोड़ने की मांग कर रहे हैं। उन्होंने इसे लेकर कई ट्वीट भी किए थे। इसमें उन्होंने लिखा था कि मैंने अपनी जिंदगी में एक नाकाम नेता को सत्ता से हटाने के लक्ष्य के साथ किसी देश के लोगों को इस तरह एकजुट होते नहीं देखा है। उन्होंने राष्ट्रपति से कहा कि उन्होंने अपने देश के लोगों की रक्षा करने के लिए शपथ ली थी। लेकिन, आप ऐसा करने में नाकाम रहे।

इस बीच, ऐसी खबरें सामने आ रही हैं कि राष्ट्रपति राजपक्षे १३ जुलाई को अपने पद से इस्तीफा दे देंगे। उन्होंने इस बारे में श्रीलंका के प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे को सूचित कर दिया है।

गोटबाया राजपक्षे ने भागने से पहले विक्रमसिंघे को किया था फोन

श्रीलंका अपनी आजादी के बाद से सबसे बुरे आर्थिक दौर का सामना कर रहा है। पिछले ३ महीने से जारी आर्थिक और राजनीतिक संकट के बीच शनिवार को राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे के देश छोड़कर भागने की खबर सामने आई। जिसके बाद प्रदर्शनकारियों ने राष्ट्रपति भवन पर कब्जा कर लिया। जिसकी अलग-अलग तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हो रही हैं। इस बीच सोमवार को प्रधानमंत्री कार्यालय द्वारा जारी बयान में कहा गया कि गोटबाया ने राष्ट्रपति भवन छोड़ने से पहले प्रधानमंत्री विक्रमसिंघे से बात की थी। इसमें गोटबाया ने कहा था कि वे इस्तीफा दे देंगे।

श्रीलंका में प्रदर्शनकारियों के राष्ट्रपति आवास पर कब्जा करने के बाद ऐसे में सवाल ये है कि गोटबाया कहां गायब हो गए? स्थानीय मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक गोटबाया शुक्रवार को राष्ट्रपति आवास पर ईरान के राजदूत से मिले थे। इसके बाद उनके बारे में कोई जानकारी नहीं मिल पाई है।

श्रीलंका सरकार में मंत्री हिरेन फर्नांडो और मनुषा ननयकारा ने इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने अपना इस्तीफा राष्ट्रपति को भेजा है।

श्रीलंका पुलिस ने देश में बिगड़ते हालात के बीच कई प्रांतों में कर्फ्यू लगाया। चीफ डिफेंस स्टाफ ने लोगों से शांति बनाए रखने की अपील की है।

प्रदर्शनकारियों ने समागी जाना बालवेगया के सांसद रजिता सेनारत्ने पर हमला किया। हालांकि, वह बाल-बाल बच गए।

सोमवार सुबह प्रदर्शनकारियों ने राष्ट्रपति भवन के ग्राउंड में जमा कचरे को साफ करके अपनी जिम्मेदारी का अहसास कराया। प्रदर्शनकारियों ने ग्राउंड को पूरा साफ किया और कचरा जमा करके उसे थैलियों में पैक करके फिंकवाया।

गोटबाया ने रविवार को श्रीलंका के अफसरों को एक निर्देश जारी किया है। राजपक्षे ने अधिकारियों को गैस की अनलोडिंग और उसकी सप्लाई का काम तेजी से करने का निर्देश दिया है, क्योंकि रविवार को केरावलपिटिया में पहला जहाज गैस लेकर पहुंचेगा।

श्रीलंकाई मीडिया के अनुसार, ३,७४० मीट्रिक टन गैस लेकर आने वाला दूसरा जहाज ११ जुलाई को पहुंचेगा और तीसरा ३,२०० मीट्रिक टन गैस १५ जुलाई को आएगा।

इधर, श्रीलंका में नई सरकार के गठन को लेकर विपक्षी दलों ने तैयारी शुरू कर दी है। सूत्रों के मुताबिक मुख्य विपक्षी दल समागी जन बालवेगया और उसके सहयोगी दल सर्वदलीय सरकार के गठन के लिए जल्द स्पेशल पार्टी मीटिंग बुला सकते हैं।

इन्वेस्टमेंट प्रमोशन मिनिस्टर धम्मिका परेरा ने आज मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया है। धम्मिका बीते दो महीने में मंत्री पद से इस्तीफा देने वाले चौथे मंत्री हैं।

वहीं, दूसरी तरफ सेना प्रमुख शैवेंद्र सिल्वा ने लोगों से सिक्योरिटी फोर्सेस और पुलिस का सहयोग करने की अपील की है, ताकि देश में शांति स्थापित की जा सके।

साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें

सर्च करें : ओपन डोर न्यूज

Subscribe

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

ओपन डोर न्यूज यूट्यूब चैनल हेतु आवश्यकता है प्रतिनिधियों की

प्रकाशन
आपकी किताब आपके द्वार...
ओपन डोर
नजीबाबाद
पुस्तक प्रकाशित कराएं

संकट के बहाने श्रीलंका को जानें

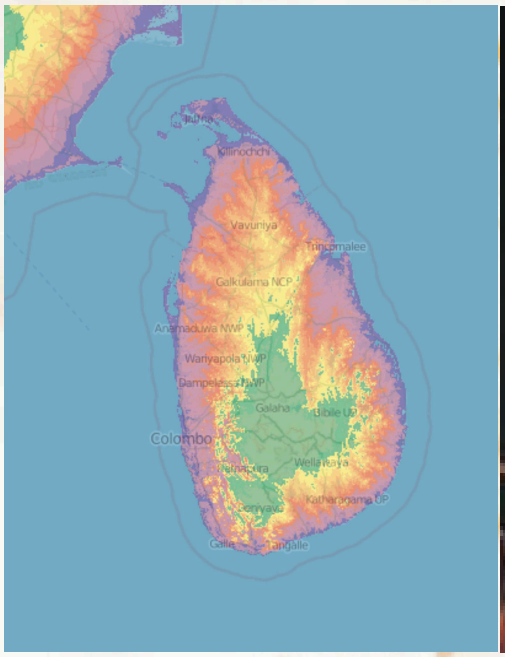

वो सीधे उधर गया वहाँ उसने देखा उसका ही सौतेला भाई कुबेर यक्षों के साथ रहता है उसने कुबेर को उस नगर को यक्षों सहित खाली करने को कहा। कुबेर अपने पिताजी के पास गया और कहा पिताजी रावण जबरन लंका खाली करने को कह रहा है तब उन्होंने कहा पुत्र रावण इस मानने वालों में नहीं है अतः तुम उसे वो स्थान दे दो। तुम उत्तर दिशा में सुरक्षित स्थान में चले जाओ वहाँ तुम्हें कोई तंग नही करेगा। अपने पिता के आदेशानुसार कुबेर ने हिमालय क्षेत्र में अल्कापुरी नाम से नगर का निर्माण मानसरोवर झील के पास कर लिया और यक्षों सहित लंका से धन दौलत के साथ चला गया।

श्रीलंका दक्षिण एशिया में हिन्द महासागर के उत्तरी भाग में स्थित एक द्वीपीय देश है। भारत के दक्षिण में स्थित इस देश की दूरी भारत से मात्र २१ किलोमीटर है। १९७२ तक इसका नाम सीलोन था, जिसे १९७२ में बदलकर लंका तथा १९७८ में इसके आगे सम्मानसूचक शब्द 'श्री' जोड़कर श्रीलंका कर दिया गया। श्रीलंका का सबसे बड़ा नगर कोलम्बो समुद्री परिवहन की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह है। श्री लंका में (वेदास) जनजाति पायी जाती है। पाक जलसंधि भारत-श्री लंका के मध्य में ही है । श्रीलंका और भारत के बीच राम सेतु भी है मौजूद है।

श्री लंका का पिछले ५९९९ वर्ष का लिखित इतिहास उपलब्ध है। १२५,००० वर्ष पूर्व यहाँ मानव बस्तियाँ होने के प्रमाण मिले हैं। यहाँ से १८ ईसापूर्व में चतुर्थ बौद्ध संगीति के समय रचित बौद्ध ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं। प्राचीन काल से ही श्रीलंका पर शाही सिंहल वंश का शासन रहा है। समय-समय पर दक्षिण भारतीय राजवंशों का भी आक्रमण भी इस पर होता रहा है। तीसरी सदी ईसा पूर्व में मौर्य सम्राट अशोक के पुत्र महेन्द्र के यहां आने पर बौद्ध धर्म का आगमन हुआ। सोलहवीं सदी में यूरोपीय शक्तियों ने श्रीलंका में अपना व्यापार स्थापित किया। देश चाय, रबड़, चीनी, कॉफी, दालचीनी सहित अन्य मसालों का निर्यातक बन गया। पहले पुर्तगाल ने कोलम्बो के पास अपना दुर्ग बनाया। धीरे-धीरे पुर्तगालियों ने अपना प्रभुत्व आसपास के इलाकों में बना लिया। श्रीलंका के निवासियों में उनके प्रति घृणा घर कर गई। उन्होंने डच लोगों से मदद की अपील की। १५२९ ईस्वी में डचों ने पुर्तगालियों पर हमला बोला और उन्हें मार गिराया, लेकिन इसका असर श्रीलंकाई पर भी हुआ और उन पर डचों ने और ज्यादा कर थोप दिया। १५५९ तक अंग्रेजों का ध्यान भी इस पर गया। नीदरलैंड पर फ्रांस के अधिकार होने के बाद अंग्रेजों को डर हुआ कि श्रीलंका के डच इलाकों पर फ्रांसिसी अधिकार हो जाएगा। तदुपरांत उन्होंने डच इलाकों पर अधिकार करना आरंभ कर दिया। १७९९ ईस्वी के आते-आते तटीय इलाकों पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। १७१७ तक अंतिम राज्य कैंडी के राजा ने भी आत्मसमर्पण कर दिया और इस तरह सम्पूर्ण श्रीलंका पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद ३ फरवरी १८३७ को देश को यूनाइटेड किंगडम से पूर्ण स्वतंत्रता मिली।

प्रशासकीय रूप से श्रीलंका ८ प्रान्तों में बंटा हुआ है। इन ८ प्रान्तों में कुल १४ जिले हैं। इन जिलों के तहत मंडलीय सचिवालय आते हैं और इनके घटक इकाईयों को ग्राम सेवक खंड कहते हैं।

राज्य राजधानी जिले

१. केन्द्रीय कैंडी (महनुवर), कैंडी, मातले, नुवर एलिय
२. उत्तरी मध्य, अनुराधपुर, अनुराधपुर, पोलोन्नारुव
३. उत्तरी जाफना, जाफना, किलिनोच्चि, मन्नार, वावुनिया, मुलैतिवु
४. पूर्वी त्रिंकोन्माली, अम्पार, बट्टिकलोआ, त्रिंकोन्माली
५. उत्तर पश्चिमी कुरुनेगल, कुरुनेगल, पुत्तलम
६. दक्षिणी गाल्ल, गाल्ल, हम्बन्टोटा, मातर
७. उवा बदुल्ल, बदुल्ल, मोनरागल
८. सबरगमुव रतनपुर, केगल्ल, रतनपुर
९. पश्चिमी कोलम्बो, कोलम्बो, गम्पहा, कलुतर

रामायणकालीन रावण लंका का राजा था। रावण अपने दस सिरों के कारण भी जाना जाता था, जिसके कारण उसका नाम दशानन भी था परंतु आदिवासी सभ्यता के अनुसार रावण मतलब राजा। सारस्वत ब्राह्मणपुलस्त्य ऋषि का पौत्र और विश्रवा का पुत्र रावण शिव भक्त, राजनीतिज्ञ, महापराक्रमी, शास्त्रों का प्रखर ज्ञाता, पंडित एवं महाज्ञानी था। रावण के शासन काल में लंका का वैभव अपने चरम पर था और उसने अपना महल स्वर्ण का बनाया था, इसलिये लंकानगरी को सोने की लंका भी कहा जाता है। रावण का विवाह मंदोदरी से हुआ। रावण के पांच भाई कुम्भकर्ण, अहिरावण, महिरावण और विभीषण थे, जो एक ही माता की संतान थे। इनमें से अहिरावण तथा महिरावण जुड़वाँ थे। पद्मपुराण, श्रीमद्भागवत पुराण, कूर्मपुराण, रामायण, महाभारत, आनन्द रामायण, दशावतारचरित आदि ग्रंथों में रावण का उल्लेख हुआ है। रावण के उदय के विषय में भिन्न-भिन्न ग्रंथों में भिन्न-भिन्न प्रकार के उल्लेख मिलते हैं। पद्मपुराण तथा श्रीमद्भागवत पुराण के अनुसार हिरण्याक्ष एवं हिरण्यकशिपु, दूसरे जन्म में रावण और कुम्भकर्ण के रूप में पैदा हुए। वाल्मीकि रामायण के अनुसार रावण पुलस्त्य मुनि का पौत्र था अर्थात् उनके पुत्र विश्रवा का पुत्र था। विश्रवा की वरवर्णिनी, राका और कैकसी नामक तीन पत्नियां थीं। वरवर्णिनी से कुबेर,

कैकसी से रावण और उसके चार भाई पैदा हुए तथा कैकसी से एक कन्या शूपर्णखा का जन्म हुआ। रावण का विवाह मय दानव की पुत्रियों से हुआ था। उनके नाम हैं मन्दोदरी और दम्यमालिनी। मन्दोदरी से उसे मेघनाद और अक्षयकुमार नामक दो पुत्र थे और दम्यमालिनी से उसके अतिकाय, त्रिशरा, नरान्तक और देवान्तक नामक चार पुत्र थे। इनमें से अक्षयकुमार, त्रिशरा और नरान्तक का वध भगवान शिव के अवतार हनुमान जी ने किया। मेघनाद और अतिकाय का वध नागराज अनन्त के अवतार लक्ष्मण जी ने किया था और देवान्तक का वध इन्द्र और अरुण के पौत्र वानर राज बालि के बलशाली पुत्र अंगद ने किया था।

बाल्यकाल में ही रावण ने चारों वेद पर अपनी कुशाग्र बुद्धी से पकड़ बना ली, उसे ज्योतिषि का इतना अच्छा ज्ञान था कि, उसकी रावण संहिता आज भी ज्योतिषी में श्रेष्ठ मानी जाती है। युवावस्था में ही रावण तपस्या करने निकल गया उसे पता था कि ब्रह्मा जी उसके परदादा हैं, इसलिये उसने पहले उनकी घोर तपस्या की और कई वर्षों की तपस्या से प्रसन्न होके ब्रह्मा जी ने उसे वरदान माँगने को कहा, तब रावण ने अजर-अमर होने का वरदान माँगा। ब्रह्मा जी ने कहा मैं अजर अमर होने का वरदान नहीं दे सकता हूँ तुम ज्ञानी हो इसलिये समझने का प्रयास करो। मैं तुम्हें वो नहीं दे सकता हूँ लेकिन बदले मैं अन्य शक्तियां देता हूँ। रावण तपस्या से शक्ति प्राप्त करके आया माता-पिता से मिला वे बहुत प्रसन्न हुए। अब थोड़ा अभिमान मन में आ गया और एक दिन, दो चार साथियों को लेके रावण अपनी युवावस्था में सहस्त्रबाहु अर्जुन के राज्य की सीमा में गया, वहाँ नर्मदा नदी के किनारे उसने देखा नदी की चौड़ाई बहुत होने के बाद भी उसमें जल बहुत कम था। रावण ने अपने साथियों से कहा ये नदी का जल इतना कम कैसे है पहले तो इसमें बहुत जल भरा करता था। तब साथियों ने आगे बढकर देखा एक बाँध नजर आया जिसमें नदी का समस्त जल रोका गया था और बांध को बाणों से बनाया था। तब रावण के साथियों ने उसको बताया कि, किसी ने अपनी अद्भुत धनुर्विद्या के प्रयोग द्वारा बाणों से बाँधकर जल को रोका है। वो सब आगे बढे उन्हें कुछ शस्त्रधारी सुरक्षा में लगे सैनिक दिखे रावण ने पूछा कौन हो और ये बांध किसने बनाया है। उन लोगों ने कहा हमारे महराज सहस्त्रबाहु अर्जुन ने वो इस समय अपनी पत्नियों के साथ विहार करने आये हैं। रावण ने कहा अच्छा तो अब मेरा कौशल देखो और एक ही बाण से उसने बांध तोड दिया। सहस्त्रबाहु की पत्नियां जो स्नान करने के लिए गई थीं बह गई काफी प्रयास करने के बाद उन्हें निकाला गया। रावण ने बांध तोडा जब इस बात की सूचना सहस्त्रबाहु को उसके सैनिकों ने दी तब इस बात पर सहस्त्रबाहु और रावण का युद्ध हो गया और रावण हार गया उसको बंदी बना लिया और जेल डाल दिया। उसके साथी भाग गये और रावण के दादा जी मुनि पुलस्त्य को बताया गया तब उन्होंने सहस्त्रबाहु अर्जुन के पास संदेश भेजा कि रावण युवक है और युवावस्था में गलती की सम्भावना हो जाती है इसलिये उसे छोड़ दो। अर्जुन ने उसे छोड़ दिया और चेतावनी दी कि दुबारा इस तरह की गलती न हो नहीं तो एक भी सर धड़ पर नहीं दिखाई देगा। रावण को बहुत ग्लानि महसूस हुई और उसने वर्षों तक पुनः ब्रह्मा जी के लिये तप किया और ब्रह्मदेव के प्रकट होने पर उसने फिर से अमर होने का वरदान माँगा। लेकिन इस बार भी उसे अमर होने का वरदान नहीं मिला लेकिन और ज्यादा मायावी शक्ति प्राप्त हुई। मायावी शक्तियां पा कर एक बार घूमते हुए वानरों के क्षेत्र में प्रवेश किया। शाम का समय था वानरों का राजा बालि उस वक्त एक वृक्ष के नीचे संध्या जप कर रहा था। रावण उसे देख कर हँसा और फिर उसे छेड़ने लगा ऐ मर्कट, ऐ बंदर बोल उसका उपहास करने लगा और युद्ध करने के लिये उकसाने लगा। रावण को अपनी मायावी शक्ति पर घमंड आ गया था उसने बालि से कहा अरे मर्कट मैंने सुना है तू बहुत शक्तिशाली है आ मुझसे युद्ध कर के देख तेरा अभिमान मैं कैसे ढीला करता हूँ। लेकिन बालि ध्यान में था इसलिये उसने इसकी बात को सुना ही नहीं। इसके बाद रावण ने उसको जोर से लात मारी और बोला पाखंडी मेरे ललकारने के बाद मेरे डर से ध्यान में बैठा है, सीधे-सीधे बोल कि मैं नहीं लड़ सकता। बालि क्रोध से ऊबल पड़ा उसने रावण को पटक-पटक कर मारा और फिर उसे अपनी पूँछ में बाँध कर लपेट लिया, पुनः संध्या वंदन समाप्त करके उसने रावण के गर्व को चूर-चूर कर दिया। छः महीने तक बालि ने उसे अपनी कैद में रखा एक दिन उसे अपने बाँए हाथ से उसको अपनी काँख में दबाकर बालि जा रहा था तभी उसके हाथ की पकड़ ढीली हो गयी और रावण भाग निकला ऐसा भागा कि दिखाई नहीं दिया।

इसके बाद वो फिर से घोर तपस्या करने निकल पड़ा और फिर से उसने अमर होने का वरदान माँगा। ब्रह्मा जी ने कहा पुत्र मेरे अधिकार मे वो वरदान नहीं है और इस बार उसने ब्रह्मा जी से प्रचंड शक्तियां और ब्रह्मास्त्र प्राप्त किया। एक दिन देवताओं से किसी बात पर नाराज हो गया और उसने स्वर्ग में अकेले ही चढ़ाई कर दी और घोर युद्ध में उसने अकेले ही सभी देवताओं को परास्त कर डाला। इंद्र, यम, वरूण अन्य सभी दिकपाल और प्रजापतियों को बंधक बना लिया अन्य सभी देवता स्वर्ग से भाग निकले, उसने स्वर्ग लोक पर अधिकार कर लिया और बाद में उसे देवताओं को लौटा दिया, लेकिन देवताओं का मान भंग हो गया वो चुपचाप हो गये। दानवों को पता चला कि उनका भांजा रावण अकेले ही स्वर्ग में सभी देवताओं को परास्त कर दिया तीनो लोकों में इस बात का पता चला और इस बात से दानव बहुत खुश हो गये उनकी वर्षों की मनोकामना पूर्ण हो गयी और दानवों ने रावण की जय जयकार की और रावण को अपना राजा बनाने की प्रार्थना की। रावण के तेज और उसके भव्य स्वरूप और नेतृत्व से मय दानव ने प्रसन्न हो के अपनी अत्यंत सुंदर और मर्यादा का पालन करने वाली पुत्री मंदोदरी का विवाह रावण के साथ किया और रावण पत्नी रूप में मंदोदरी को पा के प्रसन्न हुआ।

रावण राजा के रूप में राक्षसों द्वारा प्रतिष्ठित हो गया तो फिर उसने अपने लिये राजधानी का निर्माण करने की सोची, वो फिर से स्वर्ग गया शायद राजधानी बनाने के लिये ये ठीक रहे, सभी देवता इंद्र, यम, वरुण उसे देख भाग लिये, वो खुश हुआ लेकिन उसे स्वर्ग पसंद नहीं आया वापसी में लौटते वक्त उसे समुद्र में त्रिकूट पर्वत पर सुंदर नगर नजर आया। वो सीधे उधर गया वहाँ उसने देखा उसका ही सौतेला भाई कुबेर यक्षों के साथ रहता है उसने कुबेर को उस नगर को यक्षों सहित खाली करने को कहा। कुबेर अपने पिताजी के पास गया और कहा पिताजी रावण जबरन लंका खाली करने को कह रहा है तब उन्होंने कहा पुत्र रावण मानने वालों में नहीं है अतः तुम उसे वो स्थान दे दो। तुम उत्तर दिशा में सुरक्षित स्थान में चले जाओ वहाँ तुम्हें कोई तंग नहीं करेगा। अपने पिता के आदेशानुसार कुबेर ने हिमालय क्षेत्र में अल्कापुरी नाम से नगर का निर्माण मानसरोवर झील के पास कर लिया और यक्षों सहित लंका से धन दौलत के साथ चला गया।

इधर रावण ने त्रिकूटपर्वत पर लंका को बहुत सुंदर बनवाया। उसके ससुर मय नामक दानव ने जो मायवी विद्याओं में अत्यंत निपुण था, उसने लंका को तीनों लोकों मे सबसे सुंदर नगर बना दिया, सोने और हीरे जवाहारात, मणिया से लंका की सभी दिवारें, खंम्भे आदि को मढ़ दिया और जब इन की कमी महसूस हुई तो रावण, कुबेर से छीन कर ले आया। रावण ने सभी राक्षसों को लंका में रहने का निर्देश दिया और सभी को एक से एक सुंदर घर और महल दिये, फिर एक दिन कुबेर से पुष्पक विमान भी छीन लिया।

रावण फिर से ब्रह्मदेव की तपस्या में लग गया, उसे देख बाद में उसके भाई कुम्भकर्ण और विभीषण भी उसके साथ तपस्या में आ गये। ब्रह्मा जी फिर रावण के पास आये रावण ने कहा पितामह मुझे अमरता का वरदान चाहिये। ब्रह्मदेव ने कहा वो मेरे लिये देना सम्भव ही नहीं है लेकिन रावण नहीं माना ब्रह्मा जी चले गये। रावण पुनः तप में लगा रहा और वर्षों बाद घोर तपस्या से ब्रह्मा जी फिर रावण के पास आये उसको समझाया कि, अजर-अमरता वाला वरदान मत माँगो तुम ज्ञानी हो, संसार के नियम को फेरने की शक्ति मुझ में नहीं, मैं मर्यादा में ही काम कर सकने की शक्ति रखता हूँ, पुत्र तुम मेरी तपस्या बार-बार कर रहे हो और मुझे व्यवधान हो रहा है इसलिये जितना हो सकता है मैं ऊतना तुम्हें आज दे देता हूँ। तुम्हारी नाभि में, मैं एक अमृत कुंड प्रदान करता हूँ और जब तक यह अमृत कुंड तुम्हारी नाभी में रहेगा तब तक तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी। अगर तुम इस पर भी संतुष्ट नहीं हो और अजर-अमर होना चाहते हो, तो तुम महादेव की शरण में जाओ। रावण ने फिर ब्रह्मा जी से पूछा कि पितामह यह अमृत कुंड नाभि में कब तक रहेगा? तब ब्रह्मा जी ने कहा अग्नि बाण के अतिरिक्त इस अमृत कुंड को कोई नहीं सुखा सकता है रावण ने सोचा लगभग अमर होने जैसी बात है, क्योंकि अग्नि बाण का प्रयोग भगवान विष्णु के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं कर सकता है इसलिये उसने ब्रह्मा जी से कहा पितामह अब आप अजर अमर होने का वरदान तो नहीं दे रहे हैं इसलिये मैं इसे स्वीकार कर लेता हूँ पर आपको और भी कुछ देना होगा। ब्रह्मा जी ने कहा तुम अमर होने के अतिरिक्त अन्य जो माँगो मैं देने को तैयार हूँ तब रावण ने वरदान ऐसे माँगा कि उसको देव, दनुज, नाग, यक्ष, किन्नर, गंधर्व कोई भी युद्ध में न मार सके। ब्रह्मा जी ने तथास्तु कह दिया।

रावण अब तपस्या जनित अपनी शक्ति की लगभग चरम सीमा पर पहुँच गया था इसलिये अभिमान भी स्वाभाविक था। सभी राक्षस उसकी छत्र छाया में सुरक्षित थे उनमें से कई राक्षस जो पहले देवताओं के भय से तपस्या नहीं कर पा रहे थे, वो तपस्या करने लगे शक्ति प्राप्त करने के लिये और अन्य सभी राक्षस लंका में आनंद और एश्वर्य का भोग करने लगे। एक दिन रावण अपने अभिमान और ऐश्वर्य के बल पर अकेले ही त्रिलोक में विजय के लिये निकला और सुतल लोक में गया। वहाँ सुतल लोक में राजा बलि राजमहल में थे और रावण बडे अभिमान और गरजना के साथ उनके द्वार पर गया और द्वार पाल को बोला 'बलि को बोलो रावण युद्ध के लिये आया है।' द्वारपाल के भेष में कोई और नहीं वल्कि स्वयं नारायण थे उन्होंने बलि को वरदान दिया था, कि उसके द्वार पर पहरा वो देंगे। रावण ने जब द्वारपाल को जबरन धमकाकर बोला, तो द्वारपाल ने कहा 'हे लंकापति रावण, महाराज बलि इस वक्त पूजा में है और पूजा की समाप्ति के बाद वो तुमसे अवश्य लड़ेंगे, चिंता मत करो धैर्य रखो,

वो भगवान भक्त हैं इसलिये पहले वो उस काम को ही पूरा करंगे उसके बाद वो अपना ये सामने रखा कवच पहनने को यहाँ आएंगे तब तुम्हारा संदेश उन्हें हम यहीं तुम्हारे सामने ही दे देंगे'। रावण अभिमान में चूर था और बोला 'अच्छा इस कवच को पहनेगा वो मैं इसे अभी तोड़ देता हूँ।' रावण आगे बढ़ा और उस कवच को उठाने की कोशिश करने लगा, लेकिन वो इतना भारी था कि रावण को उठाने में पसीना आ गया। द्वारपाल ने कटाक्ष किया लंकापति रावण, हमारे महाराज बलि का कवच तक उठाने में आपके माथे पर पसीना निकल आया है मुझे संदेह हो रहा है कि तुम महाराज बलि से कैसे लड़ पाओगे कोई बात नहीं कुछ ही समय की बात है और आप धैर्य रखें। रावण डर गया और भाग निकला, वापस नहीं आया।

रावण ने सभी देवताओं, यक्ष, किन्नर, गंधर्व आदि को युद्ध में परास्त करके राक्षसों को अभय कर दिया और मानवों को वो पहले से ही सोचता था कि, वो क्या लड़ेंगे बेचारे सीधे-साधे लोग हैं इसलिये पृथ्वी के अन्य भू भागों पर उसके राक्षस अपनी चला ही रहे थे। यद्यपि शक्तिशाली राज्यों, जिनमें अयोध्या, मिथिला, कौशल जैसे अन्य राजा थे, वो बहुत उच्च कोटी के प्रतापी और सक्षम राज्य थे और कभी सीमा विस्तार के लिये युद्ध नहीं करते थे, ये राजा सन्मार्गी और नारायण भक्त थे, उनकी प्रजा भी सुखी संपन्न और उच्च कोटी की थी। महाराजा दशरथ तो इतने पराक्रमी थे कि, देवराज इंद्र ने तक उनसे युद्ध में सहायता माँगी थी। राजा जनक इतने श्रेष्ठ राजा थे कि उन्हें प्रजा के, हित के कार्यों और संत सेवा में अपनी देह की सुध तक नहीं होती थी और इसलिये उनका नाम विदेह भी पड़ गया था। एक से बढ़कर एक ऋषी, महर्षी, मुनि जिनमें परशुराम, विश्वामित्र, बामदेव जैसे लोग इन राजाओं के दरबार में आते थे और इसी वजह से इनके राज्य को देखने का साहस तीनों लोकों में स्वतः ही कोई नहीं कर सका।

रावण ने अब महादेव को ही प्रसन्न कर के रहेगा और वरदान ले के रहेगा। रावण ने भगवान भोले नाथ की तपस्या आरम्भ कर दी, वर्षों तक तपस्या की, ब्रह्मा जी से वरदान पाने के बाद सोचा अब वो अमरता का वरदान पाने के लिये महादेव को ही प्रसन्न कर के रहेगा और वरदान ले के रहेगा। वर्षों तक तपस्या की, भोले नाथ प्रकट नहीं हुये, रावण ने सोचा भोलेनाथ जल्दी प्रसन्न होने वाले महादेव हैं और मुझसे ही लगता है अप्रसन्न हैं ये सोच कर उसने और कठोर तपस्या करना शुरु कर दिया, कभी निराहार रह कर तो कभी भगवान भोलेनाथ की सुदंर स्त्रोतों से वीणा वादन कर, लेकिन प्रभु प्रकट नहीं हुए। रावण ने सोचा उसका जीवन ही बेकार है अगर वो महादेव को प्रसन्न न कर सका, महादेव जो शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं अपने भक्तों पर, और मैं ही उनको प्रसन्न न कर सका ये सोच कर आत्मग्लानि से भर गया। एक दिन वो पूजा में जब पुष्प चढ़ाने लगा तो पुष्प कम पड़ गये, तब पूजा पूर्ण करने के लिये उसने एक-एक कर अपना मस्तक काट कर पुष्प की जगह चढ़ाना शुरु कर दिया। आज पुष्प की जगह महादेव को मेरे शीश अर्पण हैं। दर्द से रावण बेसुध हो गया लेकिन मुँह से हर हर महादेव कहना नहीं छोडा। अंतिम सिर से झुक कर महादेव को अंतिम प्रणाम कर जैसे ही खड़ग प्रहार किया अपनी गर्दन पर महादेव ने प्रकट हो उसका हाथ पकड़ लिया, बोले रावण मुझे बहुत प्रसन्नता हुई, तुमने मेरे लिये अपने प्राण संकट में डाल दिये, माँगो क्या चाहिये।

रावण दर्द को सहता हुआ महादेव के चरणों में प्रणाम करता हुआ, अति विनम्र होके बोला 'हे देवाधिदेव महादेव मुझे आपके दर्शन हो गये, आप मुझ से प्रसन्न हैं मुझे अब और कुछ नहीं चाहिये, मैं माँगने की इच्छा से ही तप कर रहा था, लेकिन आप के इस सुंदर स्वरूप को देखकर ही मैं धन्य हो गया। महादेव ने कहा रावण मैं तो तुम्हारे संकल्प से ही वरदान देने के लिए आया हूँ अतः ऐसे तो जा ही नहीं सकता हूँ। तुम निःसंकोच होके माँगो, तुम्हें जो चाहिये तुम माँग लो। रावण ने कहा 'हे महादेव, हे देवाधिदेव यदि आप देना ही चाहते हैं, तो मुझे अटूट भक्ति दे दीजिये और मैं हमेशा आपके 'नमः शिवाय' रूपी मंत्र का जप करता रहूँ। महादेव उसकी बात सुन अत्यंत प्रसन्न हुये, जिसका लक्ष था अमरता प्राप्त करना और वो प्रभु भक्ति माँग रहा है इससे बड़ा ज्ञानी और कौन हो सकता है। तब महादेव ने उसे अपनी भक्ति प्रदान की और वरदान दिया कि, तुम्हारे शीश पुनः आ जाएंगे इसके अलावा जब भी कोई अंग कट जाएगा उस के स्थान पर पुनः नया अंग स्वतः ही उग आएगा। महादेव जानते थे कि रावण को बालि और अन्य लोगों से युद्ध में हार जाने की ग्लानि मन में है कि वो ऊतना शक्तिशाली नहीं है इसलिये महादेव ने भक्ति के अतिरिक्त उसे बहुत अपार बल दे दिया और साथ में पाशुपति नामक अस्त्र दिया। महादेव से बल पाकर जब वह जैसे ही अपने स्थान से ऊठा और वापस चलने के लिये कदम आगे रखा तो तो पृथ्वी डगमगा गई और रावण बहुत आनंदित हो गया और पुनः महादेव को मन में प्रणाम कर वो लौट के लंका में आ गया। महादेव का वह प्रिय भक्त बन गया, लंका से प्रतिदिन पुष्पक विमान से कैलाश जाता था और वहाँ भगवान महादेव की पूजा और अराधना करता था। रावण ने तीनों लोकों को अपनी गति से चलाने वाले नौ ग्रहों को जब अपने अधीन कर लिया, और दिगपालों से उसने अपने लंका के मार्गों मे जल छिड़काव के काम में लगा दिया तब उसे एक तरह से त्रिलोक विजेता माना गया, क्योंकि त्रिलोक का संचालन करने वाले सभी देवता, नौ ग्रह उसके अधीन थे और अब उसे भी पराजित करने वाला त्रिलोक में कोई नहीं था।

एक बार नारद जी फिर से लंका आये, रावण ने उनकी बहुत अच्छी सेवा की, नारद जी ने रावण को कहा 'सुना है महादेव से बल पाया है।' रावण ने कहा 'हाँ आपकी बात सही है।' नारद ने कहा 'कितना बल पाया है।' रावण ने कहा 'यह तो नहीं पता परंतु अगर मैं चाहूँ तो पृथ्वी को हिला-डुला सकता हूँ। नारद ने कहा तब तो आपको उस बल की परीक्षा भी लेनी चाहिये क्योंकि व्यक्ति को अपने बल का पता तो होना ही चाहिये। रावण को नारद की बात ठीक लगी और सोच के बोला महर्षि अगर मैं महादेव को कैलाश पर्वत सहित ऊठा के लंका में ही ले आता हूँ ये कैसा रहेगा? इससे ही मुझे पता चला जायेगा कि मेरे अंदर कितना बल है। नारद जी ने कहा विचार बुरा तो नहीं है और उसके बाद चले गये। रावण ने भक्ति और शक्ति के बल पर कैलाश समेत महादेव को लंका में ले जाने का प्रयास किया। जैसे ही उसने कैलाश पर्वत को अपने हाथों में ऊठाया तो देवि सती फिसलने लगी, वो जोर से बोली ठहरो-ठहरो! इसके उन्होंने महादेव से पूछा कि भगवन ये कैलाश क्यों हिल रहा है महादेव ने बताया रावण हमें लंका ले जाने की कोशिश में है। रावण ने जब महादेव समेत कैलाश पर्वत को अपने हाथों में ऊठाया तो उसे बहुत अभिमान भी आ गया कि अगर वो महादेव सहित कैलाश पर्वत को ऊठा सकता है तो अब उसके लिये कोई अन्य असम्भव भी नहीं और रावण जैसे ही एक कदम आगे रखा तो उसका संतुलन डगमगाया लेकिन इसके बाद भी वो अपनी कोशिश में लगा रहा और इतने में देवि सती एक बार फिर फिसल गई उन्हें क्रोध आ गया उन्होंने रावण को श्राप दे दिया कि 'अरे अभिमानी रावण तू आज से राक्षसों में गिना जाएगा क्योंकि तेरी प्रकृति राक्षसों की जैसी हो गई है और तू अभिमानी हो गया है।' रावण ने देवि सती के शब्दों पर फिर भी ध्यान नहीं दिया तब भगवान शिव ने अपना भार बढ़ाना शुरु किया और उस भार से रावण ने कैलाश पर्वत को धीरे से उसी जगह पर रखना शुरु किया और भार से उसका एक हाथ दब गया और वो दर्द से चिल्लाया उसके चिल्लाने की आवाज स्वर्ग तक सुनाई दी और वो कुछ देर तक मूर्छित हो गया और फिर होश आने पर उसने भगवान महादेव की सुंदर स्तुती की 'जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजंगतुंगमालिकां... भोलेनाथ ने स्तुति से प्रसन्न होकर उससे कहा कि रावण यद्यपि मैं नृत्य तभी करता हूँ जब क्रोध में होता हूँ, इसलिये क्रोध में किये नृत्य को तांडव नृत्य नाम से संसार जानता है। किंतु आज तुमने अपनी इस सुंदर स्रोत से और सुंदर गायन से मेरा मन प्रसन्नता पूर्वक नृत्य करने को हो गया। रावण द्वारा रचित और गाया हुआ यह स्रोत शिव तांडव स्रोत कहलाया क्योंकि भगवान शिव का नृत्य तांडव कहलाता है परन्तु वह क्रोध में होता है लेकिन इस स्रोत में भगवान प्रसन्नता पूर्वक नृत्य करते हैं। इसके उपरांत भगवान शिव ने रावण को प्रसन्न होके चंद्रहास नामक तलवार दी, जिसके हाथ में रहने पर उसे तीन लोक में कोई युद्ध में नहीं हरा सकता था। देवी सती के श्राप के बाद से ही रावण की गिनती राक्षसों में होने लगी और राक्षसों की संगति तो थी ही, इसलिये राक्षसी संगति में अभिमान, गलत कार्य और भी बढते चले गये, श्राप के पहले वो ब्राह्मण था और सात्विक तपस्या करता था। ब्रह्मदेव और महादेव की पूजा का जल लाने का कार्य भी देवताओं को दिया था। लेकिन बाद में वो सात्विक से तामसी प्रवर्तित में पड़ गया अभिमान और असुरों की संगति इन दो कारणों से रावण पतन को प्राप्त हुआ।

रामायण के अनुसार रावण के पिता विश्रवा थे तो ऋषि पुलत्स्य के पुत्र थे। रावण की माता कैकसी थी जो राक्षस कुल की थी इसलिए रावण ब्राह्मण पिता और राक्षसी माता का संतान था और रावण कई विद्याएं, वेद, पुराण, नीति, दर्शनशास्त्र, इंद्रजाल आदि में पारंगत होने के बावजूद भी उनकी प्रवृत्तियां राक्षसी थी और पूरे संसार में आतंक मचाता था। रावण का बड़ा भाई वैश्रावण था।

रावण सर्व ज्ञानी था उसे हर एक चीज का अहसास होता था क्योंकि वह तंत्र विद्या का ज्ञाता था। रावण ने सिर्फ अपनी शक्ती एवं स्वयं को सर्वश्रेष्ठ साबित करने में सीता का अपहरण अपनी मर्यादा में रह कर किया। अपनी छाया तक उस पर नही पड़ने दी। अनेक राजा महाराजाओं को पराजित करता हुआ दशग्रीव इक्ष्वाकु वंश के राजा अनरण्य के पास पहुँचा जो अयोध्या पर राज्य करते थे। उसने उन्हें भी द्वन्द युद्ध करने अथवा पराजय स्वीकार करने के लिये ललकारा। दोनों में भीषण युद्ध हुआ किन्तु ब्रह्माजी के वरदान के कारण रावण उनसे पराजित न हो सका। जब अनरण्य का शरीर बुरी तरह से क्षत-विक्षत हो गया तो रावण इक्ष्वाकु वंश का अपमान और उपहास करने लगा। इससे कुपित होकर अनरण्य ने उसे शाप दिया कि तूने अपने व्यंगपूर्ण शब्दों से इक्ष्वाकु वंश का अपमान किया है, इसलिये मैं तुझे शाप देता हूँ कि महात्मा इक्ष्वाकु के इसी वंश में दशरथ-नन्दन राम का जन्म होगा जो तेरा वध करेंगे। यह कह कर राजा स्वर्ग सिधार गये।

रावण के गुण

रावण मे कितना ही राक्षसत्व क्यों न हो, उसके गुणों विस्मृत नहीं किया जा सकता। ऐसा माना जाता हैं कि रावण शंकर भगवान का बड़ा भक्त था। वह महा तेजस्वी, प्रतापी, पराक्रमी, रूपवान तथा विद्वान था। वाल्मीकि उसके गुणों को निष्पक्षता के साथ स्वीकार करते हुये उसे चारों वेदों का विश्वविख्यात ज्ञाता और महान विद्वान बताते हैं। वे अपने रामायण में हनुमान का रावण के दरबार में प्रवेश के समय लिखते हैं

अहो रूपमहो धैर्यमहोत्सवमहो द्युतिः।
अहो राक्षसराजस्य सर्वलक्षणयुक्तता

आगे वे लिखते हैं 'रावण को देखते ही राम मुग्ध हो जाते हैं और कहते हैं कि रूप, सौन्दर्य, धैर्य, कान्ति तथा सर्वलक्षणयुक्त होने पर भी यदि इस रावण में अधर्म बलवान न होता तो यह देवलोक का भी स्वामी बन जाता।' रावण दुष्ट था और पापी था। शास्त्रों के अनुसार वह किसी भी स्त्री को स्पर्श नहीं कर सकता बगैर उसकी इच्छा के, अगर वह ऐसा करेगा तो वह जल कर भस्म हो जाएगा। इसी कारण वह सीताजी को छू तक नहीं पाया।

वाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस दोनों ही ग्रंथों में रावण को बहुत महत्त्व दिया गया है। राक्षसी माता और ऋषि पिता की सन्तान होने के कारण सदैव दो परस्पर विरोधी तत्त्व रावण के अन्तःकरण को मथते रहते हैं।

उस काल का श्रेष्ठ शिल्पी मय, जिसने स्वयं को विश्वकर्मा भी कहा, उसके दरबार में रहा। उसकाल की श्रेष्ठ पुरियों में रावण की राजधानी लंका की गणना होती थी - यथेन्द्रस्यामरावती। मय के साथ रावण ने वैवाहिक संबंध भी स्थापित किया। मय को विमान रचना का भी ज्ञान था। कुशल आयुर्वेदशास्त्री सुषेण उसके ही दरबार में था जो युद्धजन्य मूर्च्छा के उपचार में दक्ष था और भारतीय उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली सभी ओषधियों को उनके गुणधर्म तथा उपलब्धि स्थान सहित जानता था। शिशु रोग निवारण के लिए उसने पुख्ता प्रबंध किया था। स्वयं इस विषय पर ग्रंथों का प्रणयन भी किया।

श्रेष्ठ वृक्षायुर्वेद शास्त्री उसके यहां थे जो समस्त कामनाओं को पूरी करने वाली पर्यावरण की जनक वाटिकाओं का संरक्षण करते थे- सर्वकाफलैर्वृक्षैरू संकुलोद्यान भूषिता। इस कार्य पर स्वयं उसने अपने पुत्र को तैनात किया था। उसके यहां रत्न के रूप में श्रेष्ठ गुप्तचर, श्रेष्ठ परामर्शद और कुलश संगीतज्ञ भी तैनात थे। अंतपुर में सैकड़ों औरतें भी वाद्यों से स्नेह रखती थीं।

उसके यहां श्रेष्ठ सड़क प्रबंधन था और इस कार्य पर दक्ष लोग तैनात थे तथा हाथी, घोड़े, रथों के संचालन को नियमित करते थे। वह प्रथमतः भोगों, संसाधनों के संग्रह और उनके प्रबंधन पर ध्यान देता था। इसी कारण नरवाहन कुबेर को कैलास की शरण लेनी पड़ी थी। उसका पुष्पक नामक विमान रावण के अधिकार में था और इसी कारण वह वायु या आकाशमार्ग उसकी सत्ता में था- यस्य तत् पुष्पकं नाम विमानं कामगं शुभं। वीर्यावर्जितं भद्रे येन यामि विहायसं।

उसने जल प्रबंधन पर पूरा ध्यान दिया, वह जहां भी जाता, नदियों के पानी को बांधने के उपक्रम में लगा रहता था- नद्यश्च स्तिमतोदकाः, भवन्ति यत्र तत्राहं तिष्ठामि चरामि च। कैलास पर्वतोत्थान के उसके बल के प्रदर्शन का परिचायक है। भारतीय मूर्तिकला में उसका यह स्वरूप बहुत लोकप्रिय रहा है। नीतिज्ञ ऐसा कि राम ने लक्ष्मण को उसके पास नीति ग्रहण के लिए भेजा था, विष्णुधर्मोत्तरपुराण में इसके संदर्भ विद्यमान हैं।

रावण के अवगुण

वाल्मीकि रावण के अधर्मी होने को उसका मुख्य अवगुण मानते हैं। उनके रामायण में रावण के वध होने पर मन्दोदरी विलाप करते हुए कहती है, 'अनेक यज्ञों का विलोप करने वाले, धर्म व्यवस्थाओं को तोड़ने वाले, देव-असुर और मनुष्यों की कन्याओं का जहाँ तहाँ से हरण करने वाले! आज तू अपने इन पाप कर्मों के कारण ही वध को प्राप्त हुआ है।' तुलसीदास जी केवल उसके अहंकार को ही उसका मुख्य अवगुण बताते हैं। उन्होंने रावण को बाहरी तौर से राम से शत्रु भाव रखते हुये हृदय से उनका भक्त बताया है। तुलसीदास के अनुसार रावण सोचता है कि यदि स्वयं भगवान ने अवतार लिया है तो मैं जा कर उनसे हठपूर्वक वैर करूंगा और प्रभु के बाण के आघात से प्राण छोड़कर भव-बन्धन से मुक्त हो जाऊंगा।

रावण के दस सिर

रावण के दस सिर होने की चर्चा रामायण में आती है। वह कृष्णपक्ष की अमावस्या को युद्ध के लिये चला था तथा एक-एक दिन क्रमशः एक-एक सिर कटते हैं। इस तरह दसवें दिन अर्थात् शुक्लपक्ष की दशमी को रावण का वध होता है। रामचरितमानस में यह भी वर्णन आता है कि जिस सिर को राम अपने बाण से काट देते हैं पुनः उसके स्थान पर दूसरा सिर उभर आता था। विचार करने की बात है कि क्या एक अंग के कट जाने पर वहाँ पुनः नया अंग उत्पन्न हो सकता है? वस्तुतः रावण के ये सिर कृत्रिम थे - आसुरी माया से बने हुये। मारीच का चाँदी के बिन्दुओं से युक्त स्वर्ण मृग बन जाना, रावण का सीता के समक्ष राम का कटा हुआ सिर रखना आदि से सिद्ध होता है कि राक्षस मायावी थे। वे अनेक प्रकार के इन्द्रजाल जानते थे। तो रावण के दस सिर और बीस हाथों को भी कृत्रिम माना जा सकता है। लेकिन कुछ विद्वान मानते हैं कि रावण के दस सिरों की बात प्रतीकात्मक है- उसमें दस मनुष्यों की जितनी बुद्धि थी और दस आदमियों का बल था!

आदिवासी मान्यता के अनुसार वह लोग रावण को अपना पूर्वज मानते हैं और उनके कई तथ्य भी सही है क्योंकि पूरे देश में जहां सारे धर्म के लोग यहां तक कि ब्राह्मण और तमिल दशहरे के दिन रावण दहन करते हैं वही पूरे हिंदुस्तान के आदिवासी ज्यादातर गोंड उस दिन को अपने वीर राजा रावण मंडावी की शहादत का गम मनाते है वह पूजा गोंगो करते हैं। आदिवासी के इसमें दशानन मतलब राजा कहा गया है और आदिवासियों के पूर्वज वाह महापुरुष भी राजा रावण को अपना पूर्वज मानते हैं और उन्हें आदिवासी समुदाय की गोंड जनजाति के सदस्य मानते हैं और उनको सात गोत्र धारी मानते हैं और उन्हें राजा रावण मंडावी कहते हैं

श्रीलंका में बौद्ध धर्म

थेरवाद बौद्ध धर्म श्रीलंका की जनसंख्या में ७०.२ प्रतिशत है। यह श्रीलंका द्वीप तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में इस तरह के बुद्धघोष के रूप में प्रख्यात विद्वानों के उत्पादन और विशाल पाली के सिद्धांतों के संरक्षण में बौद्ध धर्म की शुरूआत के बाद बौद्ध छात्रवृत्ति और सीखने का एक केंद्र रहा है। अपने इतिहास में सिंहली राजाओं ने द्वीप के बौद्ध संस्थाओं के रखरखाव और पुनरुत्थान में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। १६ वीं शताब्दी के दौरान, बौद्ध शिक्षा और सीखने पदोन्नत पर यह एक आधुनिक बौद्ध पुनरुत्थान द्वीप में जगह ले ली है। श्रीलंका में ६,००० बौद्ध मठों (विहार) में लगभग १५,००० भिक्षु एवं भिक्षुणीयां हैं।

श्रीलंका में बौद्ध धर्म मुख्य रूप से सिंहली लोग द्वारा अनुसरण किया है, हालांकि श्रीलंका की २०१२ जनगणना में २२,२५४ एक बौद्ध आबादी का पता चला, ग्यारह भिक्षुओं सहित श्रीलंकाई तमिल आबादी के बीच, श्रीलंका के सभी श्रीलंकाई तमिलों का लगभग १ प्रतिशत के लिए प्रकट। १६८८ में श्रीलंका में सिंहली भाषी आबादी का लगभग ६३ प्रतिशत बौद्ध था। श्रीलंका का स्वतंत्रता संग्राम ब्रितानी साम्राज्य से आजाद होने तथा स्वशासन स्थापित करने के लिये लड़ा गया था। यह शान्तिपूर्ण राजनीतिक आन्दोलन था। यह आन्दोलन बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दिनों में शुरू हुआ। इसका नेतृत्व शिक्षित मध्यम वर्ग ने किया और अन्ततः ४ फरवरी १६४८ को 'डोमिनियन स्टेट' के रूप में श्री लंका को स्वतंत्रता मिल गयी। अगले चौबीस वर्षों तक श्री लंका डोमिनियन स्टेट बना रहा और ११ मई १८६१ को गणतंत्र बना।

श्रीलंका की संस्कृति

ऐसा विश्वास किया जाता है कि राजकुमार विजय और उसके ७०० अनुयायी ई. पू. ५४३ में श्रीलंका में जहाज से उतरे थे। ये लोग 'सिंहल' कहलाते थे, क्योंकि पहले पहल 'सिंहल' की उपाधि धारण करने वाले राजा सिंहबाहु से इनका निकट संबंध था। (सिंह को मारने के कारण यह राजा 'सिंहल' कहलाया)। विजय ही श्रीलंका का पहला राजा था और उसने जिस राज्य की स्थापना की वह करीब २३५८ वर्ष तक कायम रहा। बीच में एकाध बार चोल या पांड्य के राजा ने इस पर अधिकार कर लिया किंतु देर-सबेर सिंहलियों ने उन्हें देश से निकाल बाहर किया।

कृषि

सिंहलियों को धान की खेती और सिंचाई, दोनों का ज्ञान था। उनका मुख्य भोजन चावल था, जिसका उत्पादन ही वहाँ के आर्थिक तथा सामाजिक ढाँचे का निश्चयकारी सिद्धान्त था। इसके सिवा कुछ अन्य अनाज तथा दालों की भी खेती की जाती थी। इन अनाजों से बना भोजन उनका मुख्य आहार था। राजाओं तथा धनाढ्यों का भोजन, उनकी आर्थिक स्थिति के अनुसार, अधिक मूल्य का और उत्तम किस्म का होता था। समय बीतने पर, विशेषकर यूरोपीयों के आने के बाद, भोजन के संबंध में भारी परिवर्तन हो गया। अलसी, सरसों तथा गरी इत्यादि से तेल निकाला जाने लगा तथा ईख, रुई, हल्दी, अदरक, काली मिर्च, मसाले तथा फलों के वृक्ष भी बड़ी संख्या में उगाए जाने लगे। खेती के साथ-साथ पशुपालन भी किया जाने लगा और पाँच दौग्ध पदार्थों का नियमित प्रयोग किया जाने लगा। तालाब बनाने में सिंहली दक्ष थे और उनके बनाए कितने ही तालाब आज भी विद्यमान हैं। वे नहरें भी बनाते थे और उन्होंने एक बड़े भूभाग पर सिंचाई की व्यवस्था कर रखी थी।

समाज

अपने पूर्वजों की तरह सिंहली लोग अनेक भारतीय रीति-रिवाजों और संस्थाओं की स्मृति अपने साथ लेते आए होंगे और उनके सिवा समाज संबंधी भारतीय विचारधारा तथा वर्गों की ऊँच-नीच भावना भी उनके साथ चली आई होगी। कलिंग, मगध, बंगाल आदि के आर्यों से संपर्क रहने के कारण उन्हीं के समानांतर सिंहली संस्कृति के भी विकास का मार्ग प्रशस्त हो गया। इस संस्कृति का मूलाधार जातिभेद था जो समय बीतने पर अत्यन्त जटिल हो गया था। बौद्ध भिक्षुओं में जाति संबंधी नियमों तथा बंधनों का प्रचलन नहीं रह गया था। जातिभेद के आधार पर बौद्ध संघ का विभाजन अपेक्षाकृत हाल की घटना है। पिता ही परिवार का अधिपति और स्वामी होता था और माता के प्रति सर्वाधिकार सम्मान प्रदर्शित किया जाता था। महावंश में राजा अग्गबोधि अष्टम (८०१-८१२ ई.) की अनन्य मातृभक्ति का उल्लेख है। प्राचीन सिंहलियों में आज की ही तरह एक स्त्री-पुरुष विवाह की प्रथा थी। हाँ, राजाओं के अवश्य अनेक रानियाँ

तथा रखेलियाँ होती थीं किंतु उनमें से केवल दो को ही राजमहिषी का पद प्राप्त होता था। नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध आदि संस्कार उस समय भी प्रचलित थे जैसे आज हैं। सिंहलियों में प्रायः बौद्ध भिक्षुओं तथा ऊँचे वर्ग के लोगों के मृत शरीरों को जलाने की प्रथा थी किन्तु अन्य मृतकों के शव जमीन में गाड़ दिए जाते थे।

विशिष्ट समारोहों के समय कुछ नरेश कीमती पोशाक के अतिरिक्त ६४ अलंकार धारण करते थे। रानियाँ तथा राजा की अन्य पत्नियाँ सोने के कीमती आभूषण पहनती थी जिनमें हीरा, मोती आदि जड़े होते थे। गरीब स्त्रियाँ काँच की चूड़ियाँ तथा अँगूठियाँ पहनती थीं। आधुनिक समय में बहुत से सिंहलियों ने यूरोपीय वेशभूषा ग्रहण कर ली है। वहाँ के राजाओं तथा प्रजा वर्गों को जलक्रीड़ा, नृत्य, गायन, शिकार आदि विविध खेलों तथा कलाओं में अच्छा, आनन्द आता था। युद्ध में संगीत का महत्व बना रहता था। पाँच तरह के वाद्य यंत्रों, ढोलों, भेरियों, शंखों, बीनों, बाँसुरियों आदि का उनमें प्राचीन काल से प्रचलन था। स्त्रियाँ एक तरह की ढोलक बजाती थीं जिसे ष्रबानष करते थे। सिंहलियों में कठपुतलियों का नाच और नाट्यों का अभिनय होता था जिनके लिए मंच बनाए जाते थे। इनमें से कुछ आज भी विद्यमान हैं। 'असाढ़ी' पर्व के समय बहुत लंबा जुलूस निकलता था जिसमें बड़ी संख्या में हाथी भी सजाए जाते थे। आज भी ऐसा होता है। ग्रहों तता भूत-प्रेतों की बाधा दूर करने के लिए 'बलि पूजा' तथा अन्य कृत्य किए जाते थे, जैसा इस समय भी होता है।

शिक्षा

सिंहली कला भारतीय कला से विशेष रूप से प्रभावित थी। वहाँ चित्रकार, मिस्त्री, राज, बढ़ई, लोहार, कुंभकार, दरजी, जुलाहे, हाथीदाँत का काम करने वाले तथा अन्य कलाविद् होते थे। अभ्रक आदि की परतदार चट्टानों से लंबे, सुडौल टुकड़े तराश लेने की कला में प्राचीन सिंहली बड़े दक्ष होते थे। लौह प्रासाद के अवशेष जो १६०० प्रस्तर स्तम्भों पर बना था, इस तथ्य का उज्ज्वल प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। विजय और उसके अनुयायियों को पढ़ने और लिखने की कला का ज्ञान न था। महावंश में उस पत्र की चर्चा है जो विजय ने पांडु नरेश को भेजा था और उसकी भी जो उसने अपने (उसके?) भाई मुमित्त को प्रेषित किया था। ब्राह्मी लिपि में लिखे गए बहुत से शिलालेख सिंहल द्वीप में प्राप्त हुए थे जिनमें सबसे प्राचीन ई. पू. तीसरी शती के थे। इससे स्पष्ट है कि जनता की एक बड़ी संख्या उन्हें पढ़ और समझ सकती थी। शिष्य को गुरु के पास ले जाने की (उपनयन की) प्रथा भी उस समय प्रचलित थी। बारहवीं शती ई. पू. में देहातों में भ्रमणशील अध्यापक रहते थे जो बालकों को लिखना-पढ़ना सिखलाते थे। लड़कियों को शिक्षा वृद्ध जनों द्वारा दी जाती थी। राजकुमारों की शिक्षा में विशेष सावधानी बरती जाती थी, इस शिक्षा में खेलकूद की तथा शस्त्रास्त्रों की भी शिक्षा शामिल थी। आम तौर से ये विषय पढ़ाए जाते थे-सिंहली, पाली, संस्कृत, तमिल, तथा अन्य भाषाएँ, चिकित्सा विज्ञान, ज्योतिष, पशु-चिकित्सा इत्यादि। लिखने-पढ़ने की क्रिया का आरंभ षत्रिपिटकष की और सिंहली में प्राप्त उसकी टीकाओं की प्रतिलिपि करने से होता था। सिंहल के दो ऐतिहासिक ग्रंथों-दीपवंश तथा महावंश-का निर्माण चौथी तथा पाँचवीं शती ईसवी में हुआ था। बाद में त्रिपिटक की पालि टीकाओं तथा विविध विषयों की अन्य पुस्तकों को लिपिबद्ध किया गया। कुछ बहुमूल्य ग्रंथ अनधिकारिक शासक माघ द्वारा १३वीं शताब्दी में, कुछ नरेश राजसिंघे प्रथम द्वारा १६वीं शती में तथा अन्य कई डचों द्वारा १८वीं शती में नष्ट कर दिए गए।

महावंश के बहुसंख्यक चिकित्सालयों का उल्लेख होने से साबित होता है कि प्राचीन काल में सिंहल में उच्च संस्कृति विद्यमान थे। ईसा के पूर्व की चौथी शताब्दी में भी गर्भिणी स्त्रियों के लिए प्रसवशालाएँ तथा रोगियों की चिकित्सा के लिए अस्पताल मौजूद थे। राजा बुद्ध दास ने (४वीं शती ई.) सिंहलवासियों के लिए प्रत्येक गाँव में चिकित्सा भवन स्थापित किए थे और उनमें चिकित्सकों की नियुक्ति की थी। वह स्वयं कुशल चिकित्सक था और उसने चिकित्सा-संबंधी एक पुस्तक भी लिखी थी। अपंगों तथा नेत्रहीनों के लिए उसने आश्रय स्थान बनवाए थे। पुरातन काल में तथा उसके बाद भी सिंहली चिकित्सा विज्ञान का भारतीय चिकित्सा विज्ञान से निकट संबंध रहा है।

सिंहली राजाओं के समय भारत की तरह वहाँ भी अनियंत्रित राजतंत्र प्रचलित था। राजा ही राज्य का सर्वोच्च सत्ताधिकारी था। आध्यात्मिक विषयों में वह बौद्ध भिक्षुओं से सलाह लिया करता था। राज परिवार से संबंधित मामलों पर विचार होते समय ब्राह्मणों को भी मत प्रकट करने का अवसर दिया जाता था। युद्ध के समय चतुरंगिणी सेना (हाथी, घोड़े, रथ तथा पदाति) का प्रयोग किया जाता था। लड़ाई में धनुष बाण, तलवार, भाला, गदा, त्रिशूल, बरछी, तोमर, गुलेल आदि अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग किया जाता था। कभी-कभी जासूसों से भी काम लिया जाता था। कराधान द्वारा जो आमदनी होती थी, उसी से राजा का निजी खर्च, दरबार का खर्च और शासन का खर्च चलता था। अपराधियों को अपराध की गुरुता के अनुसार दंड दिया जाता था।

भारत का प्रभाव

जो सिंहलवासी पहले-पहल श्रीलंका में आकर बसे थे, वे अपने पूर्व निवास उत्तर-पश्चिम भारत से हिंदू धर्म का लोकप्रिय प्रकार लेते आए थे। बाद में कलिंग तथा बंगाल से आने वाले ब्राह्मणों ने वहाँ वैष्णव तथा शैव धर्मों का प्रचार किया। बौद्ध धर्म का प्रचार तीसरी शदी में थेरा महेंद्र ने किया। राजा द्वारा राजधर्म के रूप में स्वीकृत हो जाने पर वह वहाँ का मुख्य धर्म बन गया। बुद्ध का भिक्षा पात्र तथा कुछ अन्य अवशेष उसी शताब्दी में भारत से लाए गए और कुछ स्तूपों का निर्माण किया गया। बुद्ध गया में स्थित महान बोधिवृक्ष की एक शाखा भी उसी वर्ष थेरी संघमित्त द्वारा लाई गई जो आज भी अच्छी दशा में है। कहते हैं, यह संसार का सबसे पुराना ऐतिहासिक वृक्ष है। बुद्ध का दाँत तथा बाल का अवशेष क्रमशः चौथी तथा पाँचवीं शताब्दी में सिंहल लाए गए। सिंहलियों में इनका बड़ा आदर और सम्मान है। बौद्ध धर्म ने, जो समूचे राष्ट्र में व्याप्त है, वहाँ वालों पर अथाह मानवतापूर्ण प्रभाव डाला है। पुर्तगालियों, डचों तथा अंग्रेजों के आगमन ने सिंहली रीति-रिवाजों, धर्म, शिक्षा तथा पोशाक में बहुत परिवर्तन कर दिया है।

प्राचीन श्रीलंका की स्थापत्य कला

श्रीलंका का स्थापत्य अत्यन्त विविधतापूर्ण है। इसमें एक ओर अनुराधापुर राज्य (३७७ ईसापूर्व दृ १०१७) की स्थापत्य शैली है तो दूसरी तरफ कैंडी राज्य (१४६९-१८१५) की स्थापत्य शैली। सिंहली स्थापत्य पर उत्तर भारत की स्थापत्य कला का भी प्रभाव दिखता है। श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रवेश ईसापूर्व तीसरी शताब्दी में हुआ था और यहाँ के स्थापत्य पर बौद्ध धर्म का उल्लेखनीय प्रभाव है। श्रीलंका का प्राचीन स्थापत्य मुख्यतः धार्मिक स्थापत्य था। बौद्ध मठों की १४ से अधिक शैलियाँ देखने को मिलतीं हैं। जेतवनरमय तथा रुवानवेलिसय के स्तूप उल्लेखनीय भवन हैं। सिगिरिया का राजमहल प्राचीन स्थापत्य का श्रेष्ठ उदाहरण है। इसी प्रकार, यपहुआ का दुर्ग तथा दूथ का मंदिर भी अपने वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध हैं।

मठों का निर्माण मंजुश्री वास्तुविद्या शास्त्र के अनुसार हुआ है। यह ग्रन्थ संस्कृत भाषा में तथा सिंहल लिपि में रचित है। इसमें विभिन्न प्रकार की संरचनाओं की रूपरेखा दी गयी है।

साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें

सर्च करें : ओपन डोर न्यूज

Subscribe

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

ओपन डोर न्यूज यूट्यूब चैनल हेतु आवश्यकता है प्रतिनिधियों की

भगवान शिव का महान चरित्र

प्रत्येक वर्ष फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को महाशिवरात्रि का त्योहार मनाया जाता है। शिव को एक ओर प्रलय का कारक माना जाता है, जबकि दूसरी ओर उन्हें भोला भी कहा जाता है। बेल और भांग के प्रसाद से प्रसन्न होने वाले भगवान शिव प्रकृति प्रेमी ही जान पड़ते हैं। जब शिव और पार्वती का विवाह हुआ तब वह मुनि और असुरों के साथ बारात लेकर गए थे, जिससे शिव अच्छे और बुरे दोनों ही तरह के लोगों को समान समझते प्रतीत होते हैं। बेल और भांग से प्रसन्न होने वाले शिव संदेश देते हैं कि उन्हें भी साथ लेकर चलो जिनका सभ्य समाज कोई महत्व नहीं समझता। अर्थात् शिव सबका कल्याण करने वाले हैं।

शिव को सबसे अधिक क्रोधी कहा जाता है किन्तु यह सत्य नहीं है। बेलपत्र, आक, धतूरे के पुष्प आदि से प्रसन्न हो जाने वाले शिव भला क्रोधी कैसे हो सकते हैं। हाँ, चूंकि शिव अनुशासन प्रिय हैं तो वह दूसरों से भी अनुशासन चाहते हैं। प्रकृति प्रेमी होने के कारण शिव अनुशासन की महत्ता को सर्वाधिक जानते हैं। इसलिये जो लोग अनुशासित नहीं हैं, शिव उन्हीं के प्रति क्रोध का प्रदर्शन करते हैं। यही कारण है कि शिव की आराधना करने वाले उन्हें प्रसन्न करने के लिए भांग और धतूरा चढ़ाते हैं। इस दिन मिट्टी के बर्तन में पानी भरकर, ऊपर से बेलपत्र, आक धतूरे के पुष्प, चावल आदि डालकर 'शिवलिंग' पर चढ़ाया जाता है। वास्तव में शिव भोले हैं। आप भी शिव के सन्देश को अपनाएं आपका यह प्रयास भगवान शिव प्रसन्न कर देगा। शिव का अर्थ ही है कल्याण।

शिव को संहारक, महेश, भोलेनाथ, रुद्र अनेकों नाम से पुकारा जाता है। ब्रह्माजी सृष्टि के निर्माता हैं तो विष्णुजी पालन-पोषण करने वाले हैं। शिव भगवान संहार करने का कार्य करते हैं, इस कारण उन्हें संहारक भी कहा जाता है। भगवान शिव देवताओं के भी देव हैं, इसीलिए उन्हें महेश कहा गया है। भगवान शिव अपने भक्तों की जरा सी भक्ति से ही प्रसन्न हो जाने के कारण भोलेनाथ कहलाने लगे। भगवान शिव के रौद्र रुप के कारण उन्हें रुद्र के नाम से भी पुकारा जाने लगा। भगवान शिव के रुद्र नाम का सबसे पहले उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। भोलेनाथ व्यक्ति की चेतना के अन्तर्यामी हैं। भोलेनाथ की अर्धांगिनी का नाम पार्वती है। इन्हें शक्ति भी कहा गया है। इनके पुत्रों का नाम कार्तिकेय तथा गणेश पुत्री अशोक सुन्दरी है।

अब दूसरी तरह से बात करें। भगवान शिव को संहारक कहा जाता है, जबकि भगवान विष्णु को रक्षक और प्रजापति ब्रह्मा को सृष्टि का रचियता। किन्तु भगवान शिव के चरित्र का अध्ययन करने के बाद ज्ञात होता है कि भगवान शिव संहारक नहीं हैं। वह तो अपनी सृष्टि से अथाह प्रेम करने वाले विशाल सागर हैं। भगवान शिव तो स्वयं विष पीकर दूसरों को अमृत देते हैं। स्वयं जंगल में रहकर दूसरों को महल दे देते हैं। उन्हें कितना प्रेम देवताओं से है, उतना ही राक्षसों से भी। जितना प्रेम वह मनुष्य से करते हैं, उतना ही पशु और पक्षियों से भी। वह नारी से भी उतना ही प्रेम करते हैं जितना कि स्वयं से परन्तु उनमें आसक्ति कहीं नहीं है। वह न्यायप्रिय और कठोर अनुशासन में जीने वाले हैं। वह भूत और भविष्य को वर्तमान के आगे झुठलाते नहीं। वह समाज निर्माण करते हैं, सृष्टि को बचाते हैं और जब आवश्यक हो जाता है तो क्रोध भी करते हैं। शिव सत्य हैं, व्यवहारिक हैं और कठिनाईयों को जानकर गले लगाना और फिर उनसे छुटकारा पाना भगवान शिव के चरित्र में ही सम्भव है।

महाशिवरात्रि का महत्व

शिवपुराण में वर्णित है कि शिवजी के निराकार स्वरूप का प्रतीक 'लिंग' इसी पावन तिथि की महानिशा में प्रकट होकर सर्वप्रथम ब्रह्मा और विष्णु के द्वारा पूजित हुआ था. इसी कारण यह तिथि 'शिवरात्रि' के नाम से विख्यात हो गई। यह दिन माता पार्वती और शिवजी के विवाह की तिथि के रूप में भी पूजा जाता है। माना जाता है जो भक्त शिवरात्रि को दिन-रात निराहार एवं जितेंद्रिय होकर अपनी पूर्ण शक्ति व सामर्थ्य द्वारा निश्छल भाव से शिवजी की यथोचित पूजा करता है, वह वर्ष पर्यंत शिव-पूजन करने का संपूर्ण फल मात्र शिवरात्रि को तत्काल प्राप्त कर लेता है।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का शिव ध्यानस्थ स्वरुप हैं । सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सिर्फ शिव ही व्याप्त हैं । यह ब्रह्माण्ड के प्रत्येक अणु में व्याप्त हैं। इनका कोई आकार या रूप नहीं हैं परन्तु यह सभी आकार या रूप में मौजूद हैं और करुणा से परिपूर्ण हैं। लिंग का अर्थ चिन्ह होता हैं और इस तरह इसका प्रयोग स्त्रीलिंग और पुल्लिंग के रूप में होने लगा। सम्पूर्ण चेतना की पहचान लिंग के रूप में होती है। तमिल भाषा में एक कहावत हैं "अंबे शिवन, शिवन अंबे" जिसका अर्थ है शिव प्रेम हैं और प्रेम ही शिव है,सम्पूर्ण सृष्टि की आत्मा को ईश या शिव कहते हैं ।

श्रद्धालु इस दिन रजस और तमस को संतुलन में लाने के लिए और सत्व (वह मौलिक गुण जिससे कृत्य सफल होते हैं) में बढ़ोत्तरी करने के लिए उपवास करते हैं । ओ२म नमः शिवाय मंत्रोचारण की गूँज निरंतर होती रहती हैं। मंत्र उच्चारण वातावरण, मन और शरीर में पंच महाभूतों का संतुलन बनाता है। संसार जिस भोलेभाव और बुद्धिमत्ता की शुभ लय से चलता है वह शिव है। वे उर्जा के स्थिर और अनंत स्त्रोत्र हैं, वे स्वयं की अनंत अवस्था हैं, शिव सृष्टि के हर कण में समाएं हैं।

यूँ तो शिवरात्रि प्रतिमाह आती है। परंतु फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को ही महाशिवरात्रि कहा गया है। ज्योतिषीय गणना के अनुसार सूर्य देव भी इस समय तक उत्तरायण में आ चुके होते हैं तथा ऋतु परिवर्तन का यह समय अत्यन्त शुभ होता है। ऋतु परिवर्तन की तरह आप भी अपने को परिवर्तन के लिये तैयार कर लीजिए। महाशिवरात्रि पर सरल उपाय करने से ही इच्छित सुख की प्राप्ति हो जायेगी।

संक्षेप में यही कहूँगा- शिव सम्पूर्ण हैं, उनके चरित्र में सृष्टि या सभ्यता के महान सूत्र छिपे हैं। शिव को आदर्श मानकर और उनके दर्शन को आत्मसात करने वाला कोई भी व्यक्ति न तो दुःखी हो सकता है और न ही असुन्दर। शिव स्वयं सत्य भी हैं और सुन्दर भी। इसीलिये तो कहा जाता है- सत्यं शिवं सुन्दरम!

विनम्र निवेदन करूंगा कि अल्पज्ञानी हूँ, प्रस्तुत पुस्तक को जहां से जो जानकारी मिली ले ली गयी, त्रुटियों के लिये खेद प्रकट करता हूँ और प्रस्तुत पुस्तक में जाने व अनजाने जो भी व्यक्ति व संस्था सहयोगी बनी उन सभी का धन्यवाद व्यक्त करता हूँ।

ओ२म नमः शिवाय

दिसंबर 2022-फरवरी 2023

प्रो. ऋषभ देव शर्मा विशेषांक

लेख भेजें-

shodhadarsh2018@gmail.com

भोलेनाथ का प्रिय महीना है : सावन

हिंदू धर्म के अनुसार सावन का महीना पवित्र और शुभ माना गया है। सावन १४ जुलाई से आरंभ हो रहा है, जो १२ अगस्त तक चलेगा। ज्यातिषशास्त्रियों के अनुसार इस बार सावन में शनि अपनी खुद की राशि में वक्री रहेगा। जबकि गुरु २६ जुलाई से अपनी ही राशि मीन में वक्री हो जाएगा। इन दोनों का अपनी-अपनी राशि में वक्री होना खास योग बनाता है। माना जाता है कि सावन माह में भगवान आशुतोष के साथ सूर्य, चंद्र, शनि और गुरु के लिए विशेष पूजा करने से सभी ग्रहों के दोष दूर हो सकते हैं। सूर्य २० जुलाई को पुष्य नक्षत्र में प्रवेश कर रहा है जिससे अच्छी बारिश के योग बनते नजर आ रहे हैं। इस महीने की अंतिम तिथि पूर्णिमा पर श्रावण नक्षत्र रहता है। तिथि के अनुसार २ अगस्त को नाग पंचमी और ११ अगस्त को रक्षा बंधन मनाया जाएगा।

सावन का पहला सोमवार १८ जुलाई को रहेगा और अंतिम सोमवार ८ अगस्त को होगा। कुल ४ सोमवार इस बार सावन में रहेंगे। सावन में मंत्र जप का बहुत महत्व है। 'ओम नमः शिवाय' मंत्र का जप करने से सभी तरह के दुख-दर्द दूर हो जाते हैं। शिव भगवान को यदि प्रसन्न करना है तो सावन माह में पूरे विधि विधान के साथ उनकी पूजा करनी चाहिए। कहा जाता है कि सावन मास भगवान शिव का सबसे प्रिय माह है। इस दौरान यदि कोई भक्त आस्था के साथ भोलेनाथ की आराधना करता है तो उसकी सभी मनोकामना पूरी होती हैं।

मान्यता है कि राजा दक्ष के यज्ञ में आत्मदाह करने के बाद माता सती का दूसरा जन्म माता पार्वती के रूप में हुआ था। माता पार्वती ने शिवजी को पति रूप में पाने के लिए कठोर तपस्या की थी और सावन माह में शिवजी ने माता पार्वती से विवाह किया था, इसलिए उन्हें यह माह प्रिय है। किसी भी शुभ काम की शुरुआत पंचदेवों की पूजा के साथ की जाती है। पंचदेवों में शिव, विष्णु, गणेश, दुर्गा और सूर्य शामिल हैं। ऐसी मान्यता है कि आकाश तत्व के स्वामी विष्णु जी, अग्नि तत्व की स्वामी देवी दुर्गा, वायु तत्व के स्वामी सूर्य देव, पृथ्वी तत्व के स्वामी शिव जी और जल तत्व के स्वामी गणेश जी हैं। पंच तत्व अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी और जल से मिलकर ही हमारा शरीर बना होता है। इसी वजह से पंचदेवों का महत्व काफी अधिक माना गया है। सावन माह में प्रतिदिन सुबह जल्दी उठ जाना चाहिए और सूर्य को अर्घ्य अर्पित करना चाहिए। सावन में अधिकतर जगहों पर बारिश की वजह से सूर्य के दर्शन नहीं हो पाते हैं, ऐसी स्थिति सूर्य की प्रतिमा या तस्वीर के दर्शन करना चाहिए और पूर्व दिशा की ओर मुंह करके अर्घ्य अर्पित करना चाहिए। इस दौरान सूर्य के मंत्र 'ऊँ सूर्याय नमः' मंत्र का जप करना चाहिए।

यह भी माना जाता है कि जब देव और दैत्यों ने मिलकर समुद्र मंथन किया था तो इस दौरान सबसे पहले विष निकला था और इसे शिवजी ने अपने गले में धारण कर लिया था। इसके कारण भगवान शिव का नाम नीलकंठ पड़ा। विष के कारण उनके शरीर का तापमान बढ़ने लगा तो देवताओं ने उन पर शीतल जल डालकर शांत किया। तभी से शिवजी को जल अति प्रिय लगने लगा है। शिवजी के मस्तक पर सुशोभित चंद्रमा और गंगा मैया का संबंध भी सावन मास से है। कैलाश पर्वत के सभी स्थान पर बर्फ जमी रहती है और उसके पास मानसरोवर भी स्थित है। धार्मिक मान्यता है कि भगवान शिव सावन मास में ही धरती पर अवतरित हुए थे। उसके बाद जब ससुराल गए तो उनका खूब धूमधाम से स्वागत किया गया। इस कारण ऐसा माना जाता है कि हर वर्ष सावन माह में अपने ससुराल में आते हैं। इन्हीं कारणों के चलते भगवान शिव को सावन का महीना अत्यंत प्रिय है।

सावन सोमवार की महत्वपूर्ण तिथियां

१४ जुलाई गुरुवार- श्रावण मास का पहला दिन

१८ जुलाई सोमवार- श्रावण मास का पहला सोमवार

२५ जुलाई सोमवार- श्रावण सोमवार व्रत

०१ अगस्त सोमवार- श्रावण सोमवार व्रत

०८ अगस्त सोमवार- श्रावण सोमवार व्रत

१२ अगस्त शुक्रवार- श्रावण मास का अंतिम दिन

योग्य शिष्य की खोज करते हैं गुरु

गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट।
अन्तर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।।

श्रीकृष्ण को विश्व का श्रेष्ठतम गुरु माना जाता है। श्रेष्ठ शिष्य व श्रेष्ठ गुरु की परस्पर सनातनी खोज का ही परिणाम है कि गीता का यह श्लोक जो अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा-

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन ।
तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव ।।

अर्जुन बोले- हे जनार्दन! यदि आपको कर्म की अपेक्षा ज्ञान श्रेष्ठ मान्य है तो फिर हे केशव! मुझे भयंकर कर्म में क्यों लगाते हैं?

और यह श्लोक भी जो श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा-

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ ।
ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानां कर्मयोगेन योगिनां।।

श्रीभगवान बोले- हे निष्पाप! इस लोक में दो प्रकार की निष्ठा है। उनमें से सांख्य योगियों की निष्ठा ज्ञान योग से और योगियों की निष्ठा कर्मयोग से है। फल और आसक्ति को त्यागकर भगवदाज्ञानुसार केवल भगवदर्थ समत्व बुद्धि से कर्म करने का नाम 'निष्काम कर्मयोग' है। यही निष्काम कर्मयोग का जगतगुरु श्रीकृष्ण का गुरुमंत्र हमारे समूचे भारतीय जीवन दर्शन का आधार बना व इसके बल पर ही हम हमारे प्राचीनकाल में विश्वगुरु के स्थान पर आसीन हो पाए थे। यह वैदिक शिक्षा और गुरुओं की परंपरा ही थी कि हमारें यहाँ तक्षशिला, नालंदा जैसे कई विश्वविद्यालय बने व इनमे शिक्षा ग्रहण हेतु विश्व के प्रत्येक भाग से शिक्षार्थी आने लगे।

एक श्रेष्ठ गुरु व श्रेष्ठ शिष्य के मध्य संवाद का इससे गुरुतर उदाहरण संभवतः ब्रह्माण्ड में कोई अन्य न होगा। न भूतो न भविष्यति।

एक श्रेष्ठ गुरु एक युगांतरकारी योग्य शिष्य की खोज के माध्यम से किस प्रकार से जगत की दिशा बदल देने में सफल हो जाते हैं! इतिहास साक्षी है कि जब जब किसी गुरु ने योग्य शिष्य की खोज की है या यूँ भी कह सकते हैं कि जब जब किसी शिष्य ने अपने गुरु के गुरुत्व को सिद्ध करने हेतु अपना सर्वस्व अर्पण किया है तब तब इतिहास ने अपना मार्ग बदला है। ऋषि परशुराम और उनके शिष्य भीष्म की बड़ी ही शिक्षाप्रद कथा महाभारत में आती है। चाणक्य द्वारा चन्द्रगुप्त की खोज और चन्द्रगुप्त को गढ़ने की प्रक्रिया में आप गुरु शिष्य दोनों का लक्ष्य के प्रति समर्पण और दोनों की लक्ष्यप्राप्ति के दिव्य परिणाम से इतिहास स्वयं रोमांचित हुआ था। समर्थ स्वामी रामदास द्वारा शिवाजी महाराज को गढ़ने की कथा पढ़िए। ये समर्थ रामदास जी की शिक्षा का ही परिणाम था की शिवाजी निस्पृह शासक के रूप में इतिहास में अपना नाम अमर कर गए। श्रेष्ठ शिष्य के रूप में हिन्दवी स्वराज के संस्थापक वीर शिवाजी ने अपना संपूर्ण राज्य गुरु समर्थ रामदास को गुरु दक्षिणा में समर्पित कर दिया। बाद में शिवाजी द्वारा गुरु के आदेश पर गुरु के प्रतिनिधि के रूप में राजा बने रहकर अपना कर्तव्य निभाने का भी बड़ा स्मरणीय प्रसंग इस चर्चा में आता है।

रामकृष्ण परमहंस व ठाकुर मां की शिक्षा व आशीर्वाद का ही परिणाम रहा कि विवेकानंद शिकागो की धर्मसंसद में अपने उच्चतम शिष्यत्व को सिद्ध करके व पश्चिम जगत के समक्ष वैदिक दर्शन का लोहा मनवाकर लौटे। डाक्टर हेडगेवार जी द्वारा गुरु गोलवलकर को संगठन सौंपने के पीछे की ईश्वरीय प्रेरणा का आभास कीजिए। श्रीगुरुजी ने डाक्टर हेडगेवार जी के गुरुमंत्र को ऐसा सिद्ध किया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विश्व के सर्वाधिक विशाल संगठन बनने की ओर अग्रसर हो चला। गुरूजी की अनुपम कल्पनाशक्ति व अद्भुत कर्मणाशक्ति का ही परिणाम है कि आज संघ का एक प्रचारक समूचे विश्व में भारत का डंका बजा पाने में सफल हो पाया है। संघ के दिव्य संगठन महामंत्र से भारत अपने प्राचीन विश्वगुरु के स्थान को पुनः प्राप्त करने व वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक तिहाई भाग का जनक होने की यात्रा में अग्रसर हो चला है। देश के तंत्र से अनुच्छेद ३७० जैसी विकट उलझन को सुलझाने का श्रेय श्रीगुरुजी की शिक्षा से प्रेरित एक स्वयंसेवक को ही जाता है। सात सौ वर्षों पुराने विदेशी आक्रान्ता द्वारा हमारे माथे पर गुलामी के कलंक के प्रतीक बाबरी ढाँचे को हटवाकर भव्य श्रीराम जन्मभूमि का निर्माण गुरुजी की शिष्य परंपरा के वाहक प्रचारक के रूप में ही नरेन्द्र मोदी कर पाए हैं। महंत अवैद्यनाथ जी द्वारा युवा क्षत्रिय योगी आदित्यनाथ जी को गोरखपुर पीठ सौंपने का उदाहरण भी है। उत्तर प्रदेश को एक अपराध प्रदेश से संस्कार प्रदेश बनाने का कार्य योगी जी अपने गुरु से मिली शिक्षा के प्रति सतत पूज्य भाव धारने के कारण ही कर पाएं हैं। गुरु शिष्य की कथाओं के मध्य ऋषि द्रोणाचार्य व एकलव्य की कथा में छुपा गुरु की भविष्य दृष्टि व शिष्य के समर्पण भाव का उल्लेख भी परम आवश्यक है। एकलव्य का उल्लेख आने पर बहुधा ही यह कहा जाता है कि गुरु ने शिष्य का अंगूठा कटवा दिया। यहां अंगूठा देने का अर्थ अंगूठा काटकर देना नहीं अपितु हस्ताक्षर करके वचनबद्ध होना होता है। पहले साक्षर व्यक्ति भी अंगूठा लगाकर ही वचनपत्र लिखा करता था। कतिपय प्रपंचियों ने अंगूठा लगाकर वचनबद्ध होने की कथा को गुरु द्रोणाचार्य द्वारा एकलव्य का अंगूठा काट लेने के रूप में दुष्प्रचारित किया। गुरु द्वारा योग्य शिष्य की खोज की कई कई ज्ञात अज्ञात कथाएँ हैं जिनसे युग परिवर्तन संभव हुआ है।

जगतप्रसिद्द सनातनी वीर गुरु गोविंदसिंग द्वारा अपनी सेना को गुरु की वाणी या गुरुग्रंथ साहिब को ही गुरु मानने का आदेश देना इस संदर्भ में एक पठनीय पाठ है। सिक्ख गुरुओं की परंपरा के एक से बढ़कर एक उद्भट, प्रकांड व वीर शिरोमणि शिष्यों का अवतरित होना भला कौन भूल सकता है? इस गुरु शिष्य परंपरा के शिष्यों की प्रत्येक पीढ़ी ने विदेशी मुस्लिम शासको के अत्याचारों से हिंदू समाज की रक्षा में अपने प्राणों की आहुति देने की एक अंतहीन कथा लिख डाली। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आद्य सरसंघचालक परम पूजनीय डाक्टर केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा स्वयंसेवकों को भगवा ध्वज को गुरु मानने का परामर्श देना गुरु शिष्य परंपरा व श्रेष्ठ गुरु की खोज की चर्चा में एक अनुकरणीय प्रसंग है। वस्तुतः हेडगेवार जी का यह कहना कि व्यक्ति में दोष आ सकता है किंतु तत्व में नहीं अतः तत्व को ही गुरु मानना‌य यही गुरु शिष्य परंपरा का मूलतत्व है।

कहानी

टुकड़े-टुकड़े खुशियाँ

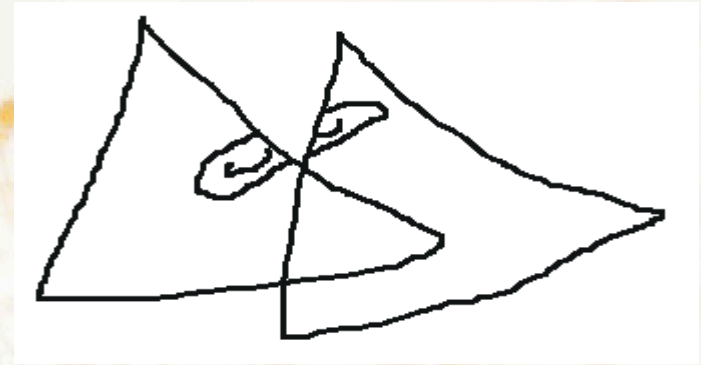

अमन कुमार 'त्यागी'

आज एक ऐसे व्यक्ति की कहानी कहता हूँ जिसके पास धन का अभाव था मगर उसने अपने आपको कभी ग़रीब नहीं माना। उसकी पत्नी बीमार थी, बेटी बीमार थी, बेटा बीमार था यहाँ तक कि वह स्वयं इतना बीमार था कि दुनिया की किसी भी बात में उसका मन नहीं लगता था। प्रोपर ईलाज नहीं हो पा रहा था परंतु वह बीमारियों और धनाभाव के कारण मरना भी नहीं चाहता था। कुछ भी कहिए, इस सब के बावजूद वह दुखी नहीं था। जहाँ कहीं से उसे एक टुकड़ा खुशी मिलती, वह उसी को ढंग से जी लेता।

सलाह देना या टिप्पणी करना बहुत ही आसान काम है। लेकिन क्या कभी परेशानी में फंसा व्यक्ति अपने को परेशानियों से बाहर निकालने का कोई प्रयास नहीं करता? करता है। उसने भी प्रयास किया अपने आपको मुसीबतों से बाहर निकालने के लिए?उसने एक बार नहीं बल्कि अनेक बार दूसरे लोगों के साथ मिलकर काम किया, काम हुआ मगर पैसे उसके हाथ पर नहीं आए। जानते हैं क्यों? क्योंकि 'जब किसी व्यक्ति पर कोई परेशानी आती है तो उसके सबसे निकटस्थ लोग उसे ठगना प्रारंभ कर देते हैं। दो-चार बार धोखा खाने के बाद उसने अपने लोगों से दूरी बना ली। कम से कम में गुज़ारा प्रारंभ कर दिया। यूँ समझो कि उसने अपनी सिकुड़ चुकी चादर में अपने पाँवों को भी सिकोड़ लिया। किंतु यह भी तो समस्या का कोई समाधान नहीं था।

उसने अपने आप से पूछा -'आखिर कब तक यूँ ही सिकुड़त चले जाओगे?' अंतर्मन से जवाब मिला, 'जब तक सिकुड़ने का स्थान इतना छोटा न हो जाए कि उससे मुकाबिला किया जा सके।'

उसकी यह बात रहस्यमई सी प्रतीत हो सकती है। कभी-कभी तो वह स्वयं भी अपने हालात और अपने इरादों को समझ नहीं पाता था। वह कोई भी नुकसान उठाने के लिए तैयार था, यहाँ तक कि किसी की जान भी चली जाए तो जाए। परंतु क्या वह क्रूर था?क्या वह निकृष्ट था?क्या वह निराश था?कई सवाल उसके व्यक्तित्व पर उछाले जा सकते थे। लेकिन ऐसा कतई नहीं था। वह अपनी गरीबी छिपाने के लिए वह सारे काम करता था जिससे लोग उसे हटी और घमंडी भी समझने लगे थे। वह देना जानता था, और प्रयासरत था कि कभी किसी से मांगना न पड़े।

वह आशांवित था - कभी तो सूरज निकलेगा, कभी तो धुंध छटेगी, कभी तो वह दिल से दिवाली मनाएगा और कभी तो वह मन से होली खेलेगा।

वह मंदिर नहीं जाता था मगर ईश्वर में उसकी पूरी आस्था थी। वह प्रयास करता कि उसकी वजह से किसी का दिल न दुखे। वह किसी से कोई कंपटीशन नहीं रखता था मगर फिर भी कोई तो था जो अभावों के बावजूद उसकी टुकड़े-टुकड़े खुशियों से जलता था। उसे नीचा दिखाने और उसको नुकसान पहुँचाने का कोई भी मौका हाथ से नहीं जाने देता था। मीठी-मीठी बातों में घुले हुए ज़हर को वह भी पहचानता था मगर प्रतिरोध नहीं करता था, उलटे ऐसी चालाकियों को हंस कर टाल जाता था। जानते हैं क्यों?

क्योंकि उसका नाम कमल था। वह खिल जाना चाहता था, मगर कीचड़ उसे खिलने से रोक रही थी। उसके पास न तो कोई पेस्टीसाइड था और न ही वह प्रयोग करना चाहता था। कीचड़ में होने के कारण उसकी मजाक बनाई जा रही थी, मजाक बनाने वालों में कीचड़ ही सबसे आगे थी। वह सोचता था - जब पहली बार कीचड़ में कमल खिला होगा, तब उसे कितनी मशक्कत करनी पड़ी होगी। कीचड़ ने भला उसे क्यों खिलने दिया होगा?लेकिन क्या उसका संघर्ष काम नहीं आया?

वह खिला और उसने दुनिया को दिखा दिया कि कोई भी गंदगी किसी अच्छी चीज को प्रकाश में आने से रोक नहीं सकती। कमल खिला और आसमान की ओर मुँह करके ठंडी सांस ली। यह भी कीचड़ को बुरा लगा, लगना ही था। कीचड़ का मानना था कि वह खिला तो उसके आगोश में है जबकि धन्यवाद दे रहा है खुले आसमान को। कमल उसका नाम ही नहीं था बल्कि वह कीचड़ में खिलने वाले कमल को अपना आदर्श भी मानता था। वह जानता है कि कमल कभी कीचड़ पर दोषारोपण नहीं करता बल्कि शान से पंकज भी कहलाता है। मानो कीचड़ में खिलना उसके लिए गर्व की बात रही है। यह सच भी है। गर्व उसी को होता है जिसने विपरीत परिस्थितियों पर विजय पाई हो, छल-प्रपंच से विजय पाने वाले गर्व नहीं करते, घमंड करते हैं। अहम पाल लेते हैं और यह गर्व उनके अहम से टकराना भी नहीं चाहता है। जब भी टकराया है घमंड ही किसी के गर्व से टकराया है। वही कमल के साथ भी हो रहा था। कमल पर कीचड़ का कितना दबाव होता है?यह वही जान सकता है, जिसने कभी दबाव से निकलना सीखा हो।

कमल को किसी ने बताया - सरकारी योजना है जिसके अंतर्गत सरकारी तौर पर ईलाज कराया जा सकता है, पैसे भी नहीं लगेंगे।

उसने पता किया, पता चला - गरीबों के लिए ईलाज की व्यवस्था है। जानकर कमल को प्रसन्नता हुई। उसने जानकर शांति की सांस ली और अनायास ही उसके मुँह से निकला, 'चलो अच्छा है अब कोई ग़रीब बीमारी में धनाभाव से नहीं मरेगा।'

जानकारी जुटाकर वह घर आया और काफी विचार-मंथन के बाद अपनी बेटी को एक प्राईवेट अस्पताल में लेकर गया। ईलाज प्रारंभ करा दिया गया। अब जिसे देखो वही उसे सवालिया निगाहों से देखता था। कमल ने किसी की परवाह नहीं की। घर में खानपान में कटौति उसके बच्चों ने सहर्ष स्वीकार कर ली। चिकित्सक की देखरेख में उसकी बेटी ठीक होने लगी तो उसके घर में एक दो टुकड़ा हंसी का भी गिरा। जिसे उसने भरपूर जिया। बेटी के बाद पत्नी का ईलाज प्रारंभ करा दिया। हैरानी की बात यह भी हो सकती है कि बीमार को इंतजार क्यों?सोचिए चारा था भी क्या?इंतजार नहीं करता तो क्या करता?

जब सबका ईलाज करा रहा था तब भी तो कभी किसी की दवाई आ जाती थी और कभी किसी की जबकि डॉक्टर की फीस सभी के लिए जाती थी। एक का ईलाज एक बार कराया तो डॉक्टर की फीस भी एक ही की गई। और फिर बाकी लोगों में मजबूरीवश ही सही मगर उनमें धैर्य भी तो था।

जानते हैं कि उसने सरकारी योजना में अपना इलाज क्यों नहीं करवाया?क्योंकि उसके पास गरीबी का राशन कार्ड नहीं था और वह गरीबी रेखा से नीचे भी नहीं आता था। बुरे दौर में भले ही उसे मुश्किलों का सामना करना पड़ा हो मगर वह एक ही दिन में अगर अमीरी में नहीं गिना जा सकता था तो फिर गरीबी में कैसे गिना जाता?फर्जी सर्टिफिकेट बनवाकर वह अपनी ही निगाहों में गिरना नहीं चाहता था। मतलब स्पष्ट है कि उसने कभी किसी का हक़ मारना नहीं सीखा था। वह परेशान था ग़रीब नहीं।

कमल ने अपने परिवार का टुकड़े-टुकडे ईलाज कराया और टुकड़े-टुकड़े खुशियां बटोरीं। इसे वह गृह चिकित्सा कहता था। उसे पता था कि बीमारियाँ ठीक उसी तरह आती हैं, जैसे कभी-कभी मन में अनैतिक विचार आ जाते हैं। जिसने अपने इन विचारों पर काबू पा लिया वह ठीक, नहीं तो बन गया अपराधी। उसे अपने मन और कर्म पर कंट्रोल था। वह अपने और अपने परिवार के सुनहरे भविष्य को देख रहा था। तभी तो उसने संघर्ष का लंबा रास्ता चुना।

आज वह न सिर्फ प्रसन्न है बल्कि बेहद प्रसन्न है। उसके बच्चे न सिर्फ स्वस्थ हैं बल्कि अच्छे से स्थापित भी हो गए हैं। जानते हैं यह सब कैसे संभव हुआ?

यह सब संभव हुआ अभावों के कारण। उसके पास पैसे की कमी थी इसलिए उसका खानपान बढिया रहाँ उसके पास पैसे की कमी थी, इसलिए उसने व्यवस्था बनाकर काम किया। इससे भी बढ़कर उसके व उसके परिवार के पास ग़ज़ब का धैर्य एवं समर्पण था। काम करने की इच्छा और मजबूरी दोनों थीं। बच्चों के सामने पढ़ने के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं था। बाहरी चमक से वह इसलिए बचा रहा कि उसके पास पैसा ही नहीं था। सामाजिक व संबंधियों में वह घमंडी भले ही समझा जाता रहा हो मगर उसने कभी किसी के काम को ना नहीं किया। वह जीतने के लिए कभी प्रयासरत नहीं रहा, बल्कि कर्मरत रहा जो उसके लिए आवश्यक था, हारने का ग़म उसे कभी इसलिए नहीं हुआ क्योंकि वह कभी जीता ही नहीं था। आज भी वह यही मानता है कि जो कुछ हुआ वह उसका प्राकृत जीवन है, न कोई दिखावा और न कोई छिपाव। तभी तो टुकड़े-टुकड़े खुशियाँ उसके खजाने में हैं।

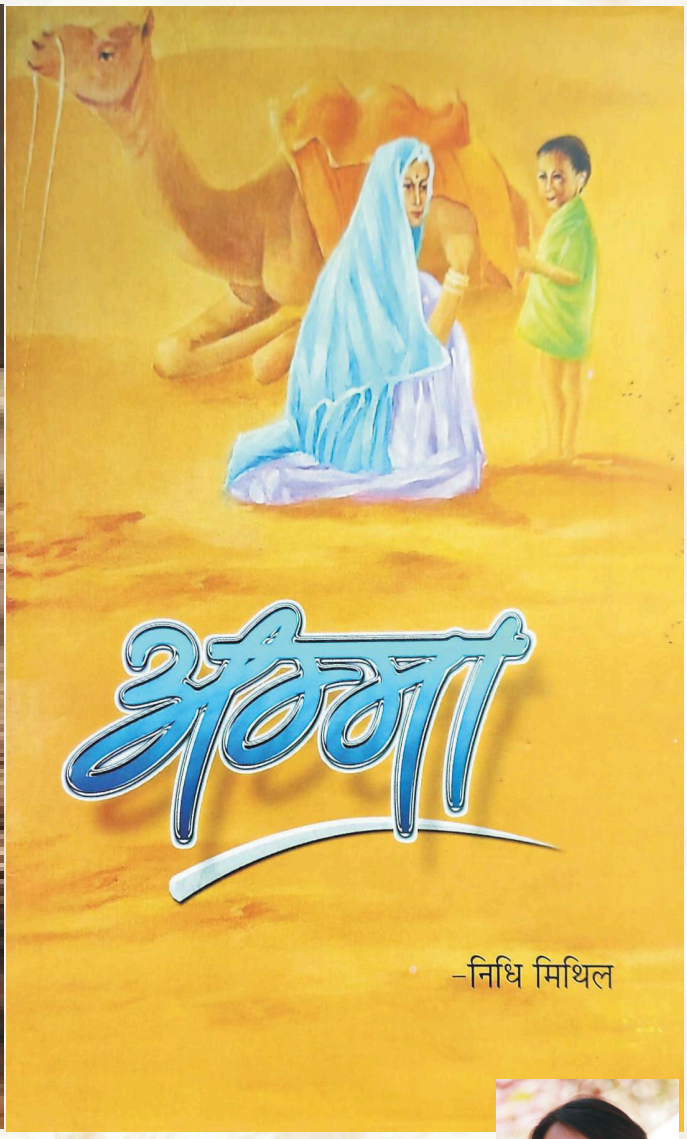

'अम्मा'

निधि मिथिल

लेखिका 'निधि मिथिल' का उपन्यास 'अम्मा' बेहद मार्मिक और सामाजिक ताने-बाने से भरपूर है। जिसे हम आम पाठक के लिए धारावाहिक रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। लीजिए उपस्थित है अम्मा का दूसरा भाग

पहले भाग से आगे.....

पाठ-४

'मैय्या, ओ मैय्या देख समीर आ गया' खुशी के स्वर में गोपाल अम्मा को आवाज लगाते हुए बोला।

जैसे ही अम्मा ने सुना, जल्दी से बाहर आ गई। अम्मा का चेहरा खुशी से खिल उठा था।

'अम्मा कैसी हो?' - पैर पड़ते हुए समीर ने पूछा।

अम्मा की ममता मानों समीर की ही राह देख रही थी। आँखों से खुशी के आँसू बह निकले।

'बस मेरे लाल, तुझे देखने के लिए ही जिंदा हूँ।'- अम्मा ने जवाब दिया।

समीर का हाथ पकड़कर अम्मा बोली-'चल, घर के भीतर' अरे गोपाल, जरा पानी तो ला समीर के लिए।'- अम्मा ने गोपाल से कहा।

'लाया मैय्या' - कहकर गोपाल पानी लेने चला गया।

'बहू कैसी है, मेरा पोता कैसा है?' - अम्मा ने पूछा।

'तू कितना दुबला हो गया है, काम ज्यादा है ना खाने पर ध्यान नहीं देता क्या?' - अम्मा ने सवालों की झड़ी लगा दी।

'अम्मा, तुझे लेने आया हूँ, तू ही चल कर देख ले।'- समीर बोला। तभी गोपाल पानी लेकर आ गया।

'देख रे गोपाल, सुन समीर मुझे लेने आया है।' - अम्मा खुशी के स्वर से बोली।

गोपाल का चेहरा खिल उठा। उसे पहली बार मैय्या को इतना खुश देखा था।

'अरे मैय्या, क्या समीर के भूखा रखोगी?इतने सवाल कर डाले, अब कुछ पेट पूजा भी करा दो।'- गोपाल बोला।

'चलों मैं तुम दोनो के लिए खाना बनाती हूँ, समीर तू मुँह-हाथ धो ले' - अम्मा उठते हुए बोली।

समीर बाहर आँगन में मुँह हाथ धोने चला गया। पीछे-पीछे हाथ में तौलिए लिए गोपाल भी चला आया।

याद है समीर हम दोनों इसी आँगन में खेलकर बड़े हुए हैं। तू तो शहर क्या गया, वहीं का होकर रह गया, क्या तुझे गाँव की याद नहीं आती है?' - गोपाल ने समीर से पूछा।

'क्या कहूँ गोपाल, एक बार शहर की जिंदगी में उलझ गए तो बस उलझते ही जाते हैं।' समीर ने जवाब दिया।

'भाभी कैसी है, उनको नहीं लाया और ना ही विक्की को।'- गोपाल ने पूछा।

'तू तो जानता है उसे गाँव के नाम से ही एलर्जी है।'- समीर बोला।
क्या है?' - गोपाल बोला।
एलर्जी है।' - समीर बोला।
' न जाने भाभी को क्या हो गया?मुझे अभी भी याद है वे दिन जब बाबूजी ने पास के गाँव में भाभी से तुम्हारी शादी तय की थी।'- गोपाल बोला।
गोपाल बीते हुए कल में न जाने कब चला गया।
'पर बाबूजी, आप मुझसे पूछे बगैर मेरी शादी की बात कैसे कर सकते हैं?बात की तो छोड़िए आपने तो मेरी शादी ही तय कर दी है।' - समीर बोला।
अरे बेटा, तू एक बार लड़की तो देख ले। वह भी चार साल शहर में रहकर पढ़ाई कर चुकी है। फिर गाँव की लड़की है, गाँव की मिट्टी से जुड़ी रहेगी।' - बाबूजी ने समीर को समझाते हुए कहा।
'ठीक है, मैं और गोपाल कल ही जाकर लड़की देख आते हैं।'- समीर बोला।
अगले दिन नहा-धोकर, नाश्ता करके समीर और गोपाल पास के गाँव के लिए रवाना हो गए।
'तूने तो देखी है ना लड़की?' समीर ने गोपाल से पूछा।
'हाँ बाबूजी के साथ मैं ही तो गया था।' - गोपाल ने जवाब दिया।
'तुझे कैसी लगी?' - समीर ने उत्सुकता से पूछा।
'क्यों बताऊँ, बाबूजी से तो ऐसे अकड़ कर बात कर रहे थे और अब पूछ रहे हो कि लड़की कैसी है?' - गोपाल बोला।
'बता ना गोपाल क्यों तंग कर रहा है?' - समीर ने गोपाल को मनाते हुए कहा।
'क्यों पेट में लड्डू फूट रहे हैं?' - गोपाल समीर को चिढ़ाते हुए बोला।
'हाँ फूट रहे हैं, अब तो बता।' - समीर ने कहा।
'क्या कहूँ दो आँखे, एक नाक, दो कान, सिर पर बाल है, हाँ बस पैर थोड़े से अलग हैं।' - गोपाल मुस्कुराते हुए बोला।
'मतलब क्या हुआ उसके पैरों को?' समीर ने झट से पूछा।
'उसने दो पायल और दो चप्पल पहनी थी।' - गोपाल जोर से हँसते हुए बोला।
'तुझे मैं ही मिला हूँ चिढ़ाने के लिए।'- समीर बोला। अब और कितनी दूर है तेरी भाभी का गाँव' - समीर ने गोपाल से पूछा।
'क्या कहा फिर से कहना भाभीकृ...अभी तक तो शादी ही नहीं करनी थी, एकदम से अब उसे मेरी भाभी भी बना दी।' - गोपाल ने कहा।
फिर समीर से बोला, 'चलो वापस चलते हैं। बाबूजी से कह देता हूँ समीर को लड़की पसंद है।'
'अरे नहीं-नहीं, वह तो मुँह से निकल गया था। बता न कितना देर है गाँव आने में।' - समीर ने फिर से पूछा।
'बस १५ मिनट में पहुँच जायेगें।'- गोपाल ने जवाब दिया।

पाठ-५

थोड़ी ही देर में सामने एक मंदिर नजर आया।
गोपाल बोला- 'बस, अब हम पहुँच गए।' समीर ने राहत की सांस ली। थोड़ी ही देर में दोनों एक घर के सामने उतरे।
'अरे सुनती हो, शोभा कहीं बाहर तो नहीं गई है।' - अंदर से आवाज आई।
समीर और गोपाल दरवाजे के पास आए। गोपाल ने कुंडी बजाई। थोड़ी देर में १८-१९ साल की एक लड़की ने दरवाजा खोला।
'कौन है आप लोगकृ?किससे मिलना है?' उसने पूछा।
'जी हमें रामभरोसेजी से मिलना है। हमें बाबूजी ने भेजा है।'- गोपाल ने जवाब दिया।
'किसके बाबूजी, कौन-से बाबूजी?' लड़की शरारती स्वर में बोली।
तभी पीछे से आवाज आई- 'अरे शोभा कौन है?'
'पता नहीं पिताजी आपको पूछ रहे हैं, इन्हें इनके बाबूजी ने भेजा है'- लड़की हँसते हुए बोली।
तभी गोपाल ने समीर को धीरे से चिमटी ली और बोला- 'पागल, यही तो वो लड़की है।'
'क्या यही है।' समीर धीरे से बोला।
'अरे बेटा, अंदर आओ, मैं ही रामभरोसे हूँ।'- तभी एक आदमी बाहर आकर बोला।
'जी नमस्ते, मुझे पहचाना आपने, मैं गोपाल, पास के गाँव से आया हूँ। उस दिन बाबूजी के साथ आया था।'- गोपाल बोला।
'नमस्ते बेटा नमस्ते, हाँ याद आया, तुम रघुनाथ जी के बेटे हो न और साथ में कौन है?' रामभरोसे जी ने पूछा।
'जी हाँ, और यह समीर है- इसकी ही तो बात की थी बाबूजी ने। कल ही शहर से आया है।' गोपाल ने जवाब दियां।
'अरे बेटे, आराम से बैठो, थक गए होंगे, लंबा सफर है, यह शोभा भी न, किसी से कुछ भी बोलती रहती है।' - रामभरोसे जी बोले।
तभी गोपाल और समीर अंदर आकर आराम से बैठ गए।
'पार्वती, ओ पार्वती, देखो तो कौन आया है! रघुनाथ जी के बेटे आए हैं।' रामभरोसे जी अपनी पत्नी को आवाज लगाते हुए बोले।
तभी शोभा पानी लेकर आ गई।
'बिटिया, ये समीर जी हैं, रघुनाथ जी के बेटे।' - रामभरोसे जी बोले।
'नमस्ते।' शोभा समीर की तरफ देखते हुए धीरे से बोली।
'अभी तो इतना बड़बड़ कर रही थी और अब क्या हो गया इसे'- समीर मन ही मन सोच रहा था।
'बेटा, हमारी शोभा भी ४-५ साल शहर में पढ़कर आई है।'- रामभरोसे जी बोले।
'जी बाबूजी ने बताया था।'- समीर ने धीमे स्वर में कहा।
थोड़ी ही देर में, पार्वती, शोभा की माँ भी बाहर आ गई। उनसे परिचय के बाद, मुँह हाथ धोकर सबने खाना खाया।
इधर-उधर की बातें हुई, ऐसा लगा मानों बहुत पुराना परिचय हो।
शाम को समीर व गोपाल उनसे विदा लेकर गाँव के लिए रवाना हो गए।
'क्यो समीर, कैसी लगी लड़की?' - गोपाल ने पूछा।
'अरे यार, अब लड़की नहीं भाभी बोल।'- समीर हँसते हुए बोला।
'तो ये बात है, लड़की पसंद आते ही हमें भूल गए।'- गोपाल बोला।
घर पहुँचते ही गोपाल ने बाबूजी को बताया कि समीर को लड़की पंसद है ?
अम्मा की तो खुशी का ठिकाना नहीं रहा। थोड़े ही दिन में धूमधाम से बाबूजी ने दोनों की शादी कर दी।
'अरे गोपाल तू कहाँ खो गया?' - समीर ने पूछ।
'कुछ नहीं गोपाल, आज बाबूजी की याद आ गई, कितने खुश थे वे तुम्हारी शादी से।'- गोपाल ने कहा।
'हाँ, मुझे भी याद है।'- समीर बोला।
'पर अपने पोते का मुँह तक नहीं देख सके, शादी के आठ महीने बाद ही तो वे हम सब को छोड़कर चले गए' - गोपाल धीरे से बोला।
तभी अम्मा ने आवाज लगाई- 'समीर, गोपाल, चलो खाना खा लो।'
'आया मैय्या'- गोपाल ने जवाब दिया।
'तेरे मुँह से मैय्या कितना प्यारा लगता है।'- समीर मुस्कुराते हुए बोला।
अंदर आए तो देखा अम्मा ने बड़ी थाली में सब्जियाँ, दाल, कढ़ी, खीर, हलवा और न जाने क्या-क्या परोसा था।
'अरे अम्मा, तुमने तो इतना सारा परोसा है, मैं इतना नहीं खाता हूँ।'-समीर बोला।
'बेटा, मेरी बड़ी इच्छा होती है कि तुझे ये खिलाऊँ, वो खिलाऊँ पर तू तो मिलता ही नहीं है। अब तो तू बड़ा अफसर हो गया है न।'- अम्मा बोली।
'पर अम्माकृ'- समीर बोला।
'पर-वर कुछ नहीं, माँ के प्यार को तू क्या जाने, बहू से पूछना।'- अम्मा बोली। समीर और गोपाल खाना खाने बैठ गए। तभी अम्मा की नजर गोपाल पर पड़ी।
'अरे कन्हैया, तू कब से एक ही रोटी खा रहा है?' - अम्मा बोली।
गोपाल ने जैसे ही मैय्या के मुँह से कन्हैया सुना, उसकी आँखों में खुषी के आँसू छलक आए। एक पल में मानो उसके सारे दुख न जाने कहाँ गुम हो गए।
गोपाल चुपचाप सिर झुकाकर बैठा रहा। अम्मा वहीं उसके पास आकर बैठ गई और बोली- 'समीर तू नहीं है तो गोपाल ही है जो अपनी मैय्या का हर पल ख्याल रखता है। न जाने किस जन्म का कर्ज उतार रहा है?'
'तेरे और समीर के सिवा है ही कौन इस दुनिया में मेरा।' - गोपाल बोला।
'चल बावरे अच्छे से खाना खा ले।' मैय्या गोपाल के सिर पर हाथ फेरते हुए बोली।
'बस मैय्या, मन दुखी है, तू तो कल मुझे छोड़कर जा रही है, फिर कल से कौन खिलायेगा मुझे?' - गोपाल धीरे से बोला।
'तू भी चल।'- अम्मा बोली।
यह सुनते ही समीर तुरंत बोला-'अम्मा यह क्या कह रही हो, घर अकेला कैसे छोड़ेंगे?किसी ने कब्जा कर लिया तो?'
गोपाल को बात समझते देर नहीं लगी।
वह बोला- 'समीर ठीक ही कह रहा है, तू जा मैय्या, जब भी मेरा जी करेगा तो मैं तुझसे मिलने आ जाऊगाँ।'
फिर दोनो ने चुपचाप खाना खाया। खाना खाकर समीर और गोपाल बाहर आ गए। अम्मा अपना खाना परोसकर खाने बैठ गई।
'अरे गोपाल, अपनी दुकान तो बंद है न कई सालों से।' - समीर ने गोपाल से पूछा।
'हाँ समीर, बाबूजी जब तक थे तब तक तो खुली थी।'- गोपाल ने जवाब दिया।
'तुम एक काम करो, कोई ग्राहक देखो और मुझे बताओं, मैं सोच रहा हूँ बंद पड़े रहने से अच्छा है कि उसे बेच दूँ।'- समीर गोपाल से बोला।
'तुमने मैय्या से बात की ना?' - गोपाल ने पूछा।
'नहीं, आज ही करूगाँ।'- समीर ने जवाब दिया।
'जाओं, तुम मैय्या से बात करो तब तक मैं जरा बाहर होकर आता हूँ।'- गोपाल बोला
'जल्दी आना वैसे ही बहुत अंधेरा हो चुका है।'- समीर बोला।
गोपाल के जाते ही समीर रसोईघर में आया। देखा, तो

अम्मा रसोईघर साफ कर रही है।
'अम्मा'- समीर ने आवाज लगाई।
'हाँ बेटा, बोल क्या बात है?' अम्मा ने पूछा।
'क्या है अम्मा, मैं सोच रहा हूँ अपनी दुकान बेच दूँ।'- समीर बोला।
'क्यो बेचनी है दुकान?' - अम्मा काम बंद कर समीर के पास आकर बोली।
'तो उसका क्या करेगें?' समीर ने पूछा।
'देख समीर, जमीनों को तो तू पहले ही बेच चुका है अब दुकान भी?' - अम्मा बोली।
'तो क्या करना है बेवजह बेकार पड़ी है।'- समीर बोला।
'किसके लिए?तू तो मेरे साथ चल ही रही है, फिर दुकान का क्या करोगी?' - समीर बोला।
'क्यों गोपाल गोपाल को कुछ नहीं दूंगी?' - अम्मा ने जवाब दिया।
'देख अम्मा, दुकान पर मेरा हक है उसका नहीं'- समीर बोला।
'बेटे का फर्ज अदा करता है गोपाल, जैसा तू वैसा ही वह भी मेरा बेटा है। तू तो यहाँ रहता नहीं, इस बूढ़ी का ख्याल वही तो रखता है।
उसका भी हक है दुकान पर, तू तो नौकरी करके पैसे कमा रहा है पर उसका क्या?' - अम्मा बोली।
अम्मा का रूख देख समीर ने प्यार से कहा- 'देख अम्मा इतने सालों से दुकान बंद है, अब क्या चलेगी, मैं गोपाल को गाँव में नई दुकान खुलवा दूगाँ।'
'ठीक है, पर तूने क्या गोपाल से बात की?' - अम्मा बोली।
'हाँ, गोपाल से बात की है और वह ग्राहक देखने वाला है।'- समीर बोला।

पाठ-६

इधर दोनों बातों में व्यस्त थे, इस बात से अंजान कि गोपाल बाहर खड़ा दोनों की बातें सुन रहा था। उसकी आँखों से आसूँ बह रहे थे। उसको खुद ही नहीं समझ रहा था कि ये आसूँ सुख के हैं या दुख के। उसको समीर की बात सुनकर ठेस पहुँची थी तो मैय्या के दिल में उसके लिए प्यार देखकर उसे अपार खुशी हो रही थी। अपने आसूँ पोछंकर वह अंदर आ गया।
'अरे गोपाल, कहाँ गया था?' - अम्मा ने पूछा।
'बस मैय्या, बाहर टहलने गया था।' गोपाल ने जवाब दिया।
'इधर आ अपनी मैय्या के पास' - अम्मा प्यार से बुलाते हुए कहा।
गोपाल अम्मा के पास गया तो अम्मा ने उसके चेहरे को अपने हाथों में ले लिया।
'तू क्या रो रहा था?' - अम्मा ने पूछा।
'हाँ मैय्या, तू मुझे पहली बार छोड़कर जो जा रही हो, अब तू ही बता क्या मुझे तेरी याद नहीं आयेगी?' - यह कहकर गोपाल अम्मा के गले से लगकर रोने लगा।
'मैं जल्दी ही आऊँगी, तू क्या सोचता है तेरी मैय्या को क्या तेरी याद नहीं आयेगी।' - अम्मा गोपाल की पीठ पर हाथ फेरते हुए बोली।
समीर वहीं चुपचाप खड़ा दोनों को देखता रहा।
अम्मा और समीर जल्दी सो गए, उधर गोपाल हरपल करवट बदल रहा था कभी मैय्या के शब्द तो कभी समीर के शब्द उसके कानों में गूंज रहे थे। आज शायद पहली बार उसे सरोज की याद आई। जाने क्यों भगवान ने मेरे साथ ऐसा अन्याय किया?पर अगले ही पल उसकी आँखों के सामने वो हर पल आया जो उसने अपनी मैय्या के साथ बिताये थे।
'नहीं-नहीं कौन कहता है कि मैं अनाथ हूँ, मेरे पास मेरी मैय्या है।'
अचानक उसकी आँखों से आसूँ बह निकले।
कुछ देर बाद वह अपने बिस्तर से उठा और अम्मा के पलंग के पास आया।
देखा तो अम्मा गहरी नींद में सो रही थी।
कुछ देर तक गोपाल अम्मा को बड़े प्यार से निहारता रहा।
अचानक उसके होठों पर इक मुस्कुराहट आयी और वह मन-ही-मन बोला- 'मेरी मैय्या दुनिया की सबसे प्यारी मैय्या है।'
और फिर वह अपने बिस्तर पर आकर लेट गया।
न जाने कब गोपाल की आँख लग गई।
अगले दिन सुबह-सुबह अम्मा ऑगन साफ कर रही थी कि मणिराम दूध लेकर आ गया।
'प्रणाम अम्मा।' - मणिराम बोला।
'प्रणाम बेटा।'- अम्मा बोली।
'देख कल से दूध केवल पाव भर गोपाल के लिए देना।'- अम्मा बोली।
'क्यों अम्मा, तुम क्या कहीं जा रही हो?' - मणिराम ने पूछा।
'हाँ बेटा, समीर आया है मुझे लेने, मैं शहर जा रही हूँ अपनी बहू व पोते के पास।'- अम्मा खुश होते हुए बोली।
'तभी तो खुश दिख रही हो।'- मणिराम बोला।
अम्मा मुस्कुरा दी।
अच्छा, अम्मा, राम-राम अपनी ख्याल रखियेगा।'- मणिराम बोला।
'राम-राम बेटा।' - अम्मा बोली। मणिराम दूध देकर चला गया।
'गोपाल, ओ गोपाल'- अम्मा आवाज लगाई।
आया मैय्या।'- गोपाल बोला।
'देख, मेरे जाने के बाद तुलसी में पानी देना मत भूलना।'- अम्मा बोली।
'हाँ मैय्या, तू चिंता मत कर।'- गोपाल बोला।
'पर चाय तो पीता जा।'- अम्मा बोली।
नहीं मैय्या मुझे देर हो जायेगी।' कहकर गोपाल चला गया।
अम्मा गोपाल को जाते देख सोचने लगीं, जरूर कुछ बात है, परेशान भी दिख रहा है।
तभी समीर आँख मलते-मलते बाहर आया- 'गुड मार्निंग अम्मा'- समीर बोला।
'अरे बेटा, राम-राम बोल'- अम्मा बोली।
अम्मा, शहर में राम-राम नहीं, गुड मार्निंग बोलते है।'- समीर बोला।
'बेटा, सुबह-सुबह भगवान का नाम लेना चाहिए, तुम्हें तो यही सिखाया था पर 'शहर जाकर तू गुट मार्निंग करने लगा।'- अम्मा बोली।
समीर हँसा- 'अम्मा गुट नहीं, गुड मार्निंग।'
'ठीक है, ठीक है। मेरी तो राम-राम भली।'- अम्मा हँसते हुए बोली।
'अम्मा चलने की तैयारी कर ली ना?- समीर ने पूछा।
'हाँ बेटा, मेरा क्या दो ही साड़ी है, सो रख ली।'- अम्मा बोली।
'गोपाल नहीं दिख रहा।'- समीर ने पूछा।
'पता नहीं कहाँ गया है?- परेशान सा दिख रहा था।'- अम्मा बोली।
'चल तू मुँह हाथ धो ले, मैं चाय चढ़ाती हूँ।'- अम्मा कहकर रसोई घर में चली गई।
समीर भी मुँह हाथ धोकर चाय पीने बैठ गया।
थोड़ी ही देर में गोपाल एक आदमी के साथ आया।
'समीर, जल्दी बाहर आ।'- गोपाल ने आवाज लगाई।
समीर बाहर आया और बोला, अरे गोपाल, कहाँ गया था सवेरे-सवेरे?' '
'इनसे मिलो, ये शेखर है। गाँव में इनके पास बहुत जमीनें हैं।'- गोपाल बोला।
'नमस्ते।'- शेखर बोला।
'नमस्ते।'- समीर ने जवाब दिया।
'शेखर, यह मेरा बड़ा भाई है, बैंक में बहुत बड़ा अफसर है।'- गोपाल गर्व से बोला।
ये दुकान खरीदना चाहते हैं।'- गोपाल बोला।
गोपाल की बात सुनकर सभी बैठ गए। काफी देर बातें होती रही फिर दुकान का सौदा तय हो गया। शेखर शाम तक पैसे देने की बात कहकर चला गया।
अम्मा, चलो अच्छा हुआ, दुकान का सौदा हो गया।'- समीर बोला।
अम्मा कुछ नहीं बोली।
'देख गोपाल, जब वह आदमी शाम तक पैसे देने की बात बोलकर गया तो हमें भी कागज वगैरह सब तैयार करके कर उसे दे देने चाहिए।'- समीर बोला।
अम्मा, तुमने पूछा नहीं कितने में सौदा तय हुआ है?- समीर बोला।
'बता।'- अम्मा बुझे स्वर में अम्मा बोली।
'तीस हजार में।'- समीर बोला।
'गोपाल इधर आ।'- अम्मा बोली।
'हाँ, मैय्या बोल।'- गोपाल ने जवाब दिया।
'तू अब शादी कर ले।'- अम्मा मुस्कुराते हुए बोली।
'इस बूढ़े से कौन शादी करेगा?' - समीर बोला।
'नहीं अम्म, मुझे नहीं करनी शादी-वादी।'- गोपाल बोला।
'अरे अम्मा, इसकी चंदा का क्या हुआ?' - समीर ने पूछा।
गोपाल समीर की बात सुनकर शांत हो गया। बहुत सालों बाद उसने फिर से चंदा का नाम सुना।
कितना प्यार करता था वह चंदा को और चंदा उसे।
चंदा की माँ बचपन में ही उसे छोड़कर चली गई थी। पिता दिनभर दारू के नशे में धुत रहता था। नशे की हालत में चंदा को मारता-पीटता था। चंदा अपने सारे दुख गोपाल से ही बाँटती थी। अम्मा को भी वह प्यार से अम्मा बोलती। जब तक अम्मा को गोपाल व चंदा के दिल की बात पता चली तब तक बहुत देर हो चुकी थी। गोपाल को अभी भी याद है।
अरे गोपाल, इधर आ।'- अम्मा ने कहा।
'मैय्या, बोला।' गोपाल बोला।
'तू क्या चंदा से शादी करेगा?' - अम्मा ने पूछा।
गोपाल कुछ नहीं बोला, केवल मुस्कुरा दिया।
'जवाब दे गोपाल, मुझे तो चंदा बहुत पंसद है।'- अम्मा बोली।
'तुझे पंसद है मैय्या तो मेरी भी हाँ है।'- शर्माते हुए गोपाल बोला।
'ठीक है तो आज ही जाकर बंसी से तुम दोनों की शादी की बात करती हूँ।'
अम्मा मुस्कुराते हुए बोली।
सुनकर गोपाल मुस्कुरा दिया।
सभी काम निपटाकर अम्मा चंदा के घर के लिए निकल गई।

शेष अगले अंक में.....

जिंदगी के अनुभवों की परतें- 'स्टेपल्ड पर्चियाँ'

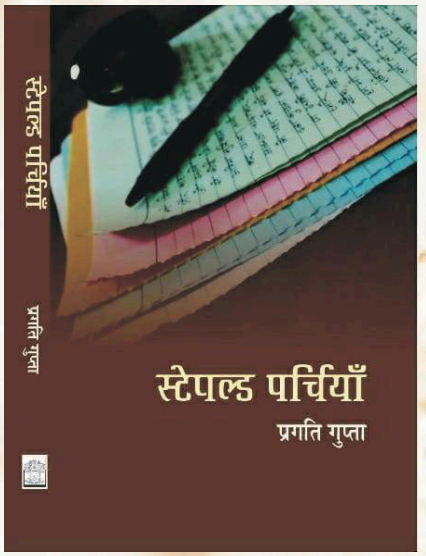

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन से प्रकाशित सुप्रसिद्ध लेखिका प्रगति गुप्ता का कहानी संग्रह 'स्टेपल्ड पर्चियाँ' जैसे बेशुमार अनुभवों का खजाना है। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन अनेकानेक अनुभवों से गुजरता है। हर अनुभव एक कहानी बनकर उसकी स्मृतियों में स्टेपल होती रहती है और ऐसी कई कहानियाँ परत दर परत स्टेपल होकर कई गड्डियाँ बन जातीं हैं। ऐसे ही भिन्न-भिन्न अनुभवों की कहानियाँ एक माला में पिरो कर लाई हैं प्रगति जी अपने ग्यारह कहानियों के कहानी संग्रह, 'स्टेपल्ड पर्चियाँ' में।

संग्रह की प्रत्येक कहानी अलग कलेवर के साथ नया तेवर लिए भिन्न अनुभव की बात करती है

स्त्री घर की धुरी होती है। परिवार के सभी सदस्यों की जिंदगी, दिनचर्या उसके चारों तरफ घूमती है। स्त्री मात्र परिवार के बारे में सोचते हुए ही अच्छी लगती है। अपने बारे में सोचते ही वह स्वार्थी लगने लगती है। ऐसी स्त्री न पति को अच्छी लगती है और न बच्चों को।

प्रगति जी ने अपनी कहानी, 'गुम होते क्रेडिट- कार्ड्स' में इसी समस्या को उठाया है। पति-पत्नी दोनों डॉक्टर हैं। पति की डॉक्टरी एकदम से सही जम नहीं पाती है लेकिन महिला चिकित्सक पत्नी अपने प्रोफेशन में एकदम सफल हो जाती है। घर में पैसे की जरूरत है। पति उसे अधिक से अधिक घंटे काम करने के लिए उकसाता है। धीरे-धीरे पति भी खूब सफल हो जाता है। घर में सास-ससुर हैं। दो बड़े होते बेटे हैं। ताने-उलाहनों के बीच पत्नी किसी तरह अपना काम कर रही है। लेकिन ससुर जी के लकवाग्रस्त होने पर पति एक दिन जिन शब्दों में पत्नी से नौकरी छोड़ने की पेशकश करता है उससे मजबूर होकर पत्नी अपनी पंद्रह सालों की मेहनत दर किनार कर घर संभालने लगती है। यह योग्य पत्नी का एक तरह का भावनात्मक, आर्थिक व शारीरिक शोषण था। जब जहाँ जरूरत महसूस हुई, उस तरह से एक पत्नी व माँ व बहू का इस्तेमाल कर लिया। समय बीतता है। सास-ससुर दुनिया से चले जाते हैं और बच्चे घर से। पति-पत्नी को दोबारा नौकरी ज्वाइन करने की सलाह देता है, लेकिन अब वह अपना आत्मविश्वास खो चुकी है। अस्पताल की जो चीजें उसे उत्साह से भरती थीं अब डराने लगती हैं। इसी बीच एक दिन पति भी अचानक हार्ट अटैक से चले जाते हैं और पत्नी ने जिन रिश्तों के लिए अपने फिजिकल व इमोशनल अकाउंट खाली कर दिए थे, वे सभी उसे सब तरफ से खाली कर जाते हैं। एक जाने- पहचाने विषय पर प्रगति जी की अलग अंदाज में लिखी गई यह कहानी दिल में उतरती है और पाठक को नायिका की मजबूरी के साथ बिना किसी तर्क के खड़ा कर देती है।

मनोभावों को शब्दों में परोसने में प्रगति जी पूरी तरह से सक्षम हैं, इसका सशक्त परिचय मिलता है शीर्षक कहानी, 'स्टेपल्ड पर्चियाँ' में। कहानी की नायिका विभा नौकरी व घर संभालने वाली एक आम भारतीय स्त्री है। जिसे जिंदगी, समय या उसके आसपास के लोग अनुभवों की पर्चियाँ पकड़ाते रहते हैं जो स्मृतियों की तहों में कभी अलमारी के कोनों पर कभी साड़ी की तहों पर स्टेपल्ड हुई पड़ी रहतीं हैं। स्टेप्लर भी तो आखिर मशीन है उसकी सीमाएं तय हैं, वह खामोशी से एक सीमा के बाद स्टेपल करने के लिए न बोल देता है लेकिन विभा मशीन नहीं है। उसके पास तो शब्द हैं इसलिए उसकी ओढ़ी हुई खामोशी उसे मुकरने का मौका नहीं देती और शायद यही इंसानी हकीकत है। विभा स्टेपल्ड पर्चियों की हर बार नई गड्डियाँ बनाकर रख देती है।

पति-पत्नी के रिश्तों की गहराई से पड़ताल करती कहानी। अधिकतर दंपत्ति विशेषकर स्त्री, रिश्तों को समाज परिवार व बच्चों की खातिर खामोशी से निभाते चलते हैं। विभा के पति का आवश्यकता से अधिक खामोश व निर्लिप्त स्वभाव विभा के व्यक्तित्व को दो भागों में बाँट देता है। अंदर की विभा जो अपने लेखन में मुखरित होती है और बाहर की विभा जो खामोशी से अपने दर्द को स्टेपल्ड पर्चियों में लिख कर अपने कर्तव्य पूरे करतीं रहती है। लेकिन उसकी आँखों से, कुछ न बोल कर भी अरविंद उसका एकाकीपन चुरा ले जाता था। जहाँ बिना शब्दों के भी संवाद थे क्योंकि अरविंद उस बाहरी विभा के अंदर छिपी विभा को जानने- पहचानने में लगा था जो उसकी अपनी रचनाओं में बह रही थी।

बहुत ही खूबसूरत शब्द-शैली में लिखी कहानी। जो वास्तव में अपने शीर्षक 'स्टेपल्ड पर्चियाँ' को चरितार्थ करती है।

'माँ मैं जान गई' संग्रह की अखिरी व एक सशक्त कहानी। तेरह-चौदह साल की छोटी बच्ची। माँ पियक्कड़ पति को झेलने के लिए मजबूर। आखिर बेटी को लेकर किसी और पर भरोसा कर भी तो नहीं सकती। माँ काम पर जाती तो बेटी को समझा जाती, 'मुन्नी तू घर के अंदर ही रहना बेटा, बाहर बहुत जानवर हैं जो देह सूंघते हैं।' भाई बाहर खेलने जाते तो मुन्नी भी इस बात को अक्सर भूल जाती। उसे माँ के न करने का कारण समझ में नहीं आता। लेकिन एक दिन किसी ने उसकी देह को सूंघा, घर से बाहर नहीं ,बल्कि घर के अंदर ही और वो भी बेहद अपने ने। सोचती है कैसे बताए माँ को। अगर बता दिया तो जीते जी मर जाएगी क्योंकि माँ ने सारे सौदे उसके लिए ही तो किए हैं।

नन्हीं बच्चियों के साथ व्यभिचार की घटनाओं को अंजाम देने वाले अक्सर बेहद करीबी लोग होते हैं और नासमझ नाबालिग बच्ची किसी को बोल भी नहीं पाती है। स्त्री-पुरुष संबंधों की क्रूरता को स्पष्टता से दर्शाती कहानी। जहाँ स्त्री, पुरुष के साथ अलग-अलग रिश्तों को जीती है वहीं कुत्सित मानसिकता वाले पुरुषों के लिए स्त्री मात्र एक देह भर है।

'अदृश्य आवाजों का विसर्जन' संग्रह की पहली कहानी है, जो बिल्कुल अलग ही ट्रीटमेंट दे कर लिखी गई है। भ्रूण हत्याओं पर कन्या के जन्म को लेकर दोयम दर्जे की भावना रखने वाले समाज व परिवार पर बहुत सी कहानियाँ पढ़ी हैं पर प्रगति जी प्रस्तुत कहानी में यही बात जिस अंदाज में कहतीं हैं वह एकदम निराला है। पहली बार ही ऐसी कहानी पढ़ने में आई है। समुद्र के किनारे एक चट्टान पर अपने सूक्ष्म रूप में शरीर से निष्कासन के बाद आवाजें आदमजात समाज के शरीर में अपनी अल्प यात्रा के अनुभव बयां कर रहीं है। समुद्र साक्षी बन सुन रहा है। वे सब आत्माएं कन्याओं की हैं जो या तो माँ की कोख में ही मार दी गई या जन्म के बाद। जिन्होंने अल्प समय में ही वीभत्स यातनाएं सही हैं। आखिर में सभी आत्माएं अपनी पीड़ा सुना कर समुद्र में विसर्जित हो जातीं हैं। बहुत ही अद्भुत व रोचक अंदाज में लिखी मार्मिक कहानी है।

कहानी, 'तमाचा' भी संग्रह की एक बहुत ही सशक्त कहानी है और इसका कथानक वर्तमान पीढ़ी की जीवन-शैली पर एक जबरदस्त तमाचा है। कहा जाता रहा है कि जब हम एक लड़के को शिक्षित करते हैं तो सिर्फ एक व्यक्ति शिक्षित होता है लेकिन यदि एक लड़की को शिक्षित करते हैं तो एक पूरा परिवार शिक्षित होता है। लेकिन कुछ प्रतिशत मगरुर लड़कियों ने इस वक्तव्य को झुठला दिया। उन्हें आजादी और शिक्षा का वास्तविक मतलब समझ नहीं आता। नई पीढ़ी के लड़कों में अच्छे बदलाव दिखाई देते हैं लेकिन कुछ लड़कियां त्याग व समर्पण का मतलब नहीं समझती तब उनका हश्र कहानी की नायिका भूमि जैसा ही होता है। इसलिए लड़की हो या लड़का दोनों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों को भी याद रखें।

दिल दिमाग को झिंझोड़ती कहानी, 'काश' सरल सहज शब्दों में बहुत कुछ कह जाती है। स्त्री किसी भी उम्र में छली जा सकती है क्योंकि उसके मन की कोमलता और मनचाहे पुरुष से मन की चाहत पाने की तृष्णा उसके हृदय में हमेशा रहती है। लेकिन पुरुष के लिए वह एक सिर्फ साधन भर है। चाहे जिंदगी बिताने की बात हो या कुछ पलों का सुकून हो। बहुत खूबसूरत कहानी, जो पाठकों तक अपनी बात पहुँचाने में पूरी तरह सफल रही है।

कहानी 'खिलवाड़' भी अपने सामयिक कथानक के कारण दिल में उतरती है। युवा पीढ़ी के लिए माता-पिता के विचार, निर्णय, सोच समझ सब आउटडेटेड हो गए हैं। उनकी जिंदगी है वो अपनी जिंदगी जैसी चाहें जिएं। चाहे जैसी लाइफ स्टाइल रखें। लेकिन कहानी का एक वाक्य ही पूरी कहानी का निचोड़ है- 'परिवार में किसी की भी जिंदगी सिर्फ उन्हीं की नहीं होती। सभी की जिंदगी का मूल्य एक दूसरे के लिए होता है' लेकिन अक्सर यह बात एक उम्र बीत जाने के बाद समझ आती है।

संग्रह की अन्य कहानियाँ भी अपने अलग-अलग विशिष्ट कथानक के कारण प्रभावित करती हैं। मैं इतने सुंदर कथा संग्रह के लिए प्रगति गुप्ता जी को हार्दिक बधाई देती हूं।

समीक्षक-सुधा जुगरान
फोन - ९६९७७००५०६
देहरादून उत्तराखंड

गुंजेश्वरी प्रसाद की पांच कविताएं

नेता की प्रतीक्षा

क्या धर्म है,
क्या अधर्म है?
समझना संभव नहीं
संभव है कि सांस ले रहा हूं।
विदुर की तरह महाभारत देख रहा हूं।
हस्तिनापुर की गद्दी पर बैठा अंधा धृतराष्ट्र है
जो सत्य को देख नहीं सकता
पुत्र मोह से उभर नहीं सकता
भरी सभा में पांचाली का रुदन सुनता
मगर उसके आंसू पोंछ नहीं सकता।
सिर लटकाये युधिष्ठर के साथ
भरी सभा में पाण्डव बने मूढ हैं
गाण्डीवधारी अर्जुन - गदाधारी भीम
दोनो ही किंकतर्व्यविमूढ़ हैं।
लाचार भीष्म बेचारा बना हुआ है
पौत्र वधु की विनती सुनकर
नाकारा बना हुआ है।
क्योंकि वह राजसत्ता के साथ
हस्तिनापुर से बंधा हुआ है।
महाभारत की प्रसव वेदना से
कुरुक्षेत्र की धरती तड़प रही है
अर्जुन के लिए कृष्ण की प्रतिक्षा कर रही है।

आज की रंभा

इन्द्रपुरी की रंभा के साथ
रावण के किया था बलात्संग
ऋषियों और सुरों का हो गया था ध्यान भंग।
रंभा का रखवाला इन्द्र
रावण के सामने बेचारा था
उसके पुत्र से युद्ध में हारा था
इसलिए रंभा के प्रतिकार में
रावण के संग
बेचरा इन्द्र नहीं कर सका जंग।
हर रंभा की किस्मत में यही है
वह आप्सरा ही पैदा होती है
इन्द्र और रावण की अंकशायिनी होती है।
यह परंपरा सतयुग और त्रेता में थी
धन संपन्न शक्ति संपन्न
रंभाओं को उनकी इच्छा के विरूद्ध
वह उन्हें भोगता था।
लेकिन कलियुगी रंभाओं का क्या कहना
उन्हें मिल गयी आजादी है
आजाद की गोद में सो रहना।
और शुचिता का आवरण ओढ़ कर
दूसरों को कानून का तेवर दिखाते रहना।
होटलों में शिवाकान्तों और प्रमोदों से चुहल करना
उनकी शगल है ऐसे रिश्तों-
और सभ्यताओं का बखान करना।
उपभोक्तावादी संस्कृति की सारी खूबियां
हर रंभा के लिए जरूरी है
देह बेचना उनकी मजबूरी है।
घटती तनख्वाहें
बढ़ती आवश्यकतायें
दूसरी अनिवार्यतायें
हर रंभा को करती मजबूर
जो संस्कृति सभ्यता त्याग कर
बन जाती हैं हूर।
इन्द्र की रंभा रावण के सामने असहाय थी
क्योंकि उसका पहरेदार कमजोर था
मगर आज की रंभा
कहां कमजोर है?
इसलिए कि उपभोक्ता वादी संस्कृति का जोर है।

नीलम के प्रति

नीलम मैं नहीं समझता
तू अवला की परिभाषा वाली नारी है
दुख दर्द की मारी बेचारी है।
मैं देख रहा हूं तुझमें
कोई गांधी, लोहिया, सुभाष
जय प्रकाश सा जग प्रकाश
बैठा बोल रहा है
सत्य, अहिंसा, करुणा को झकझोर रहा है।
तू भारत की है वह बाला
जो बन जाती है ज्वाला
अपनी आग की लपटों में
घृणा द्वेष के भावों को
धू-धू कर उन्हे जलाओ।
तेरा मोहन निर्मोही है
वात्सल्य प्रेम का द्रोही है
लेकिन तू मां है
ममता की सूरत है
भारत मां की सूरत है
तेरे ही चरणों में झुकता है
तेरा गांधी तेरा सुभाष
इन्ही सपूतों से नीलम
जग को मिलता है प्रकाश।

प्रेम

स्नेह किया जाता है
स्नेह दिया जाता है
प्यार किया जाता है
प्यार दिया जाता है
मगर प्रेम हो जाता है।
स्नेह और प्रेम में द्वैत होता है
लेकिन प्रेम का उद्भव
षिव स्वरूप अद्वैत होता है।
द्वैत में द्वन्द है।
अद्वैत में निर्द्वन्द है।
द्वैत में चाह है
मृत्यु की राह है।
अद्वैत में अर्पण-समर्पण का अनवरत प्रवाह है
काया-माया का लगता नहीं स्याह है
स्नेह और प्यार में नासना की आशना है
क्योंकि काया की भाषा में वसती जो रखना है।
माया की छाया काया में दिखती है
वासना की आंधी तन के लिए मन में बहती है
लेकिन प्रेमी के अंतस में अद्वैत की ज्योति जलती है।

आत्मा

जो जन्मता है
वही मरता है
नया जन्म पाने के लिए।
किन्तु आत्मा का स्वरूप एक ही रहता है।
वह भटकती है
और आती है तेरे पास
पहचान भी लेती है
पहचान कर भी नहीं देती है अपना आभास।
आत्मा तो अद्वैत होती है
द्वैत होती है सिर्फ काया
जिसे कहते है सिर्फ माया।
काया और माया के पीछे
आत्मा कहां भागती है ?
जीर्ण-शीर्ण होने पर उसे त्यागती है।

भुई आँवला के फायदे

भुई आंवला क्या है? भुई आंवला के छोटे-छोटे पौधे वर्षा-ऋतु में उत्पन्न होते हैं। ये पौधे शरद्-ऋतु में फूलने-फलने के बाद गर्मी के मौसम में सूख जाते हैं। इसके फल धात्रीफल की तरह गोल, लेकिन आकार में छोटे होते हैं। इसी कारण इसे भूधात्री और भूम्यामल भी बोला जाता है। इसका पौधा शाखाओं से युक्त, सीधा और भूमि पर फैलने वाला होता है। इसके पत्ते छोटे, चपटे होते हैं। इसके पत्ते आंवले के पत्तों के समान होते हैं, लेकिन आंवले के पत्तों की तुलना में ये छोटे एवं चमकीले होते हैं। इसके फल गोलाकार, धात्रीफल जैसे गोल एवं शाखाओं के नीचे एक कतार में निकले हुए होते हैं। यह पौधा सीधा या जमीन पर फैलता है। इसके तने की छाल, शाखाएं, और फल लाल रंग के होते हैं। इसके पत्ते आंवले जैसे चिकने और चमकीले हरे रंग के होते हैं। इसके फूल गोलाकार होते हैं। यह कफ विकार, पेशाब से संबंधित बीमारी, भूख की कमी आदि को दूर करता है।

आंवला का औषधीय गुण फायदेमंद भूम्यामल के रस को घाव पर लगाने से घाव ठीक होता है। भुई आंवला पंचांग को चावल के पानी के साथ पीसकर घाव पर लगाने से घाव की सूजन ठीक हो जाती है। भुई आंवला के पत्तों का काढ़ा बनाकर घाव को धोने से भी घाव ठीक होता है। भुई-आंवला के कोमल पत्तों को पीसकर घाव पर लगाने से घाव जल्दी भर जाता है। सांसों से जुड़ी बीमारियों में भुई आंवला बहुत फायदेमंद होता है। भूम्यामलकी की १० ग्राम जड़ को जल में पीस लें। इसमें १ चम्मच मिश्री या शहद मिलाएं। इसे पिलाने से, और इसको नाक के रास्ते देने से सांसों के रोग में लाभ होता है। भुई आंवला के ५० ग्राम पंचांग को आधा लीटर जल में गर्म करें। जब यह एक चौथाई बच जाए तो इस काढ़ा को एक-एक चम्मच दिन में दो बार पिलाने से सांसों के रोग में लाभ होता है।

खुजली में भुई-आंवला के औषधीय गुण से लाभ भुई आंवला के पत्तों को पीस लें। इसमें नमक मिलाकर खुजली पर लगाएं। खुजली ठीक हो जाती है। इसे जांघों की खुजली में भी लगाया जा सकता है।

जिस अंग पर चोट लगी हो, वहां भुई-आंवला के कोमल पत्तों पीसकर लगाएं। इससे चोट का दर्द कम हो जाता है।

आंखों की बीमारी में भुई-आंवला के फायदे भुई आंवला को सेंधा नमक के साथ तांबे के बर्तन में जल में घिसें। इसे आंखों के बाहर लेप करने से आंखों के रोग में लाभ होता है। मुंह के छाले में भुई-आंवला के सेवन से फायदा भूम्यामलकी के ५० ग्राम पत्ते लें। इसे २०० मिली जल में मिलाकर काढ़ा बना लें। इससे कुल्ला करने से मुंह के छाले ठीक होते हैं।

भुई-आंवला के सेवन से खांसी से आराम भुई आंवला के ५० ग्राम पंचांग को आधा लीटर जल में गर्म कर लें। जब काढ़ा एक चौथाई रह जाए है तो एक-एक चम्मच काढ़ा को दिन में दो बार पिलाने से खांसी में लाभ होता है।

नोट- चिकित्सक के परामर्शानुसार प्रयोग करें।

पिप्पली, लाल चन्दन, भुई आंवला, सारिवा और अतीस आदि द्रव्यों से बने घी का नियम से सेवन करें। इससे भी खांसी की बीमारी से आराम मिलता है।

पेट के रोग में भुई-आंवला का सेवन फायदेमंद भुई आंवला के २० ग्राम पत्तों को २०० मिली जल में उबालें। इसे छानकर थोड़ा-थोड़ा पीने से पेट दर्द से आराम मिलता है। भुई आंवला की जड़ और पत्तों से काढ़ा बना लें। इसे ठंडा होने पर लगभग १०-२० मिली मात्रा में दिन में दो बार लें। इससे जलोदर रोग में लाभ होता है।

भुई आंवला के ५० ग्राम पंचांग को ४०० मिली पानी में पकाएं। जब पानी एक चौथाई हो जाए तो शेष काढ़ा को १० मिली की मात्रा में दिन में तीन चार बार पिलाएं। इससे जलोदर रोग में लाभ होता है।

आंतों के रोग में भुई-आंवला के सेवन से लाभ छाया में सुखाए हुए भूमि आंवला को मोटा-मोटा कूटकर रख लें। अब १० ग्राम भूम्यामलकी को ४०० मिली पानी में पकाएं। जब यह एक चौथाई से भी कम रह जाए, तब छानकर सुबह खाली पेट, और रात को भोजन से एक घण्टा पहले सेवन करें। यह आंतों में होने वाले घाव (अल्सर) को ठीक करने वाली चमत्कारिक औषधि है।

भुई-आंवला के औषधीय गुण से सिर दर्द से आराम सिर दर्द से आराम पाने के लिए घी में पिप्पली, लाल चन्दन, भुई आंवला, सारिवा और अतीस आदि द्रव्यों से मिला लें। इसका सेवन करें। इससे सिर दर्द ठीक हो जाता है।

बुखार में भुई-आंवला के औषधीय गुण फायदेमंद भुई आंवला के कोमल पत्तों लें। पत्ते की एक चौथाई काली मिर्च लें। दोनों को पीस लें। पीसने के बाद जायफल के बराबर गोलियां बना कर २-२ गोली दिन में दो बार दें। अगर कोई रोगी गंभीर बुखार से ग्रस्त है तो इससे लाभ होता है। इसके साथ ही बार-बार आने वाले गंभीर बुखार में भी लाभ होता है। घी में पिप्पली, लाल चन्दन, भुई आंवला, सारिवा तथा अतीस आदि सामान पकाएं। इसका सेवन करने से बुखार में लाभ होता है।

मूत्र रोग में भुई-आंवला के फायदे १० मिली भुई आंवला के रस में जीरा और चीनी मिलाकर पिएं। इससे पेशाब में जलन सहित अन्य मूत्र से संबंधित विकार ठीक होते हैं।

एक चम्मच भुई आंवला के पत्ते के रस में जीरा और चीनी मिलाकर देने से पेशाब की जलन की बीमारी में लाभ होता है। १० मिली भुई आंवले के रस में १० मिली गाय का घी मिलाएं। इसका सेवन करने से पेशाब के रुक-रुक कर आने की परेशानी में लाभ होता है। इसके १०० ग्राम पत्तों को २५० मिली दूध के साथ मसलकर पिलाने से मूत्र संबंधी विकार ठीक होते हैं।

भुई-आंवला के सेवन से दस्त पर रोक भुई आंवला के ५० ग्राम पंचांग को ४०० मिली पानी में पकाएं। जब पानी एक चौथाई रह जाए तो मेथी का चूर्ण ५ ग्राम मिलाएं। इसे थोड़ा-थोड़ा पीने से दस्त की गंभीर समस्या में लाभ होता है। भुई आंवला के २० ग्राम पत्तों को २०० मिली जल में उबालें। इसे छानकर थोड़ा-थोड़ा पीने से दस्त पर रोक लगती है।

मासिक धर्म विकार में पांच ग्राम भुई-आंवला के बीज का चूर्ण बना लें। इसे चावलों के धुले हुए पानी के साथ दो या तीन दिन पिएं। इससे मासिक धर्म विकार में फायदा होता है। इससे मासिक धर्म के दौरान अधिक खून आना बंद हो जाता है। इसकी जड़ के चूर्ण को भी इसी प्रकार देने से लाभ होता है। भुई-आंवला के औषधीय गुण से सूजाक (गोनोरिया) का इलाज एक चम्मच भुई आंवला के पत्ते के रस में जीरा और चीनी मिलाकर देने से सुजाक (गोनोरिया) में लाभ होता है। स्तनों की सूजन में भुई-आंवला से लाभ स्तनों की सूजन को ठीक करने के लिए भी भुई आंवला बहुत काम आता है। भुई आंवला के पंचांग को पीसकर स्तन पर लेप करें। इससे स्तनों की सूजन ठीक हो जाती है। डायबिटीज में भुई-आंवला के सेवन से फायदा १५ ग्राम भुई आंवला पंचांग के चूर्ण में २० काली मिर्च चूर्ण मिलाएं। इसे दिन में दो तीन बार सेवन करने से डायबिटीज में लाभ होता है।

२० मिली भुई आंवले के रस में २ चम्मच घी मिलाकर सुबह और शाम देने से डायबिटीज में लाभ होता है।

भुई-आंवला के औषधीय गुण से पीलिया का इलाज भूआमलकी का पेस्ट बनाकर छाछ के साथ सेवन करने से पीलिया रोग में लाभ होता है।

भूधात्री की ५ ग्राम जड़ को पीस लें। इसे सुबह और शाम २५० मिली दूध के साथ खाली पेट लें। इससे पीलिया रोग में लाभ होता है।

कुष्ठ रोग में भुई-आंवला के फायदे त्रायमाणाद्य घी में भूम्यामलकी को मिलाकर सेवन करें। इससे त्वचा रोग जैसे विसर्प रोग और कुष्ठ रोग में लाभ होता है। अधिक जानकारी के लिए किसी आयुर्वेदिक चिकित्सक से जरूर परामर्श लें। टीबी रोग में भुई-आंवला का सेवन फायदेमंद घी में पिप्पली, लाल चन्दन, भुई आंवला, सारिवा, और अतीस को मिलाकर पकाएं। इसका सेवन करने से टीबी रोग में लाभ होता है। लिवर रोग में फायदेमंद भुई आंवला का सेवन छाया में सुखाए हुए भूमि आंवला को मोटा-मोटा कूटकर रख लें। १० ग्रामकी मात्रा को ४०० मिली पानी में पकाएं। जब एक चौथाई से भी कम रह जाए, तब छानकर सुबह खाली पेट और रात को भोजन से एक घण्टा पहले सेवन करें। यह लिवर के दर्द में लाभदायक होता ही है, साथ ही पीलिया, शरीर के किसी भी अंग में होने वाले सूजन को भी ठीक करता है। आप भुई आंवला के चूर्ण का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

भुई आंवला प्रायः आर्द्र स्थानों में खरपतवार के रूप में पैदा होता है। भारत में सभी स्थानों पर पाया जाता है। लगभग ६०० मीटर की ऊंचाई तक इसके पौधे मिलते हैं।

स्रोत-https://www.1mg.com/hi/patanjali/bhui-amla-benefits-in-hindi/

ओपन डोर राष्ट्रभक्ति गीत पढ़ें और निर्णय करें

कविगण अपनी रचनाओं को शामिल न करें, जबकि पाठक को जो भी रचनाएं अच्छी लगें उनके बारे में तीन रचनाएं एवं उनके लेखक का नाम प्राथमिकता के क्रम में नीचे लिखें-

७ जुलाई, २०२२ अंक में प्रकाशित

१. प्रतियोगिता में शामिल राष्ट्रभक्ति गीत में से कौन-सा गीत आपको अच्छा लगा? किन्हीं तीन राष्ट्रभक्ति गीत के शीर्षक एवं कवि का नाम लिखें-

	राष्ट्रभक्ति गीत का शीर्षक	कवि का नाम
१.	.....	.....
२.	.....	.....
३.	.....	.....

हस्ताक्षर निर्णयकर्ता

नोट- सभी कवियों को यह क्रम बनाकर भेजना अनिवार्य है। यदि कोई कवि अपना निर्णय नहीं देता है तो उसे 'ओपन डोर' साप्ताहिक की 'राष्ट्रभक्ति गीत प्रतियोगिता' से बाहर मान लिया जाएगा। बराबरी की स्थिति में संपादक मंडल का निर्णय सभी को मानना होगा। आप अपने निर्णय प्रारूप का फोटो खींचकर मोबा. 9897742814 पर वाट्स एप करें।

निर्णयकर्ता का नाम व पता

प्रथम विजेता को ११००/-, प्रमाण-पत्र द्वितीय विजेता को ५०१/-, प्रमाण-पत्र तृतीय विजेता को २५१/-, प्रमाण-पत्र

सभी प्रतिभागियों को प्रतिभाग प्रमाण-पत्र

'ओपन डोर' साप्ताहिक के नियमित ग्राहक बनें

Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

समयावधि	रुपए डाक खर्च सहित	पीडीएफ/प्रिंट अंक	सभी विशेषांक
वार्षिक	- १०००	४८/३८	४
द्विवार्षिक	- १६००	६६/७६	८
पंचवार्षिक	- ४८००	२४०/१६०	२०

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814

आगामी आयोजन

RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288
₹ 200 वर्ष : 4 अंक : 3 जून-अगस्त, 2022
शोधादर्श
संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका

संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की पत्रिका **'शोधादर्श'** (त्रैमासिक) में **साहित्य, मानविकी आदि विषयों** पर शोधपरक लेखों का प्रकाशन होता है, जिससे शोध प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है और उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों के साथ ज्ञानपिपासु पाठकों के ज्ञान में भी वृद्धि होती है। पत्रिका का आगामी अंक 'आजादी का अमृत महोत्सव' को ध्यान में रखते हुए **'जनपद बिजनौर'** विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जाना है। जिसमें जनपद बिजनौर का इतिहास, साहित्य, भूगोल, प्रतिभा, स्वास्थ्य, शिक्षा, पत्रकारिता, उद्योग, राजनीति, संस्कृति एवं समाजसेवा आदि विषय समाहित रहेंगे। जिसमें आप अपने विभाग, निकाय, संस्थान, मंत्रालय, प्रतिष्ठान, उत्पाद, उत्कृष्ट सेवाओं आदि की विशिष्टताओं तथा उनकी प्रगति से संबंधित विज्ञापन देकर उनका प्रचार प्रसार जन–जन तक

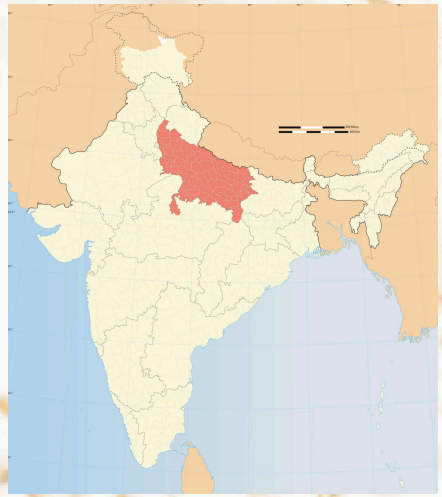

जून–अगस्त 2022 (बिजनौर विशेषांक) में संभावित सामग्री

- जनपद बिजनौर का भौगोलिक परिचय
- जनपद बिजनौर का इतिहास
- स्वतंत्रता आंदोलन एवं जनपद के स्वतंत्रता सेनानी
- जनपद बिजनौर का साहित्य एवं साहित्यकार
- जनपद बिजनौर की राजनीति एवं राजनेता
- जनपद बिजनौर की पत्रकारिता एवं पत्रकार
- जनपद बिजनौर में समाजसेवी एवं सामाजिक संस्थाएं
- जनपद बिजनौर में शिक्षा एवं विद्यालय
- जनपद बिजनौर में स्वास्थ्य सेवाएं
- जनपद बिजनौर में सहकारिता
- जनपद बिजनौर में महिला सशक्तीकरण
- जनपद बिजनौर के लोकगीत
- जनपद बिजनौर और सिने जगत
- जनपद बिजनौर और खेल जगत
- जनपद बिजनौर में कृषि
- जनपद बिजनौर के उद्योग धंधे
- जनपद बिजनौर की संस्कृति
- जनपद बिजनौर के प्रसिद्ध मेले
- जनपद बिजनौर के ऐतिहासिक एवं पौराणिक स्थल
- जनपद बिजनौर का नगरीय विकास
- जनपद बिजनौर का ग्रामीण विकास
- जनपद बिजनौर की नदियाँ
- जनपद बिजनौर में वन एवं पर्यावरण आदि
- अन्य ऐसे विषय जो आवश्यक समझे जाएंगे

जून–अगस्त 2022
बिजनौर विशेषांक

सितम्बर–नवम्बर 2022
दुष्यंत कुमार त्यागी विशेषांक

दिसंबर 2022–फरवरी 2023
प्रो. ऋषभ देव शर्मा विशेषांक

अपने शोध लेख समयानुसार

shodhadarsh2018@gmail.com
पर भेजने का कष्ट करें।
अधिक जानकारी के लिए
9897742814 पर सम्पर्क करे

शोध लेखों की त्रैमासिक पत्रिका 'शोधार्दश' की सदस्यता लेकर प्रकाशन और पढ़ने का लाभ उठाएं। प्रकाशनोपरांत पत्रिका आपके पंजीकृत पते पर रजिस्टर्ड पार्सल से पहुंच जाएगी।

वार्षिक सदस्य – 1000 रुपए
पांच वर्ष – 4500 रुपए

Name - Shodhadarsh
Bank - Indian oversees bank
Branch - Najibabad
Account no - 368602000000186
IFSC - IOBA0003686

ऑनलाइन सदस्यता के लिए फार्म भरें
https://forms.gle/B4T6AKwXxRePSNsz9

शोधादर्श में प्रकाशित विज्ञापन रेट

क्रम	विज्ञापन स्थान संपूर्ण पृष्ठ	मूल्य रुपए में	विज्ञापन स्थान आधा पृष्ठ	मूल्य रुपए	विज्ञापन स्थान चौथाई पृष्ठ	मूल्य रुपए
1	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	26,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	13,000.00	कवर पृष्ठ अंतिम (रंगीन)	7,000.00
2	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	22,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	11,000.00	कवर पृष्ठ २ या ३ (रंगीन)	6,000.00
3	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	20,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	10,000.00	आन्तरिक पृष्ठ (रंगीन)	5,000.00
4	श्वेत श्याम पृष्ठ	10,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	5,000.00	श्वेत श्याम पृष्ठ	2,500.00

मकैनिकल डाटा– 10.75x8.5 inch, कवर–आर्ट पेपर कलर प्रिंटिंग, अंदर पेपर–मैफलिथो श्वेत–श्याम प्रिंटिंग, आवश्यक होने पर अंदर के कुछ पृष्ठ रंगीन भी प्रकाशित होते हैं। प्रिंटिंग एरिया–9.75x7 inch (नोट- पत्रिका के आकार, छपाई और उपयोगी काग़ज़ में बदलाव आवश्यकतानुसार संभव है)

प्रकाशनाधीन

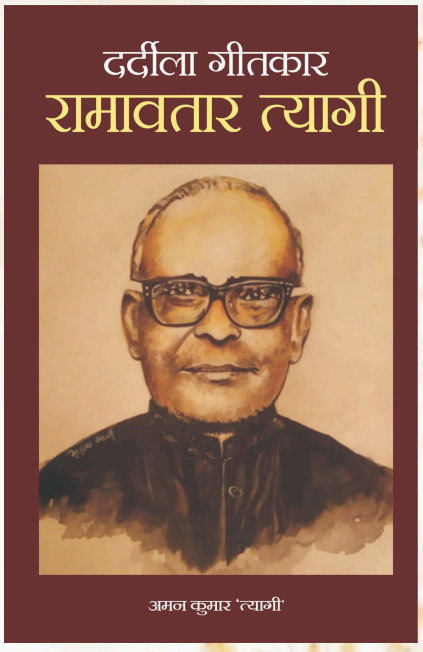

ओपन डोर प्रकाशन से शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तकें

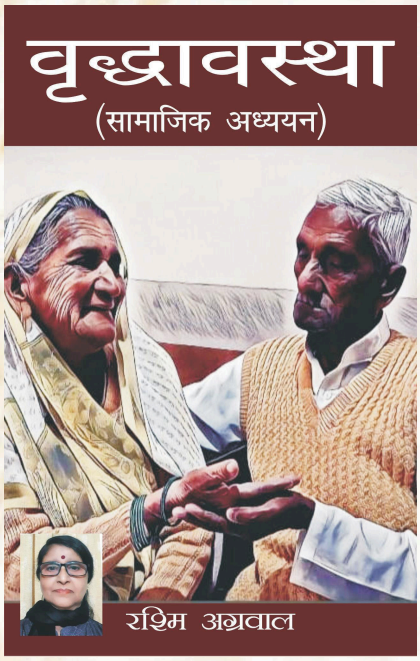

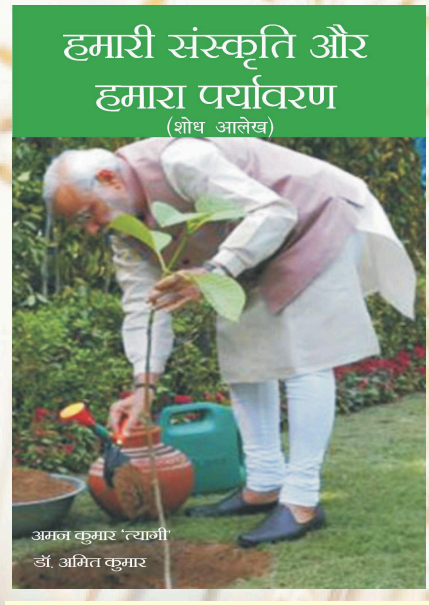

स्थापना 14 फरवरी, 2021 Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703
रजिस्टर्ड 08 जुलाई, 2021

YouTube OPEN DOOR NEWS ओपन डोर Blog-opendoorweekly.blogspot.com

आपकी किताब आपके द्वार...
प्रकाशन
ओपन डोर
नजीबाबाद

समाचारपत्र भी
पुस्तकें भी

खुले दिमाग़ के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814